Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

X/30

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

STATE MUSEUM, LUCKNOW
LIBRARY

Acc. No.

Book No.

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

X
30

891.42

State Museum,
LUCKNOW.

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# शाह आलम की आंखें

एतिहासिक उपन्यास

लेखक
प्रोफेसर श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

State Museum.
LUCKNOW.

नालन्दा प्रकाशन
तीसरा माला, "धननूर" बिल्डिङ्ग,
सर फीरोजशाह मेहता रोड, फोर्ट, बंबई १.

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रथम संस्करण नवम्बर १९४७

मुद्रक—शुक्ल प्रिण्टिङ्ग प्रेस, बम्बई ४.

Published by Nandlal Mohanlal Thakkar–

N. M. Thakkar & Co. 140, Princess Street. Bombay.

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# हमारी ओर से—

ज्ञान की पावन धारा जनता में प्रवाहित करने की स्वीकृत प्रणालियों में पठन-पाठन सर्वाधिक प्रचलित और उपयुक्त शिक्षा-साधन है। इस साधन का उपयोग अब तक भारत में विदेशी शासन होने के कारण विकृत रूप में होता रहा है, पर अब हमें ऐसी सुविधायें प्राप्त होने जा रही हैं जिनका उपयोग करके हम बहुत शीघ्र आगे बढ़ सकते हैं।

हमारी संस्था अभी तक अंग्रेजी भाषा में ही प्रकाशन करती थी और हमें प्रसन्नता तथा सन्तोष है कि शिक्षित-वर्ग ने हमारे उद्योग की उचित सराहना की है और प्रोत्साहन प्रदान किया है। आज हमारे प्रकाशित अंग्रेजी साहित्य का देश-विदेश में उचित आदर और सम्मान है।

अब हम राष्ट्र भाषा हिन्दी में भी प्रकाशन आरम्भ कर रहे हैं और विश्वास है कि इस प्रयास में भी हमें समुचित सहयोग प्राप्त होगा जिससे हम अधिकाधिक सेवा करनेमें समर्थ हो सकें।

विश्व में आदि काल से अब तक जो भी ज्ञान संकलित हुआ है उस पर बोधगम्य पुस्तकें प्रकाशित करना हमारा ध्येय है-तत्व ज्ञान और दर्शन, इतिहास और राजनीति, कला और विज्ञान आदि-मानव अनुभूति के सभी विषयों पर उपलब्ध विकसित और अविकसित विद्याओं को हम प्रकाश में लायेंगे। काव्य की सरसता, नाटक, उपन्यास और आख्यायिकाओं की मनोज्ञता, महापुरुषों से लेकर परम दरिद्रों तक के सुख-दुखों की तरंग-मालाओं का दिग्दर्शन आप हमारे प्रकाशन में कर सकेंगे।

हमने निश्चय किया है कि ज्ञान के पिपासुओं को बाल-कथा कहानियों से लेकर श्रेष्ठतम श्रेणी का मनोविज्ञान बोधगम्य करा दें। सामान्य श्रेणी के पाठकों में भी उच्च जिज्ञासा भाव-जानकारी के लिये बेचैनी उत्पन्न कर दें और साधारण हिन्दी पढ़े लिखे पाठक को सभी श्रेणी के साहित्य का परिचय कर सकने योग्य बना दें।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इस योजना की पूर्ति के लिये हमने नीचे लिखे विषयों पर सुलभ-साध्य पुस्तकें प्रकाशित करने का आयोजन किया है—

१-मनोविज्ञानात्मक बाल साहित्य।
२-राष्ट्र निर्माण-संबन्धी साहित्य।
३- कला विज्ञान और उद्योग-धन्धों संबंधी साहित्य।
४- निबन्धात्मक और विवेचनात्मक ग्रंथ।
५- कथात्मक साहित्य-नाटक, उपन्यास और कहानियां।
६-.जीवन के गंभीर तत्वों का विवेचक साहित्य, और
७- इतिहास-संबंधी ग्रंथ। आदि आदि।

कई अधिकारी विद्वान हमारे लिये विभिन्न विषयों पर महत्वपूर्ण पुस्तकें लिख रहे हैं और उनको प्रकाशित करने की हमारे सम्मुख विशाल योजना है। आशा है कि शीघ्र ही हम कई उपयोगी और आवश्यक रचनायें वाचक-वृन्द की सेवामें उपस्थित कर सकेंगे।

आज हम सुप्रसिद्ध विद्वान **श्री प्रोफेसर इन्द्र विद्यावाचस्पति** महोदय की रचना **शाह आलम की आंखें** आप की भेंट कर रहे हैं। यह एक ऐतिहासिक उपन्यास है और प्रधानतः प्रसिद्ध इतिहासज्ञ **हैनरी जार्ज कील** द्वारा लिखित **मुगल-एम्पायर** नामक पुस्तक के आधार पर लिखा गया है। कील की पुस्तक सन् १८६६ ई० में छपी थी। श्री पंडित जी का यह पहिला ही उपन्यास है जिसे उन्होंने १९१८ ई० में लिखा था अर्थात लगभग ३० वर्ष पूर्व। इसके प्रकाशन का निश्चय करते समय हमारे सम्मुख भाषा से अधिक इसके कथानक का विचार था। आज के सिद्ध-हस्त लेखक की ३० वर्ष पुरानी भाषा और शैली का भी ऐतिहासिक मूल्य तथा महत्व है और उसे सुरक्षित रखना चाहिए। सुविज्ञ पाठक महानुभावों से हमारा निवेदन है कि वह इसी भावना तथा दृष्टि से इस उपन्यास को पढ़ें, विचार करें और लाभ उठावें।

खेद है कि पुस्तक की छपाई आदि वैसी उत्तम नहीं हो सकी जैसी कि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हम चाहते थे अथवा जो हमारे प्रकाशनों का स्टैंडर्ड है। देश व्यापी और मुख्यतः बंबई में इन दिनों छपाई तथा कागज आदि की भीषणतम मंहगाई, कठिनाई और असुविधाओं का अनुभव भुक्तभोगी ही कर सकते हैं। इतना ही हो सका यह ही गनीमत है। और यह ही कारण है कि इच्छा रहते भी पुस्तक का मूल्य कम से कम नहीं रखा जा सका। इन सभी कठिनाईयों से त्राण पाने का भरपूर उद्योग किया जा रहा है और विश्वास है कि यथा संभव अपने आगामी प्रकाशनों में यह सब न्यूनतायें दूर करने में हम समर्थ हो सकेंगे। मात्र सहृदय पाठक महानुभावों का सहयोग अपेक्षित है और वह हमें अवश्य ही प्राप्त होगा–ऐसा विश्वास है।

उचित परामर्श तथा निर्देशों की प्रतीक्षा है और हम सदा ही उनके स्वागत के लिये समुद्यत रहेंगे।

**शरद पूर्णिमा सं २००४ वि.** भवदीय—

२९ अक्टूबर १९४७ ई० **प्रकाशक,**

---

# संकेत–

यह कहानी लग भग ३० वर्ष पहले लिखी गयी थी। इससे पहले मैंने कुछ जीवन-चरित्र लिखे थे। दो तीन छोटी–छोटी पुस्तकें प्राचीन भारतीय सहित्य पर भी लिखी थीं। उन दिनों मैं मुगल-साम्राज्य के विनाश के इतिहास की सामग्री तय्यार कर रहा था। इसी प्रसंग में बहुत सी घटनायें मुझे ऐसी मिलीं जो उपन्यास से भी अधिक मनोरञ्जक थीं। इतिहास में उनके लिये पर्याप्त स्थान नहीं मिल सकेगा, यह सोचकर मैंने उनमें से कुछ घटनाओं का आधार लेकर यह कहानी लिखी थी। इस कहानी का ऐतिहासिक आधार सत्य है, उस पर कथानक का जो भवन खड़ा किया गया है, वह कल्पित है। इस दृष्टि से इसे आप ऐतिहासिक उपन्यास कह सकते हैं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

यह मेरे उपन्यास लिखने के प्रयत्न का सबसे पहला फल है। लेखक बनने की महत्वाकाँक्षा रखने वाले किसी व्यक्ति के प्रथम प्रयास में जो गुण और दोष हुआ करते हैं, वह इस उपन्यास में भी होंगे। प्रौढ़ावस्था में लेखक की भाषा अधिक परिमार्जित हो जाती है, परन्तु उसमें यौवन का ओज कम हो जाता है। मैंने अपने विद्यार्थी जीवन में जो सबसे पहली पुस्तक लिखी थी वह **नैपोलियन बोनापार्ट** का जीवन चरित्र था। जब वह प्रकाशित हुआ तब मैं गुरुकुल कांगड़ी में पढ़ रहा था। वह पुस्तक प्रकाशित होने पर दो-तीन महीनों में ही बिक गई और तब से अब तक फिर नहीं छपी। उसे उठाकर अब मैं पढ़ता हूं तो मुझे आश्चर्य होता है कि उसकी भाषा में इतनी त्रुटियां कहां से आ गयीं और साथ ही इतना ओज कहां से आ गया। आज भी मेरी भाषा में अनेक दोष होंगे परन्तु उतने नहीं जितने **नैपोलियन बोनापार्ट** में थे। साथ ही मुझे यह भी कहना पड़ता है कि मुझे अपने अब के लेखों में वह ओज भी नहीं मिलता। काल चक्र मनुष्य के गुण और दोष दोनों की बढ़ी हुई नोकों को छील देता है। **शाह आलम की आंखों** में भी मेरी यौवन की लेखशैली के गुण दोष प्रभूत-मात्रा में विद्यमान होंगे। यदि उसके दोष निकाल दिये जांय तो गुण भी निकल जायेंगे, यह सोच कर मैंने इसे **नालन्दा पब्लिकेशन्स** में प्रकाशित करने के लिए श्री० द्वारका प्रसाद जी को देते समय परिवर्तित या परिवर्द्धित नहीं किया। चीज जैसी लिखी गयी थी वैसी ही पाठकों की सेवा में समर्पण कर दी है।

३० वर्षों के पश्चात, मेरी इस पहिली औपन्यासिक कृति का उद्धार करने के लिए मैं अपने पुराने बन्धु श्री द्वारका प्रसाद जी सेवक का आभारी हूं।

दिल्ली,
११ अक्टूबर '४०

इन्द्र,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# शाह आलम की आंखें

ऐतिहासिक उपन्यास

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# पहला परिच्छेद

## दर्शन

मनोहर प्रभात था। वसन्त ऋतु, उसमें भी पौ फूटने का समय। पूर्व दिशा में सूर्योदय की प्रस्तावना बँध रही थी। आकाश का रंग अवर्णनीय था। न लाल ही था और न पीला। दोनों रंगों का सुहावना मेल था, जो पूर्व दिशा को रंगीन बना रहा था। पूर्व की ओर मुँह किए पक्षी गण अपने २ मन सोहने राग अलाप रहे थे, मानों पृथ्वी के साथ सूर्य के भावी सम्बन्ध की प्रसन्नता में गायक लोग गीतियां सुना रहे थे। फूले हुए सुगंधित फूलों को हिलाता, हरी २ नई कोंपलों को नहलाता, शाखाओं पर बैठे हुए पंछी गायकों को हरसाता और हृदयों को हुलसाता हुआ सुगंधित वायु कोमल हाथों से वृक्षों को छूता हुआ मानों प्रकृति देवी के साथ किलोलें कर रहा था। चारों ओर प्रसाद का साम्राज्य हो रहा था, जिसमें सौंदर्य की देवी ने संकोच छोड़ कर अपनी अनुपम छवि का विस्तार किया था।

उस प्रसाद साम्राज्य में यमुना तट की शोभा और भी अनूठी थी। पूर्व दिशा की ओर नभ में फैलते हुए प्रकाश समुद्र की चमकीली प्रतिछबि, उठती बैठती हुई लहरियों पर पड़ कर धूप छाया का मन भावना खेल खेल रही थी। आपस की टक्कर से उठते हुए जल कणों पर पड़ कर छायामय सुनहला प्रकाश यमुना पर पुष्प वर्षा सी कर रहा था। वृक्षों के एक सघन कुंज के नीचे खड़ा एक राजपूत युवक उस शोभा की ओर निहार रहा था और भगवान की हृदय हारिणी रचना पर मोहित हो रहा था।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



उस राजपूत युवा की अवस्था लगभग २४ वर्ष की होगी। उसका ऊँचा कद, उन्नत ललाट, विशाल आंख, विस्तीर्ण पेशानी और सुघड़ पट्ठेदार शरीर स्पष्टतया सूचित कर रहे थे कि वह एक ऊंचे वंश का राजपूत है। चौहान वंश को कौन नहीं जानता? जिस वंश को राय पिथौरा ने अपने नाम से उज्वल किया था, उसे याद करता हुआ कौन सा भारतवासी उचित अभिमान से अपनी गर्दन को ऊँचा नहीं कर लेता? राजपूत युवक ने उसी वंश में जन्म लिया था। युवक के अंग प्रत्यंग से उत्साह, तेज और साहस झलक रहा था। उसका वेश इस समय साधारण था। प्रभात के मनोहर वायु को सेवन करने के लिये उठते ही वह प्रति दिन यमुना तट की ओर घूमने आया करता था। तट पर पहुंच कर प्रकृति के अद्भुत सौंदर्य ने उसे ऐसा खींचा कि वह मन्त्र मुग्ध की नाईं वहीं खड़ा रह गया। यमुना के शीतल जल से किलोलें करता हुआ वासंतिक पवन उसके ललाट पर लेटे हुए घुंघरीले बालों को नचा नचा कर पेड़ के पत्तों में हँसने लगा। पास ही एक आम की डाल पर बैठ कर कोयल मन मोहने राग सुना कर चित्त को हरने लगा। आकाश से यमुना जल तक दौड़ लगाता हुआ सूर्य का प्रकाश उसके मन को भूलोक से उठा कर अन्तरिक्ष लोक में विहार कराने लगा। तेजसिंह चुपचाप खड़ा हुआ सौंदर्य के फन्देमें फँस कर अपने आपको भूल गया।

एक उमंग ने दूसरी उमंग पैदा की। तेजसिंह के सुरीले कण्ठ ने एक सुरीला गाना शुरू किया। गले से मधुर स्वर निकलते ही कोयल ने लजा कर अपना गीत बन्द कर दिया। यमुना की कोलाहल करने वाली तरंगों ने मानों दांतों तले जीभ दबा कर मौन धारण कर लिया और वन के वनस्पति-समाज ने भी ध्यान से कान लगा कर स्वर सुधा को पीना आरम्भ किया। वहां का सारा आकाश मण्डल निस्तब्ध होकर गीत श्रवण करने लगा। हां, एक रंगीला वासन्तिक पवन शांत नहीं हुआ, जो घने कुंज में चोट लगा २ कर ताल देने और गायक के उत्साह को बढ़ाने लगा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



कुछ देर तक ऐसा ही स्वर्गीय समय बंधा रहा। जैसे एक उत्तम चित्र बनाने में विविध रंग अपनी सत्ता को छोड़कर एक मूर्ति की सत्ता में मिल जाते हैं, इसी प्रकार युवक, वासन्तिक-पवन, वन कुंज और यमुना, ये सब अपनी २ पृथक सत्ता को भुला कर एक सौंदर्यमय संसार में लीन हो गये। युवक अपने आप को भूल गया।

आशा का गीत समाप्त हुआ। स्तब्ध हुई प्रकृति ने मानों विश्राम सा पवन पाकर झोंके द्वारा एक लंबा सांस लिया। उसी सांस में मिला हुआ कोई और अस्पष्ट सा स्वर भी सुनाई दिया। जिसने युवक के कानों को एक दम अपनी ओर खींच लिया। वह शब्द अस्पष्ट था—तो भी इतना प्रतीत हो रहा था कि किसी स्त्री का शब्द है। ध्यान लगाने पर युवक को जंचने लगा जैसे कोई आपत्ति ग्रस्त महिला सहायता के लिये चिल्ला रही है। क्षण भर में उसके साथ एक और भी चिल्लाने और पुकारने का शब्द सुनाई पड़ने लगा। प्रतीत होता था कि पहली स्त्री को विपत्ति ग्रस्त देखकर कोई दूसरी स्त्री सहायता के लिये चिल्ला रही हैं। दोनों शब्द क्षण क्षण में अधिकाधिक ऊँचे और तीखे होकर उस प्रशांत कानन की समाधि भंग करने लगे। उस जंगल की घनता के कारण युवक के लिये यह देखना कठिन था कि शब्द कहां से आ रहा है। वह केवल दिशाको पहचान सका। लिखने में लेखनी विलम्ब कर देती हैं, परन्तु उस युवक को सब कुछ सुनने और शब्द की ओर भागने का निश्चय करने में आध मिनट से अधिक समय न लगा होगा। दिशा का निश्चय होने पर युवक ने यह भी अनुमान किया कि क्रन्दन ध्वनि यमुना तट से ही आ रही है। उसी को लक्ष्य करके किनारे की झाड़ियों को चीरता हुआ, कांटों को कुचलता हुआ और वृक्षों की अड़ी हुई शाखाओं को हटाता हुआ तेजसिंह तीव्र गति से जाने लगा।

ज्यों २ तेजसिंह आगे जाने लगा, चिल्लाने का शब्द अधिक साफ सुनाई देने लगा। जो शब्द सुनाई दिये, उनसे अनुमान होता था कि कोई

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



स्त्री यमुना तट की दलदल में धँस गई है और निकल नहीं सकती। वह सहायता के लिये चिल्ला रही है। दूसरी भी एक स्त्री उसकी दशाको देखकर सहायता के लिये चिल्ला रही है, और स्वयं दलदल में धँस जाने के भय से कुछ नहीं कर सकती। तेजसिंह की चाल और भी तेज होने लगी। वह कूदता और फांदता हुआ भागने लगा। बन बड़ा बीहड़ था। कांटेदार वृक्ष बहुतायत से थे। वृक्षों के तनों में लिपट कर जाल के समान बनी हुई लताओं ने पग पग पर किला बन्दी सी कर रक्खी थी। तेजसिंह की टांगोंमें कई स्थानों पर कांटे चुभ गये और लताओं की फांसी ने कई बार छाती और पेट पर धावा किया किन्तु इच्छा और बल के सामने कोई विघ्न नहीं ठहर सका। कुछ समय तक दौड़ धूप के पश्चात् तेजसिंह उस जंगल से बाहर हुआ। सामने यमुना का खुला रेतीला किनारा था, जिसमें दृष्टि दौड़ाते ही तेजसिंह ने देखा कि उसका अनुमान ठीक था।

भगवान किरण माली की आधी उज्वल मूर्ति पूर्व दिशा में भूमि के ऊपर निकली हुई दिखाई दे रही थी—उसकी चमकीली सुनहली किरणें रेती पर संचार करके मानों, स्नान करने के लिये यमुना के जल पर विहार कर रही थीं। उन्हीं सैलानी शीतल किरणों के प्रकाश में तेजसिंह ने देखा कि जल से थोड़ी दूर दलदल वाली विकट भूमि में एक अबला का आधा शरीर धँसा हुआ है। पेट तक वह दलदल के अन्दर जा चुकी है। एक बालिका उससे कोई दस हाथ दूर पगडंडी पर खड़ी चीखें मार रही है और सहायता के लिये चिल्ला रही है। जो अबला दलदल में धँसी हुई थी, अब चिल्ला नहीं रही थी। प्रतीत होता था कि वह थक गई है और हिलने या चिल्लाने की शक्ति नहीं रखती। तेजसिंह इस करुणाजनक दृश्य को देख कर उस स्थान तक पहुँचने का मार्ग ढूंढ़ने लगा। देखने पर उसे एक चक्करदार पगडंडी दिखाई दी जो घूम कर वहां पहुँचती थी, जहां बालिका खड़ी चिल्ला रही थी। तेजसिंह उसी रास्ते से होकर भागता हुआ दो तीन मिनट में दलदल के पास जा पहुँचा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



जो स्त्री दलदल में फँसी हुई थी, उसकी अवस्था लगभग १६ वर्ष की थी। तेजसिंह ने उसकी आपत्तिमय दशा को देखा और उसके उद्धार के उपायों का विचार प्रारम्भ किया। उसे दलदल से कैसे निकाला जाय ? सुन्दरी ज्यों ज्यों निकलने की चेष्टा करती थी त्यों त्यों अन्दर ही अन्दर धँसती जाती थी। तेजसिंह ने पहला काम यह किया कि सूचित करने वाले ऊँचे स्वर से सुन्दरी को भूमि पर, जहां तक हो सके, लोट जाने को कहा। पहले दो बार कहने का कोई प्रभाव न हुआ, तीसरी बार कहने पर सुन्दरी ने सचेत सी होकर अपना ऊपर का धड़ भूमि पर डाल दिया। ऐसा करने से वह आगे धँसने से बच गई। तब तेजसिंह ने अपनी पगड़ी उतारी और उसके किनारे पर एक छोटा सा पत्थर बाँध कर ऐसे ढंग से फेंका कि उसका दूसरा सिरा सुन्दरी की पकड़ में आ जाय। तब फिर उसने सुन्दरी को पगड़ी का किनारा पकड़ कर लेटे ही लेटे धीरे धीरे दलदल से उठने का यत्न करने के लिये कहा और स्वयं पगड़ी को दूसरे किनारे से थोड़ा २ खींच कर सहायता देनी प्रारम्भ की। इस प्रकार धैर्य्य पूर्वक चेष्टा करने पर भी कोई विशेष कृतकार्यता न हुई क्यों कि लेटे लेटे दलदल से निकलना बड़ा दुष्कर था। तब तेजसिंह ने दलदल से निकलने का एक नया ही उपाय किया। पास ही यमुना के पानी का गिराया हुआ एक पेड़ पड़ा था। वह बालिका की सहायता से उसे खींच लाया और पीछे से धकेल कर दलदल पर ऐसे ढंग से रख दिया कि उस पर से हो कर सुन्दरी के पास पहुंचा जा सके। वह वृक्ष पत्तों और शाखाओं की बहुतायत से दलदल के अन्दर नहीं घुस सकता था। उसके तने और शाखाओं की सहायता लेता हुआ वह सुन्दरी के पास पहुंच गया और अपने हाथ का सहारा देकर धीरे धीरे ऊपर को खींचने लगा। बहुत देर परिश्रम करने के पश्चात् सफलता हुई। वह सुन्दरी अधमुई सी दशा में दलदल से बाहर निकली। उसी दशा में पगडंडी तक पहुंचाना बड़ा कठिन था। उठा कर वृक्ष के तने के

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



ऊपर ऊपर चलने में बड़ा भय था। तेजसिंह ने पत्ते तोड़ कर शाखाओं के ऊपर डाल दिये। अपने सार्फ और ऊपर के चोगे को उतार कर उनके ऊपर बिछा दिया। जहां तक उस अवस्था में संभव था, वहीं पेड़ पर बिस्तर बना कर सुन्दरी को लिटा दिया। बालिका को बुला कर सुन्दरी की अचेतना हटाने के उपाय समझाये तथा स्वयं पगडंडी पर चला गया और बालिका से कह गया कि "जब सुन्दरी सचेत हो जाय तब मुझे पुकार लेना ताकि तुम लोगों को गांव तक पहुंचा आऊँ।"

# दूसरा परिच्छेद

## परिचय

**यमुना** से लगभग पौन मील की दूरी पर सुलतानपुर नाम का एक गांव था। उसमें प्रायः राजपूतों की बस्ती थी। थोड़े से मुसलमान भी थे, किन्तु वह राजपूतों के बंधुये ही थे। यह गांव दिल्ली से यमुना के किनारे किनारे लगभग १८ मील था। कोई सौ वर्ष हुए सुजानसिंह नाम के चौहान राजपूत ने मुगल बादशाहों की भक्ति पूर्वक सेवा करके एक गांव इनाम में पाया था। गांव का पहला नाम सुचेतपुरा था, सुजानसिंह के नाम पर वह सुजानपुर हो गया। पहले वहां मुसलमानों की बस्ती बहुत थी किन्तु सुजानसिंह के वहां बस जाने से आस पास के गांवों के राजपूत भी इकट्ठे होने लगे। गांव राजपूतों का गढ़ बन गया। धीरे धीरे और वंशों के राजपूत भी बस गये। इस समय वह खासा कस्बा बन गया था।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



सुजान सिंह के वंश में इस समय ध्यानसिंह का बड़ा नाम था। उसने वंश की परम्परा के अनुसार मुगल बादशाही में नौकरी करके कई लड़ाइयों में नाम पाया था। मुगल बादशाह की ध्यानसिंह पर कृपा दृष्टि थी। वह प्रायः दिल्ली में ही रहा करता था। तेजसिंह उसी का बड़ा पुत्र और जमींदार का उत्तराधिकारी था। गांव में तेजसिंह का मान था। वह गांव भर के नवयुवकों में प्रतिष्ठित समझा जाता था। उसकी तीव्र बुद्धि और अद्भुत शारीरिक शक्ति उसे स्वभावतया समवयस्कों में ऊंचे स्थान पर पहुंचा देती थी। तेजसिंह ध्यानसिंह का सर्वगुण सम्पन्न उत्तराधिकारी समझा जाता था। वह गांव की भविष्यत् प्रतिष्ठा रूपी डोर का आधार था।

गांव में और भी कई वंशों के राजपूत रहते थे। उनमें से बहुत से ध्यनसिंह के मुखियापन को स्वीकार करते थे—परन्तु सब नहीं। उनमें कई ऐसे भी थे जो ध्यानसिंह की बढ़ती देखकर जलते थे और समय समय पर अवसर पाकर उसे सब प्रकार की हानि पहुंचाने को तैयार रहते थे। वे लोग ध्यानसिंह के पुत्र की गांव भर के युवकों में प्रतिष्ठा देखकर और भी अधिक जलते थे।

उस गांव के लोग हिन्दू धर्म के कट्टर अनुयायी थे। गांव के हर एक बाजार और रास्ते पर कोई न कोई मन्दिर दिखाई देता था। सबसे बड़ा मंदिर वह था, जो ध्यानसिंह के पिता भगवान सिंह ने गांव के मध्य में चौक के एक ओर बनवाया था, उस मंदिर के साथ एक बड़ा कुआं और एक छोटा सा तालाब था। तालाब के दो हिस्से थे—पुरुषों के लिये खुला हुआ और स्त्रियों के सिये परदेदार। गांव भर के नर नारी प्रातःकाल उसी तालाब पर इकट्ठे होकर स्नानादि कर जाते थे और जाते हुए पीने के लिए कुएँ से घड़े या लोटे भर ले जाते थे। पौन मील चलकर यमुना तक जाना किसी किसी दिल चले नवयुवक या किसी देव परायणा भक्ति मतीका ही काम था। जिस सुन्दरी को तेजसिंह ने दलदल से छुड़ाया था, वह आज प्रातः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



काल अपनी चम्पा नाम की सहेली को लेकर यमुना स्नान को निकली थी। यमुना का घाट बहुत अच्छा नहीं था। जरा सी वर्षा हो जाने से उसमें दलदल हो जाती थी। दो दिन हुए थे, रात के समय कुछ बून्दें पड़ गईं थीं। भूमि में कहीं जगह दलदल हो रही थी। सुन्दरी को उसका ध्यान नहीं रहा। नदी की ओर जाते २ उसका पांव दलदल में धँसने लगा। जब वह दलदल से दूर भागने का यत्न करने लगी तो और भी गहरी दलदल में फँस गई। वहां से निकलने की चेष्टा करने लगी, तो भूमि ने उसे और भी जोर से नीचे की ओर खींच लिया। उसी अवस्था से तेजसिंह ने उसे छुड़ाया था।

तेजसिंह के अलग खड़े हो जाने पर उस बालिका ने अपनी सहेली के अंगों पर से मिट्टी को पोंछा और धीरे २ मलने लगी। वसंत के प्राभातिक पवन ने उसकी सहायता की। लगभग १५ मिनट में उसकी आंखें खुलीं और वह सचेत हुई, तब बालिका ने आवाज देकर तेजसिंह को बुला लिया। तेजसिंह जब आया तो सुन्दरी को आंखें खोले एक शाखा का सहारा लिए बैठे हुए पाया। वह सुन्दरी सखीके मुखसे अपने छुटकारे की कथा सुन रही थी और बीच बीच में आंखें उठा कर दूर से आते हुए तेजसिंह की ओर देख रही थी।

पास आकर तेजसिंह की आंखें उस अद्भुत सौंदर्य की पुतली पर पड़ीं। निकालते समय मिट्टी में लथपथ होने के कारण तेजसिंह उस काया की सुघड़ रचना को ठीक तरह नहीं देख सका था। अंगों पर मिट्टी अब भी थी, परन्तु आकृति स्पष्टतया दिखाई दे रही थी। सुन्दरी की मूर्ति युवक के हृदय पर अंकित होने के योग्य थी। स्वाभाविक सौंदर्य के स्वर्ण में चढ़ते यौवन ने मानों सुगन्ध डाल दी थी। चांद सा गोल चमकीला चेहरा, नीले कमल सी रसीली आंखें, अर्धचन्द्र सा माथा, सौंदर्य लताओं की भांति बिखरी हुई काली जटायें और इन सब के ऊपर गम्भीरता का दुर्लभ रोगन,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



ये वस्तुएँ एक एक ही यौवन को हुलसाने के लिए पर्याप्त होती हैं फिर जहां सब इकट्ठी हों वहां क्या कहना है ?

तेजसिंह की आंखें सुन्दरी के चेहरे पर पड़ीं। सुंदरी उस समय अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकाशित करने के लिए मधुर आंखों से, बचानेवाले प्राणदाता की ओर देख रही थी और कुछ कहा चाहती थी। दोनों की आंखें मिलीं और नीची हो गईं। सुन्दरी की जिह्वा पर तेजसिंह की नजर ने मानों ताला लगा दिया। वह कुछ न कह सकी, केवल आंखों से निकलते हुए कृतज्ञता प्रकाशित करने वाले आंसुओं को भूमि पर बरसाने लगी। मुँह पर पहले थोड़ी सी लाली चढ़ आई और पीछे से उसने अपने आपको पीले रंग में परिवर्तित कर दिया। तेजसिंह के चित्त में भी उसी समय एक अद्भुत भाव का आविर्भाव हो आया, जिसे वह स्वयं भी न समझ सका कि वह क्या है। यह नहीं कि उसने इस समय से पूर्व सुन्दर स्त्रियां नहीं देखी थीं—परन्तु न जाने उन मीठी कृतज्ञता भरी आंखों में क्या विशेषता थी, कि तेजसिंह का वीर हृदय भी जोर २ से धड़कने लगा।

शीघ्र ही दोनों ने अपने आपको सँभाल लिया। धीमे से स्वर से आंखें नीचे किये हुए ही सुन्दरी ने कहा—

"मैं सुजानपुर के मुखिया रावल ध्यानसिंह के पुत्र का हृदय से धन्यवाद करती हूँ—जिन्होंने आज मेरी प्राण रक्षा की। मैं उनके उपकार को कभी नहीं भूलूँगी।"

तेजसिंह अपने गांव में इतने सर्वप्रिय थे कि शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जो तेजसिंह को पंचायतों व अखाड़ों में न देख चुका हो। ध्यानसिंह के पीछे पंचायत में उनका स्थान युवा तेजसिंह ही लेता था। लज्जा और कुलीनता जितने शब्दों की आज्ञा दे सकती थी, सुन्दरी ने उतने शब्दों में अपने भाव का प्रकाश कर दिया। तेजसिंह उन संगीतमय सुरीले शब्दों का रसपान करके अद्भुत आनन्द अनुभव करने लगा। किन्तु रसस्रोत शीघ्र ही रुक गया। तेजसिंह ने कहा—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



"देवी! मैंने कोई धन्यवाद योग्य कार्य नहीं किया। जो एक राजपूत का कर्त्तव्य था, मैंने उसी का पालन किया है। अब मेरी सम्मति में व्यर्थ लोकाचार में समय न विताकर गांव की ओर चलना चाहिए। सूर्य बहुत चढ़ता आता है, ऐसा न हो कि हमारे ग्राम पहुँचने से पहले ही धूप तेज हो जाय, हाँ—क्या आप बिना सहारे के चल सकेंगी ?"

सुन्दरी ने उत्तर दिया कि वह बिना सहारा के नहीं चल सकेगी। बालिका का सहारा पर्याप्त न समझकर तेजसिंह ने एक ओर से सुंदरी को थामा और धीरे धीरे वृक्ष के तने पर चला कर पगडण्डी पर पहुँचा दिया। वहां से गांव का मार्ग सीधा था। एक ओर से बालिका और दूसरी ओर से तेजसिंह का सहारा लिये हुए सुन्दरी धीरे धीरे चलने लगी। लगभग पाव घण्टे में वे तीनों गांव के पास पहुँचे। गांव में लोगों का चलना फिरना प्रारम्भ हो चुका था। खेती करने वाले किसान फसल देखने के लिये दातियां हाथों में लिये जा रहे थे। तेजसिंह ने उस स्थान पर सुन्दरी को सहारा देते हुए चलना उचित न समझकर ठीक समझा कि उसे और बालिका को वहां बिठा कर घरवालों को उसकी निर्बल दशा की सूचना दे दे। इसके लिये उसने बालिका से सुन्दरी के पिता का नाम पूछा। नाम सुनकर पहले तो वह क्षण भर चुप रहा, परन्तु शीघ्र ही उन्हें एक वृक्ष के नीचे छोड़कर डग बढ़ाता हुआ गांव की ओर चला गया।

तेजसिंह के क्षण भर चुप रहने का कारण क्या था ? सुन्दरी के पिता का नाम था—गुलाबसिंह। उससे बढ़कर ध्यानसिंह और तेजसिंह का शत्रु गांव भर में कोई नहीं था।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# तीसरा परिच्छेद

## झांकी

ऊपर वर्णन की घटना को हुए पांच दिन हो गये। आज बसन्त-पंचमी है। यह पंचमी भारतवर्ष भर में उत्सव और आनन्द का दिन है। आज के दिन देश की युवतियां प्रकृति के यौवन को अपने यौवन के खुले विकास से द्विगुणित करती हुई हृदय की उमंग को शृंगार और संगीत के मार्ग से प्रकाशित करती हैं। युवकगण अपने और सब शौक छोड़ कर खेल-कूद और आनन्द विहार द्वारा हृदय पुष्प को विकसित करते हैं। बूढ़ों के लिए यह उत्सव सोये हुए सुख संस्कारों को जगाने वाला होता है। युवावस्था को पुष्पित होता देखकर मुरझाई हुई वृद्धावस्था की कोई २ पंखड़ी भी चमक उठती है। पुराने संस्कार उदबुद्ध हो जाते हैं। बालकों के लिये आज कूदने चिल्लाने और पैसे खर्च कर खिलौने खरीदने का दिन है। वर्षा ऋतु के पीछे प्रकृति को ज्वर सा आ जाता है। उस ज्वर से निवृत्त हो कर, रुग्णावस्था के सारे मैल धोकर, नए वस्त्र पहिने हुए प्रकृति देवी ने शृंगार प्रारम्भ किया है। प्रकृति के शृंगार को पूरा करने के लिये ग्राम २ और नगर २ ने आज सजावट की है। कोई घर नहीं, जहां आज शुद्ध दीवारों पर विविध वर्ण चित्र नहीं खींचे गये, कोई ऐसा खेत नहीं जहां सरसों के पीले फूलोंने दिग्दिन्तरोंसे भौंरे और तितलियों की श्रेणियों को आकृष्ट नहीं कर लिया, कोई ऐसा जंगल नहीं, जहां टेसू के लाल फूलों ने उषाकाल का समा नहीं बांध दिया, और कोई ऐसा मार्ग नहीं जिस पर अनेक रंगों के सजे हुए कपड़ों में युवकों की पीली २ पगड़ियां हिल कर खेत और जंगल की शोभाका उपहास नहीं कर रही हैं। आज भारत का कोई सशक्त व्यक्ति ग्राम और नगर की चारदीवारी में बन्द रहना पसन्द नहीं करता।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



सुजानपुर ग्राम ने भी आज अपने ढकने से बाहिर, प्रकृति की विशाल गोद में विहार करना विचारा है। गांव के उत्तर की ओर कोई तीन फर्लांग की दूरी पर खेतों से घिरा हुआ एक पुराना मन्दिर है जहां वसन्त का उत्सव मनाया जाता है। गांव भर के नरनारी खेतों की अजब बहार देखते हुए दोपहर से पूर्व ही उस मन्दिर के पास पहुँच जाते हैं। सारा दिन वहीं आनन्द से कटता है। लोग गाते हैं, बजाते हैं और बसन्त का शुद्ध पवन पान करके स्वास्थ्य पाते हैं। घर में कोई नहीं बैठता। गांव के बीच में से एक बड़ा रास्ता निकलता है जो खेतों में से होता हुआ मन्दिर के पास से गुजरता है। वह रास्ता गांव में से होकर यमुना को कोई आध मील की दूरी पर छोड़ता हुआ सीधा दिल्ली की बड़ी सड़क में जा मिलता है।

गांव वालों ने उत्सव मनाने की बड़ी तैयारियां की हैं। पुरुषों ने पीली पगड़ियां और स्त्रियों ने पीले दुपट्टे रंगवाये हैं। जहां से होकर लोगों को गुजरना है, उस रास्ते पर छोटे छोटे दुकानदारों ने अपनी दुकानें जमा दी हैं। कई फेरी वाले पास के छोटे गांव छोड़ कर इस कस्बे में माल बेंचने आये हैं। खाने पीने का सामान बेंचने की दुकानों की संख्या औरों से अधिक है। दो तीन दूकानदार तो दिल्ली से चल कर यहां सुन्दर सुन्दर कपड़े तथा कीमती खिलौने बेचने आये हैं। उनकी दुकानों के इर्द गिर्द खूब जमघट है। खेतों के बीच बीच में जहां खाली जगह है, वहां लोग सुख पूर्वक बैठ कर घर से लाया हुआ भोजन का सामान निकालते हैं और खाते हैं। कई तमाशा दिखाने वाले नट दूर दूर से आये हैं और कपड़े खा कर, बन्दर नचा कर और रुपया हाथ में छुपा कर पैसे कमाते हैं। एक दवाई चने वाला फकीर भी आया है, जो अपनी एक एक दवाई का सौ सौ गुण बतला कर भोले भाले लोगों की गाठें खुलवा रहा है। पग पग पर मनो-रंजन का सामान उपस्थित है, और लोगों के समूह खड़े हुए मेले की रौनक बढ़ा रहे हैं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## तीसरा परिच्छेद

पाठक ! जरा आप इसी पास वाले समूह पर दृष्टि डालें, कोई आपका परिचित मनुष्य तो इसमें नहीं ? हां, क्यों नहीं। तेजसिंह अपने पांच छः नौजवान हमजोलियों के साथ घूम रहा है। तेजसिंह के उन्नत सिर पर राजपूती ढंग से बँधा हुआ तिर्छा फेंटा खूब ही शोभायमान हो रहा है। भरे हुये सांवले चेहरे पर दोनों किनारों से मरोड़ कर ऊपर चढ़ाई हुई मूछें विचित्र छटा दिखला रही हैं, और वीर के आत्म सम्मान की सूचना दे रही हैं। तेजसिंह चारों ओर निगाह दौड़ाता हुआ चला जा रहा है। मुँह से बातें कर रहा है, किन्तु आंखें एक स्थान से दूसरे स्थान पर भागती हैं और निराश सी होकर दूसरी ओर चली जाती हैं। तेजसिंह कुछ ढूंढ़ रहा है।

जिस दिन से तेजसिंह ने उस सुन्दरी को देखा है, उसके हृदय में एक नई ही अवर्णनीय वासना उत्पन्न हुई है। वह नहीं बतला सकता कि उस वा तविक रूप क्या है। उसे केवल इतना ज्ञान है कि उसकी आंखें लोभिन हो गई हैं। वे उस मूर्ति को फिर एक बार देखना चाहती हैं। स थ ही उसे यह प्रतीत होता है, कि तब से आंखों और हृदय में कोई विशेष संबंध हो गया है क्यों कि जहां पहले आंखें अकेली घूमती थीं, वहां अब हृदय को भी साथ लिये फिरती हैं। इस समय भी तेजसिंह की आंखें हृदय को लिये हुये चारों ओर भाग रही थीं। इस ज्ञान ने भी कि वह सुन्दरी एक ऐसे पुरुष की कन्या है, जो तेजसिंह का कुल शत्रु है, उसकी आंखों के नये लोभ पर कोई असर नहीं डाला। तेजसिंह जानता था कि उस सुन्दरी से उसके घर जा कर मिलना असम्भव है, इसीलिये आज उसने मेले में ही अपने हृदय चकोर की चांदनी को ढूँढ़ निकालने का संकल्प किया है।

उस सुन्दरी का नाम कमला देवी था। उसकी दशा भी तेजसिंह से कुछ भिन्न न थी। भेद इतना ही था कि वह अपनी आंखों के लोभ को पूरा करने के लिये इधर उधर न घूम सकती थी। उसकी आंखों ने भी तेजसिंह

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



की आंख से बातचीत कर ली थी। चाहे वह बातचीत क्षणिक थी—पर तो भी उसका प्रभाव क्षणिक न था। वह स्थायी था। अपनी आंखों के लक्ष्य को पाने का कमला देवी ने दूसरा ही उपाय निकाला। ऐस स्थान जहां से सभी ग्राम वासी गुजरते थे, मंदिर का द्वार था। कमला देवी ने निर्धारण किया था कि और कहीं हो या न हो, मंदिर के दरवाजे पर तो प्रियतम के दर्शन हो ही जायँगे। इसलिये वह अपनी माता को कई बहानों से प्रेरणा करके पहले से मंदिर के दरवाजे पर ले गई और वहीं पास ही एक उत्तम स्थान ढूंढ़ कर बैठ गई। दोनों हृदयों में एक विद्युत की शक्ति सी काम कर रही थी, जो उन्हें एक दूसरे की ओर खींच रही थी।

देर तक ढूँढ़ जारी रही। तेजसिंह ने मेले का कोना-कोना छान डाला। उसके साथी आश्चर्यचकित थे कि तेजसिंह की आंखें क्यों नहीं जमतीं। आंखें एक स्थान पर जाती थीं—खोज करती थीं—और एक ठंडे सांस के साथ वहां से लौट आती थीं। तेजसिंह के साथी सोचते थे, आज उनके मुखिया की तबियत खराब है।

मध्यान्ह हो गया। सूर्य की किरणें पृथ्वी पर सीधी मार करने लगीं। तेजसिंह ने सारा मेला छान मारा। अंत को सोचा, चलो एक बार मंदिर में हो आयें। सारे लोग उधर जा रहे थे, तेजसिंह भी उधर ही चल पड़ा। प्रेम की विद्युत हृदयों को एक दूसरे के समीप लाने लगी।

मंदिर पास ही था। तेजसिंह के एक साथी ने प्रस्ताव किया कि "ठहरो भाई यहां इस पेड़ के नीचे थोड़ी देर विश्राम कर चलें। घूमते घूमते तो आज कोल्हू के बैल को भी हरा दिया। दो चार मिनट आराम भी तो कर लो।" सबने प्रस्ताव का अनुमोदन किया। तेजसिंह भी बैठने के लिये अनिच्छुक नहीं था। ढाक के नीचे डेरे जमा दिये गये, और बातचीत होने लगी।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



जिस पेड़ के नीचे बैठे हुये नवयुवक बातें कर रहे थे, वह सड़क के किनारे पर ही था। अभी उन्हें बैठे दो चार ही मिनट हुए होंगे कि रास्ते पर कुछ हलचल प्रतीत हुई। ऐसा प्रतीत होता था कि मानों रास्ते में जाने वाली जनता दो भागों में बँट रही है। बीच में रास्ता किया जा रहा है। रास्ता लोगों से खचाखच भरा हुआ था, इसलिये खेतों की बाड़ों और कहीं २ खेतों में भी लोग ढकेले जा रहे थे। गड़बड़ का कारण जानने के लिये तेजसिंह खड़ा हो गया—भीड़ और भी पास आने लगी। सब लोग सड़क की ओर देखने लगे। देखा, दूर से दो मुसलमान घुड़सवार घोड़े भगाये चले आरहे हैं। पास आने पर पता लगा कि पीछे, कोई आध मील की दूरी पर शाही सवारी आ रही है। बादशाह सलामत शिकार को जारहे हैं—उनके लिये रास्ता साफ करते हुये वे दोनों घुड़सवार आगे आगे जा रहे थे।

शाही सवारी के नाम पर लोग एक दम चौंक गये। सब एक दूसरे की ओर देखने लगे। जिह्वा से कहने की आवश्यकता न रही। मानों सारी जनता के हृदय में एक वार ही विद्युत सी संचार कर गई, सब एक मत हो रास्ता छोड़ कर दूर दूर जाने लगे। सवारी पास ही थी और ग्राम की ओर से आ रही थी, इसलिये उस ओर जाकर घर में छुपने का किसी को साहस न हुआ। जैसे भेड़िये के आने की बू पाकर बकरियां झाड़ियों में छुपती फिरती हैं, इसी प्रकार वहां इकट्ठा हुआ स्त्री समूह इधर उधर का स्थान ढूंढ़ने लगा।

सवारी हाथियों पर आ रही थी और पास ही थी। वस्तुनः वह जितनी दूर थी, घुड़सवारों ने जानबूझ कर उससे अधिक दूरी बतलाई थी। लोग अभी छिटक कर इधर उधर भाग न सके थे कि शाही हाथियों के घंटे सुनाई देने लगे। घंटों का शब्द सुन कर आंख उठते ही, मार्ग के किनारे किनारे लगे हुये वृक्षों की ओझल से, बादशाह के जंगी हाथी का हौदा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



दिखाई दिया, लोगों की भाग दौड़ बन्द हो गई, केवल जो स्त्रियां सड़क के किनारे खड़ी थीं उन्होंने उधर पीठ कर लीं।

शाही सवारी सामने आई। सब से आगे कुछ घुड़सवार थे। सवारों के हाथों में भाले थे और अगले के हाथ में एक मुगल झंडा लहरा रहा था। सवारों के ऊँचे घोड़े और ऊँचे कद भारत का शासन करने वाली जाति की शारीरिक सम्पत्ति का अच्छा परिचय दे रहे थे। उनके पीछे बादशाह का हाथी था। हाथी पर सुनहरे काम वाली झालरें, चारों ओर बजते हुये घंटों को छुपा रही थीं। हाथी की पीठ पर चांदी का सुन्दर हौदा था, और उस हौदे में भारत का शहंशाह शाह आलम बैठा हुआ था। शाह आलम अभी प्रौढ़ ही था। बुढ़ापे के चिन्हों ने उसे दबाया नहीं था। दुराचार और विलास की रेखायें स्पष्ट दिखाई दे रही थीं, परन्तु उन्होंने स्वाभाविक मुगल चमकाहट को मार नहीं दिया था। शाह आलम चारों ओर नजर मारता हुआ और किनारे खड़े हुए राजपूतों के सलाम का सिर हिलाकर उत्तर देता हुआ जा रहा था। सलाम तो ले रहा था परंतु उसकी नजर मुखों पर नहीं बल्कि पीठों पर थी। अपनी ओर राजपूत रमणियों की पीठें देखकर उसके चेहरे पर निराशा और खिजलाहट के निशान प्रतीत हो रहे थे।

सवारी जब पास आई, स्त्रियां भी थोड़ी थोड़ी नजर फेर कर झट मुड़ गईं, परंतु एक की नजर उधर की उधर ही रह गई। वह कमला देवी थी। ज्यों ही उसने सड़क की ओर आंखें कीं, त्यों ही उसे सदूरी ओर खड़े हुये तेजसिंह का चेह दिखाई दिया। चातकी जिस बादल की खोज में थी, वह दृष्टिगोचर हो गया। उसकी नजर न मुड़ सकी। उसकी माता ने उसका पल्ला पकड़ कर खींचा, और झिड़क कर कहा कि "अरी मुई क्या बादशाह को मुँह दिखला कर हरम में जायेगी, मुँह क्यों नहीं मोड़ती।" उसी समय तेजसिंह की आंख भी कमला देवी की आंख पर पड़ी। दोनों की

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



आंखें मिल गयीं और मानो बँध गईं । उन दोनों को यह ज्ञात नहीं था कि किसी तीसरे पुरुष की भी आंखें हैं, जो उनकी दृष्टियों को बीच में काट रही हैं । उन्हें क्या, जनता में से किसी को भी यह पता नहीं लगा कि वृक्ष के ठीक पास आकर, बादशाह का हाथी थोड़ी देर क्यों ठहर गया । बादशाह ने पेड़ की ओर पीठ करके थोड़ी देर तक क्या देखा । और फिर अपने पीछे बैठे हुए एक अर्दली को क्या कहा जिससे कि वह उत्तम वस्त्रधारी अर्दली उतर कर वहीं किनारे पर बैठ गया । इन बातों का कारण किसी को भी पता नहीं लगा । सवारी निकल गई, जनता छिटक गई, और प्रेमियों की आंखों का मेल भी टूट गया । कमला देवी की माता अपनी लड़की को भला बुरा कहती हुई मन्दिर की ओर रवाना हुई । तेजसिंह अपने दल बल सहित गांव की ओर मुँह मोड़कर चल दिया । आज का वसन्तोत्सव भी इसी गड़बड़ में समाप्त हो गया ।

# चौथा परिच्छेद

## चर्चा

शाम का समय होगा । सूर्य भगवान थक कर अस्ताचल में अपना मुँह छुपाना ही चाहते थे । पूर्व दिशा में लालिमा बड़ी सुहावनी सी मालूम होती थी । इस समय गांव की हरियाली के साथ आती हुई मन्द मन्द पवन बड़ी सुगन्धित मालूम होती थी । साथ ही गांव के बीच में लगे हुए पेड़ पर पक्षियों का कलरव सुनाई देता था । यह सब वस्तुयें ऐसी थीं कि जिनसे प्रफुल्लता छा जाती थी ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



फिर भी, मेले में से लौटते हुये लोगों के चेहरों पर थकावट के चिन्ह दृष्टिगोचर हो रहे थे। आज वसन्त का उत्सव प्रत्येक ने बड़े उत्साह से मनाया था। दिन भर की दौड़-धूप के बाद अब लोग कुछ थके हुये से दीख पड़ते थे। नर नारियों के झुण्ड के झुण्ड धीरे धीरे अपने घर की ओर वापिस लौट रहे थे। इसी झुण्ड में कमला देवी का पिता गुलाब सिंह भी था। उसकी एक ओर कमला देवी थी और दूसरी ओर उसकी स्त्री। धीरे धीरे आगे बढ़ते हुए यह अपने मकान के अन्दर प्रविष्ट हुए।

कमला देवी तथा उसकी माता तो अन्दर चली गईं और गुलाबसिंह बैठक में बैठ कर बाहर की ओर देखने लगा। कुछ देर इस प्रकार देखने के पश्चात् उसने अपने तकिए को सिराहने लगा लिया और उसी के सहारे लेट कर आराम करने का प्रयत्न करने लगा, लेकिन दस मिनट के अन्दर ही किसी ने उसका ध्यान भंग कर दिया। उसने बाहर की ओर देखा तो फूल सिंह को दरवाजे में खड़ा पाया। इस समय फूल सिंह का आना उसे बड़ा आश्चर्य-जनक प्रतीत हुआ। फिर भी महमान का सत्कार आवश्यक है, इसलिये उसने उसे बुलाकर आराम से बिठाया।

कुछ देर तक दोनों ही चुपचाप बैठे रहे। अन्त में गुलाब सिंह ने ही मौन मुद्रा तोड़ी, उसने कहा—

"कहो भाई फूल सिंह ! आज हम पर इतनी कृपा कैसे हुई ? आज बड़े दरबार में नहीं बैठे ? क्या अपने परम मित्र तेज सिंह से कोई खट पट हो गई है ? कहो, क्या कुछ कहना चाहते हो ?"

फूलसिंह ने धीरे धीरे उत्तर दिया—

"भाई साहब ! मैं आप पर कृपा करनेवाला कौन ? मुझे ही आप की कृपा चाहिए। मैं तो वारम्बार यही प्रार्थना करता हूँ कि आप शांति धारण करके ध्यान सिंह और तेजसिंह से वैर छोड़ दें और गांव भर को दो दलों में बँटे रहने से बचावें। लड़ाई से कोई लाभ नहीं हो सकता। मैंने इसका

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



उपाय सोचा है। यदि आप बुरा न मानें तो कहूँ। यह आप जानते ही हैं कि राजपूत कभी अपने वंश का बुरा नहीं सोच सकता, इसलिए मैं भी जो कुछ कहूँगा, हितकर समझ कर ही कहूँगा।"

गुलाब सिंह "अच्छा कहिए। आपकी उत्तम सलाह भी सुननी चाहिए। क्या हमें ध्यान सिंह और तेज सिंह के सन्मुख जाकर भूमि पर नाक से सात लकीरें निकालनी होंगी?"

फूलसिंह "नहीं भाई साहब! मैं जो प्रस्ताव करने वाला हूँ, वह ऐसा नहीं हैं। उसमें हमारी भी प्रतिष्ठा हैं, उनकी भी। आपकी कन्या कमला देवी अब विवाह योग्य वय को पहुँची। उसके विवाह की चिन्ता आप को भी होगी। कल उसकी माता ने भी मुझसे योग्य वर ढूंढ़ने के विषय में बातचीत की थी। मेरा प्रस्ताव है कि कमला देवी का विवाह तेजसिंह से कर दिया जाय। इसमें हमारे कुल की कोई अप्रतिष्ठा नहीं क्योंकि चौहान वंश से हमारे संबन्ध प्राचीन काल से होते आये हैं। सांसारिक दृष्टि से तेजसिंह हम लोगों से किसी प्रकार नीचा नहीं। कहिए, आप इस प्रस्ताव पर क्या कहते हैं।"

गुलाब सिंह इस प्रस्ताव को सुनकर एक साथ चौंक से पड़े। तेजसिंह के साथ कमला देवी का विवाह! जिसे वह अपना प्राणान्त शत्रु समझे हुए हैं, उससे पुत्री का सम्बन्ध! क्या कुल द्रोही फूलसिंह के सिवा और कोई पुरुष भी ऐसा प्रस्ताव गुलाब सिंह के सन्मुख रखने का साहस कर सकता था। गुलाबसिंह ने तीखे स्वर से कहा—

"फूलसिंह! क्या तू मेरे यहां मेरा अपमान करने आया है? क्या तू नहीं जानता कि मैं तेजसिंह को अपना कुल शत्रु समझता हूँ? क्या मैं अपनी इकलौती कन्या को उस नर राक्षस के गले बांध सकता हूँ? तूने सब कुछ जानते हुए भी मेरे सामने किस भरोसे पर ऐसी बात छेड़ी? मैं जो कुछ समझता था, वह ठीक निकला। तुझे तेजसिंह ने मेरे घर में ऐसा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



कार्य करने के लिए गुप्त-दूत रख छोड़ा है। बस अब आगे इसके सम्बन्ध में कोई शब्द मुख से न निकालना।"

फूल सिंह नहीं समझता था कि गुलाब सिंह इस प्रस्ताव को सुनकर आपे से बाहर हो जायगा। ज्वाला मुखी के इस प्रकार फूटने से वह कुछ विचलित सा होगया। उसने एक दो बार फिर मीठे २ वाक्यों से गुलाबसिंह को समझानी चाहा कि "जो तुम्हारा बैर है वह कुल बैर नहीं बनाना चाहिए। सम्बन्ध से हमारी कोई हानि नहीं, लाभ ही है।" किन्तु गुलाबसिंह की समझ में एक बात भी न आई। वह और भी तेज होता गया, और अंत को खड़ा होकर कहने लगा—

"सुनो फूलसिंह! मैं तुम्हें साफ शब्दों में कहता हूँ। मैं अपनी कन्या को कुत्तों के वंश में कभी नहीं दूँगा। कमला देवी को तेजसिंह के साथ ब्याहने की अपेक्षा मैं उसे किसी मुसलमान के साथ ब्याह देना अच्छा समझता हूँ। क्या कमला देवी को कोई वर न मिलेगा? साथ ही तुम भी आज से यह जान लो कि मेरे परिवार से अब तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं रहा। मेरे यहां आना जाना तुम्हें बंद कर देना चाहिए। तुम जैसे कुल द्रोही के लिए मेरे घर का द्वार बन्द है।"

फूल सिंह भी खड़ा हो गया था। वह भी अधिक देर तक अपने जोश को थाम न सका। उसने कहा—

"भाई साहिब! जिस प्रेमसे प्रेरित हो कर मैं आपके कार्योंसे अप्रसन्न होता हुआ भी आपको भाई समझता रहा, मुझे शोक है कि आपने उसे कभी नहीं समझा, मैं आज साफ कहता हूं कि इस सारे झगड़े में मैं आपको अपराधी और ध्यानसिंह तथा तेजसिंह को निरापराधी समझता हूं। आपने अपने घर का द्वार मेरे लिये बन्द किया है—मैं भी आज से उस पर थूकता हूं। आप मुझे इस द्वार के भीतर कभी नहीं पायेंगे। शेष रहा कमला देवी के विवाह का प्रश्न। मैं आपको बतला दूं कि तेजसिंह कमला देवी को

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



चाहता है, और वह उससे विवाह अवश्य करेगा। वीर राजपूत जिसे चाहते हैं, उसे पा ही लेते हैं। चौहान वंश के राजपूतों का ऐसे विषय में निश्चय बड़ा भयानक होता है। यदि आप शांति से नहीं देंगे तो वह कमला देवी को दूसरे साधनों से लेगा। बस मैं इतनी सूचना दे देना अपना कर्तव्य समझता था, अब मैं जाता हूं—पर आशा रखता हूं कि परमात्मा अब भी आपकी बुद्धि को ठिकानें लगायेंगे।"

गुलाब सिंह अपनी बात समाप्त करते ही बैठक के भीतर घुस गया था। वह फूलसिंह के कथन का उत्तर न देकर उसको अपमानित करना चाहता था, परन्तु अन्तिम वाक्य सुन कर उससे न रहा गया। बलात्कार से तेजसिंह कमला देवी को ले जायगा—यह बात उसके कानों को सह्य न हो सकी। वह उत्तर देने के लिए बैठक के दरवाजे पर आया तो देखा कि फूलसिंह वहां नहीं हैं।

# पांचवां परिच्छेद

## गुलाम क़ादिर

फूल सिंह वहां नहीं था—परन्तु किसीके पगकी आहट सुनाई दे रही थी। गुलाब सिंह उस आहट को सुनने लगा। थोड़ी ही देर में गली के बीच में से निकलती हुई कोई सफेद सी मूर्ति दिखाई दी। गुलाब सिंह एकटक हो उधर देखने लगा। वह मूर्ति बैठक की ओर बढ़ने लगी। पास आने पर गुलाब सिंह ने देखा कि एक लम्बा चौड़ा खूबसूरत मुसलमान नौजवान उसकी ओर को बढ़ा आ रहा है। नौजवान का वेष बादशाही अर्दलियों का सा था उसके विशाल सुन्दर देह पर वह वेष अनूठी छवि दिखा रहा था। वह नौजवान पास आया और गुलाब सिंह की ओर देख कर कहने लगा—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



"क्या मैं अपने सामने सुजानपुर के प्रसिद्ध ठाकुर गुलाब सिंह को देख रहा हूँ ?"

गुलाब सिंह ने कहा—"हाँ मेरा ही नाम गुलाब सिंह है, कहिये आप को मुझसे क्या काम है ?"

नौजवान—"मेरा काम ऐसी जल्दी का नहीं है। आप अंदर चलिए, बैठकर शांति से ही मैं अपना निवेदन करूँगा। मुझे आप से किसी बड़े गुप्त और आवश्यक विषय में बातचीत करनी है।"

रात के समय बादशाही सिपाही को अपने घर में आता देख कर गुलाब सिंह का माथा ठनका, गुप्त और आवश्यक विषय का नाम सुन कर उसका विस्मय और भी बढ़ गया। वह शिष्टतापूर्वक कहने लगा—"आइये! अन्दर आजाइये।"

दोनों अन्दर चले गये। एक चौकी पर दिया रखा था। उसके पास बड़ा गद्दा बिछा हुआ था। गुलाब सिंह, अर्दली को भी पास ही बिठाकर मसनद के सहारे बैठ, उसके बोलने की प्रतीक्षा करने लगा।

मुसलमान नौजवान ने कहा—"अपनी अर्ज करने से पहले मैं यह बतला देना जरूरी समझता हूँ कि मैं कौन हूँ। मैं हिन्दुस्तान के शहन्शाह जहां पनाह शाह आलम का नौकर हूँ, मेरा नाम गुलाम कादिर है। मुझे शहन्शाह ने आपके पास भेजा है। जो सन्देशा उन्होंने आपके पास भेजा है—वह गोपनीय है। वह किसी को पता नहीं लगना चाहिये। आप पर शहन्शाह ने इतना अनुग्रह किया है, उसके बदले में वे चाहते हैं कि आप अपना मुँह इस बारे में बंद रखें। आप मुझे ऐसी उम्मीद दिलावें तो फिर मैं आपको संदेश सुना दूँ।"

गुलाब सिंह ने उत्तर दिया-"हम लोग चाहे हिन्दू धर्म के अनुयायी हैं, परंतु हमने मुसलमान बादशाह की अधीनता स्वीकार की है, तब हम उसकी प्रजा हैं। वे हमारे राजा हैं। राजा की बात को गुप्त रखना प्रजा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



का धर्म है। कहिये बादशाह इस राजपूत की तलवार से किस दुश्मन का सिर उड़वाना चाहते हैं।"

गुलाम कादिर—"शहन्शाह आप लोगों से इसी प्रकार की हार्दिक सहानुभूति की आशा रखते हैं। उनके तख्त के चार पायों में से, कम से कम एक, राजपूतों के कंधों पर ही खड़ा है। मैं आपकी इस राज भक्ति का समाचार शहन्शाह तक ज़रूर पहुँचा दूँगा पर इस समय मुझे जो निवेदन आप से करना है वह लड़ाई के सम्बन्ध में नहीं है। वह किसी और ही विषय में है। उसमें भी आप की राजभक्ति की ही परीक्षा होगी। शहन्शाह की सवारी आज यहां से निकली थी, इस गांव को आज उनके दर्शन के सौभाग्य प्राप्त हुये थे, यह आपको ज्ञात ही है। वे आगे जाते हुए मुझे यहां छोड़ गये हैं कि मैं आपको उनका संदेसा दे दूँ। संदेसा यह है कि आप अपनी सुन्दरी कन्या को आज ही मेरे साथ रवाना कर दें। वह बादशाह के हरम में दाखिल की जायगी।"

"बादशाह ने इस बारे में आपको सोच विचार करने के लिये अधिक समय नहीं दिया। उन्हें आपकी राजभक्ति पर इतना विश्वास था कि मुझे आज ही रात दिल्ली लौट आने की आज्ञा दी है, सो अब आप देर न करके अपनी दिव्य सुंदरी पुत्री को मेरे साथ रवाना कर दें।"

गुलाम कादिर अपनी बात करता रहा। उसका ध्यान अपनी बात में इतना लगा हुआ था कि वह गुलाबसिंह की दशा पर ध्यान न दे सका। उसकी दशा शाही संदेसा सुनने के साथ ही विचित्र हो गई। उसका स्वभाव बड़ा मानी और प्रचंड था। वह सहन नहीं कर सकता था। इस समय तो वह पहले ही फूलसिंह से लड़ाई कर चुका था। फूलसिंह से बात करते २ उसने कहा था कि वह तेजसिंह को अपनी कन्या देने की अपेक्षा उसका किसी मुसलमान से व्याह कर देना उत्तम समझता है। उसे ज्ञात नहीं था कि कहे हुए को सत्य कर दिखाने का अवसर इतनी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



शीघ्र आ जायगा। संदेसे को सुनकर उसे पहले तो इतना क्रोध आया कि तलवार निकाल कर गुलाम कादिर का सिर उड़ा देने की इच्छा हुई। परन्तु फिर बादशाही क्रोध का स्मरण हो आया और उसके भयंकर परिणामों पर ध्यान गया। इसलिए अपने क्रोध को कुछ रोक कर उसने दूत को कहा—

गुलाब सिंह—"बादशाह की आज्ञा उसकी प्रजा को वहीं तक शिरोधार्य होती है, जहां तक वह धर्मानुकूल है। आप भी जानते हैं कि हमारा हिन्दू धर्म और राजपूती कुल धर्म इस प्रकार के सम्बन्ध की आज्ञा नहीं देता। मैं इसी समय इतने आवश्यक विषय में कोई निश्चय नहीं कर सकता। मुझे विचार के लिए समय दीजिए। दो दिन की मोहलत हो तो मैं आज से तीसरे रोज इसी समय आपको उत्तर दे सकूँगा।

गुलाम कादिर—"मैं आप से पहले ही निवेदन कर चुका हूँ कि शहंशाह ने आपको सोचने विचारने के लिए कोई समय नहीं दिया। उनकी आज्ञा है कि मैं रात समाप्त होने से पहले ही आपकी कन्या को महलों में दाखिल कर दूँ। आप इस बात पर आग्रह न करें। जो शहंशाह की आज्ञा है वह टल नहीं सकती। आप खुशी खुशी अपनी कन्या को मेरे साथ भेज दें। और जो आप ने कुल धर्म आदि के बारें में कहा, तो क्या आज से पहले बड़े २ राजपूत राजाओं ने अपनी कन्याओं को शाही महलों में भेज अ अपने आपको अनुगृहीत नहीं माना? तब फिर आप इसे अपने धर्म के खिलाफ क्यों समझते हैं?"

गुलाब सिंह—"जिन राजपूत राजाओं ने अपनी कन्यायें मुसलमान बादशाहों को दी हैं, उन्होंने नियम पूर्वक व्याह करके दी हैं। इस प्रकार चोरी से नहीं दीं। बादशाह मेरी कन्या से भी खुली तौर पर विवाह करने को तैयार हों, तो मैं अपनी कन्या देने को उद्यत हूँ।"

गुलाम कादिर—"ठाकुर साहब यह तो केवल समझने की बातें हैं। विवाह की रीति हुई या न हुई—बात तो एक ही है। मैं आपसे निजू तौर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



पर कहता हूं कि आप, इस मौक़े को हाथ से न जाने दें। न जाने इस संबन्ध में आपको क्या क्या इनाम मिलें।"

गुलाब सिंह विवाह में और महलों में पहुँचा देने में भेद जानता था। जहां विवाह होने से कन्या की एक स्थिर स्थिति हो जाती थी, वहां महलों में जाने का मतलब यह था कि बादशाह अपनी दो दिन की विषय वासना पूरी करके नया शिकार मिलने पर कन्या को दासी मण्डल में डाल दें तब वहां उसे रात दिन बादशाही मुसाहिबों के कटाक्षों का निशाना बनना पड़ता था।

गुलाब सिंह—"यदि आप मुझे विचार के लिये समय नहीं देते और इसी समय उत्तर लेना चाहते हैं तो मेरा उत्तर साफ है। मैं अपनी कन्या को इस अवस्था में नहीं दे सकता। मैं जानता हूँ कि इससे मेरे ऊपर शाही कोप टूट पड़ेगा, परन्तु राजपूत अपने धर्म को तन, मन और धन से बहुत ऊँचा समझते हैं। धर्म पर आपत्ति आये तो वे अपनी गर्दन को तलवार के तले रख देने से नहीं हिचकिचाते, गुलाब सिंह को शोक है कि वह आपकी इस इच्छा को पूरा नहीं कर सकता।"

गुलाम कादिर—" ठाकुर साहिब आप, मुझे इस प्रकार का उत्तर न दें। मैं नहीं चाहता कि आप पर कोई आफत आवे। मैं फिर अर्ज करता हूँ कि आप हित अनहित को पूरा पूरा तोलकर देखें—और फिर उत्तर दें। मैं आपसे उत्तार में 'नहीं' नहीं सुनना चाहता।"

गुलाब सिंह—"अब मैं और विचार नहीं करना चाहता। मेरा यही निश्चय है। इस प्रकार गुप्त रीति से मैं अपनी कन्या देकर अपने और अपने वंश के माथे पर कलंक का टीका नहीं लगाना चाहता। राजपूत अपने बचन से नहीं फिर सकता, आप जाइये और कृपया मेरा यही उत्तर शहंशाह तक पहुँचा दीजिये।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



गुलाम कादिर खड़ा हो गया। खड़े होकर उसने कुछ रूखे से स्वर से कहा—"मैं आशा करके आया था कि आप इतनी भारी शाही कृपा को आनन्दपूर्वक स्वीकार करेंगे परन्तु मुझे शोक है कि आपने उसका अपमान किया। खैर आपकी इच्छा।"

गुलाम कादिर चला गया। जाने के समय भी गुलाब सिंह उसके चेहरे पर क्रोध या खिजलाहट के चिन्ह न पा सका। उसकी अंतिम बात में जरा सी रुखावट अवश्य थी परन्तु क्रोध दृष्टिगोचर नहीं होता था। गुलाबसिंह सारी समस्या को चिन्तित हृदय से सोचता हुआ बैठक का दरवाजा बन्द करके और दिया बुझाकर, मकान के भीतर चला गया।

# छठा परिच्छेद

## डाका

**गुलाब सिंह** अन्दर जाकर पलंग पर लेट गया, लेट तो गया पर नींद न आई। चित्तका क्षोभ ऐसा था कि शांति से लेटना भी कठिन था सोने की तो कौन कहे? फूलसिंह के अंतिम शब्द और गुलाम कादिर की छुपी धमकी हृदय में बार बार आने जाने लगी। गुलाबसिंह ज्यों ज्यों सोचता था, त्यों त्यों फूलसिंह पर उसका कोप बढ़ता जाता था। क्या घर का सांप इसी को नहीं कहते? और फिर धमकी यह कि तेजसिंह कमला देवी को बलात्कार से ले लेगा! क्या तेजसिंह और फूलसिंह—दोनों को समाप्त कर देना ही ठीक न होगा? यह विचार गुलाबसिंह के चित्त में पूरा गहरा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



स्थान पा रहा था। वह विचार रहा था कि इन दोनों को इस भूमि पर से विदा कर देना ही ठीक है। मेरे घर में मेरा अपमान और फिर बलात्कार की धमकी! राजपूत कभी ऐसी अवहेलना को नहीं सह सकते। दूसरी ओर बादशाह का संदेशा भी पक्का और कठोर था। परन्तु गुलाम कादिर का शील और सभ्य व्यवहार गुलाबसिंह को आश्चर्य में डाल रहा था। वह ऐसा चुपके से चला गया। उसने कोई धमकी क्यों न दी? शायद वह कल फिर आवेगा। खैर आयगा तो देखा जायगा। कहाँ गुलाम कादिर का सभ्य व्यवहार और कहाँ फूलसिंह की गर्वोक्ति। दोनों का अन्तर गुलाब सिंह के हृदय में उपजे हुए क्रोध में उबाल पैदा करने लगा। कल तेजसिंह और फूलसिंह के संहार का साधन करना ही होगा इन दर्दीले दांतों को मुंह से निकाल ही देना होगा। बादशाह को क्या उत्तर देंगे? यह कल देखा जायगा। जल्दी काहे की है।

इसी प्रकार के विचार गुलाब सिंह के हृदय में बिना किसी क्रम के देर तक घूमते रहे। विचारों का केन्द्र यह था कि फूलसिंह और तेजसिंह का संहार किया जाय, और गुलाम कादिर को उत्तर-यह तो कल देखा जायगा। और कोई निश्चित बात गुलाब सिंह के मन में न आ सकी। इसी तरह सोचते २ आधी रात से अधिक हो गई। आखिर चिन्ताग्रस्त मन पर दिन की शारीरिक थकावट ने विजय प्राप्त की। धीरे २ आंखें बन्द होने लगीं। गुलाब सिंह का सांस जोर से चलने लगा। हठीला चित्त फिर भी न माना। नींद में भी उसने अपना साम्राज्य जमा लिया। सोये हुए मन ने अपनी नई दुनियां घड़नी आरम्भ की।

गुलाब सिंह एक पहाड़ की चोटी पर खड़ा है जो बहुत ऊँची और रुण्ड मुण्ड है। कोई वृक्ष देखने तक को नहीं, सामने कोई सौ गज की दूरी पर एक और चोटी दिखाई दे रही है, उस पर एक शेर खड़ा है और गुलाबसिंह की ओर घूर रहा है। शेर के मुँह में एक बकरी है। गुलाब सिंह के

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



चित्त में भय नहीं था—वह उस पर वार करने के लिये अपनी तलवार म्यान से निकाल रहा था। उसने तलवार म्यान से निकाल कर ऊपर को उठाई और सामने को देखा। देखता क्या है कि वहां शेर नहीं है परन्तु उसके स्थान पर तेजसिंह खड़ा है। उसके मुँह में बकरी नहीं है-परन्तु पास ही कमला देवी खड़ी है। तेजसिंह अपनी बड़ी बड़ी आंखें उघाड़ कर गुलाब सिंह को डरा रहा है। गुलाब सिंह के हृदय में तेजसिंह की आंखें देखकर भय का संचार हो आया। उसके हाथ से तलवार छूट गई और आंखें नीची हो गईं। आंखें नीची होते ही उसके कान में भयानक चीख सुनाई दी। आंखें ऊपर उठा कर गुलाब सिंह ने देखा तो वहां तेजसिंह का पता नहीं। एक भयानक काले रंग का राक्षस, जिसका मुंह गुलाम कादिरके मुंह जैसा था, कमला देवी को कन्धे पर रखकर पहाड़से ऊपरको उड़ा जाता था। कमला देवी जोर जोर से चीखें मार रही थी। गुलाब सिंह का हृदय कांपने लगा। इतनेमें पहाड़ की चोटी पर कुछ आवाज सुनाई दी। गुलाब-सिंह ने देखा कि तेजसिंह और फूलसिंह राक्षस की ओर अपनी बन्दूकें खेंचे निशाना साध रहे हैं। चमक दिखाई दी और क्षण भर पीछे बन्दूक का गूंजता हुआ शब्द गुलाब सिंह के कानमें पड़ा, शब्द से वह चौंक उठा। उसकी नींद टूट गई। पर टूटते २ उसे ऐसा ख्याल हुआ मानो वह राक्षस कमला देवी को छोड़ कर गोली से बिंधा हुआ नीचे को गिर रहा है। और अधिक गुलाब सिंह नहीं देख सका।

नींद टूटने पर उसे विश्वास न हुआ कि वह जाग रहा है। वही बन्दूक का सा शब्द अब भी सुनाई दे रहा था। वह आंखें मल कर फिर जागने का प्रयत्न करने लगा, उसी समय एक धड़ाके का शब्द हुआ और गुलाब सिंह के सोने के कमरे का दरवाजा खुल गया। गुलाब सिंह उठ-कर चारपाई पर बैठने भी न पाया था कि खुले हुये दरवाजे से चार खड्ग धारी जवान घुस आये और उसकी चारपाई को घेर कर खड़े हो गये।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



उनमें से एक ने गुलाब सिंह की छाती को दबाया; दूसरे ने उसके हाथों को पकड़ कर बांधना प्रारम्भ किया, तीसरे ने उसकी टांगें बांधीं, चौथे ने उसके मुँह में कपड़ा ठूँस दिया। इस प्रकार गुलाब सिंह को अशक्त कर के उन्होंने उसे पलंग के साथ बांध दिया और स्वयं अपने कार्य में लग गये। गड़बड़ में गुलाब सिंह यह भी नहीं पहचानने पाया कि उसके बांधने वाले कौन हैं? घर में बिल्कुल अन्धेरा था।

गुलाब सिंह और कुछ भी न जान सका। उसे केवल इतना पता लगा कि वे लोग उसे बांध कर उस कमरे में घुस गये जिसमें घर की स्त्रियां सोती थीं। वहां से कुछ चिल्लाने का सा शब्द भी सुनाई दिया परन्तु वह शीघ्र ही रुक गया। ऐसा प्रतीत हुआ मानो चिल्लाने वाले व्यक्ति का मुँह बन्द कर दिया गया है! थोड़ी देर पीछे गुलाब सिंह को ऐसा प्रतीत हुआ जैसे वे लोग जो दूसरे कमरे में गये थे, उसके पास से हो कर घर के बाहर जा रहे हैं, उसे ऐसा भी ज्ञात हुआ कि मानों उन्होंने किवाड़ बन्द करके बाहर से सांकल लगा दी। आगे गुलाब सिंह को ज्ञात नहीं हो सका कि क्या हुआ।

थोड़ी देर में कुत्ते के भौंकने का शब्द हुआ। गुलाब सिंह का एक पड़ोसी अपने कुत्ते के भौंकने का कारण जानने के लिये घर से बाहर आया तो देखा कि गुलाबसिंह की बैठक के किवाड़ खुले पड़े हैं और ठीक दरवाजे से किसी के सिसकने की आवाज आ रही है। रोशनी ला कर देखने पर उसे जो कुछ दिखाई दिया, वह उस पर विश्वास न कर सका। गुलाब सिंह का विश्वासी नौकर भीमा खून में लथपथ बेहोश सा पड़ा हुआ कराह रहा है। उसके सिर में भयानक चोट लगी हुई थी और रुधिर की धारा अब तक वह रही थी। यह दृश्य देख कर उसने सहायता के लिये चिल्लाना प्रारम्भ किया। आन की आन में सारा गांव गुलाब सिंह के दरवाजे पर आ गया। अंदर का दरवाजा खोल कर गुलाब सिंह के बन्धन काटे गये और पूछा गया

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



तो वह कुछ भी न बता सका। जनाने में जाकर देखा तो कमला देवी की माता भी गुलाब सिंह की भांति पलंग से बँधी पड़ी थीं—और उसके पास ही कमला देवी का पलंग खाली पड़ा था।

# सातवां परिच्छेद

## तेज सिंह का दृढ़ संकल्प

जब चार आदमी गुलाब सिंह को बांध कर अन्दर चले गये, तब थोड़ी देर में उसे भली प्रकार चेतना आई। वह नींद से उठते ही अकस्मात पकड़ लिया गया था, पकड़े जाने के समय वह पूरी तरह सचेत भी न होने पाया था। पूरी तरह सचेतना आने पर उसका ध्यान अपनी और अपने घर की सारी दशा पर गया। चित्त में कोई संदेह ही न रहा। गुलाब सिंह का मन एक दम निश्चय पर पहुंच गया। तेजासिंह ने ही यह सारा उपद्रव किया है। फूलसिंह ने जो धमकी दी थी, उसका यही तात्पर्य था। दुष्टों ने पहले से डाका मारने का विचार कर रखा था। चारों बांधने वालों में से उसे एक का कद और डील डौल तेज सिंह का सा, और दूसरा फूल सिंह का सा, प्रतीत हुआ था। कोई संदेह न रहा। मन ही मन में गुलाब सिंह फूल सिंह को कुलद्रोही, कुलघातक और तेज सिंह को झूठा, नृशंस, डाकू आदि विशेषणों से विशेषित करने लगा। चारों डाकू किसी वस्तु को उठाकर चले गये। गुलाब सिंह के चित्त में दृढ़ धारणा हो गई कि अपनी धमकी के अनुसार तेज सिंह कमला देवी को उठा कर ले गया।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



बन्धन खुलने पर जब उसने देखा कि कमला देवी अपने पलंग पर नहीं है, तो उसके सब संदेह पक्के हो गये। कमला देवी की माता बेचारी बेहोश पड़ी थी। उसे कुछ भी ज्ञान न था। वह तो ज्यों ही दरवाजा खुलने की आहट पा कर उठी त्यों ही धर दबाई गई और बेहोश हो गई।

देखते देखते गुलाब सिंह के दरवाजे पर सारा गांव इकठ्ठा हो गया। पहले लोगों ने साधारण चोरी समझी—जब उन्हें ज्ञात हुआ कि गुलाब सिंह की कन्या चुराई गई है, तब तो उन लोगों के अचम्भे की सीमा न रही। क्या सुजानपुर से अब कन्यायें भी चोरी में जाने लगीं? यह तो गाँव पर बड़ा भारी धब्बा है। पर यह चोरी की किसने? कोई कहता "कन्याओं की चोरी करने के लिए बाहर के आदमी नहीं आया करते। यह तो कोई घर का भेदी है। कोई गांव का ही आदमी यह कार्य करके भाग गया है।" कोई कोई कहते हैं "नहीं भाई! हमारे गाँव में ये बातें संभव नहीं हैं। आज तक तो कभी किसी ने ऐसा बुरा काम किया नहीं था। हमारे गाँव का नाम अब तक निष्कंलक था। यह गांव वाले का काम नहीं है। हो न हो यह कोई बाहर वाला ही है।"

इस प्रकार कई प्रकार की बातें होने लगीं। जितने मुंह उतनी बातें करती हुई जनता इधर उधर घूमने लगी।

गांव के मुखिया लोग कोठी के चबूतरे पर जमा होकर क्या करना है, इस पर विचार करने लगे। एक आदमी सरकारी चौकी की ओर भेजा गया। उसने आकर उत्तर दिया कि चौकी में कोई भी आदमी नहीं है। एक बूढ़ा चपरासी बैठा है, वह कहता है कि सारे चौकी वाले कल शाम से बाहर चले गये हैं और अभी तक नहीं लौटे। तब निश्चय किया गया कि लुटेरों का जितना शीघ्र हो सके, स्वयं ही पीछा किया जाय। गुलाब सिंह बेचारा आपत्ति से ऐसा धक्का खा चुका था कि अभी तक इस विचार में संम्मिलित न हो सका था। उसे भी अंदर से बुलवाया गया।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



अंदर से आने पर गुलाबसिंह के आश्चर्य की सीमा न रही। वह अपनी आंखों पर विश्वास न कर सका। उन्हीं मुखिया लोगों के अन्दर तेजसिंह और फूलसिंह भी बैठे हुए उसके आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। गुलाब सिंह समझ गया कि ये धूर्त लोग कमला देवी को कहीं छुपा कर स्वयं भले मानस बनने के लिए यहीं आ बैठे हैं। वह उनका वहां होना न सह सका। उसका चिन्ता से ग्रस्त हृदय खुले शत्रुओं को निर्लज्जता से सामने आकर बैठे देख कर क्रोध के मारे जल उठा। चिन्ता और शोक से व्याकुल होकर गुलाब सिंह कुछ देर के लिये स्तब्ध सा खड़ा रह गया। उसे कुछ न सूझा।

गुलाबसिंह के बाहिर आते ही सारी सभा खड़ी हो गई। पंचायत के मुखिया लोग दुःखग्रस्त गुलाब सिंह से मिलने के लिए आगे बढ़े। दुःख और चिन्ता से उस मानी राजपूत का हृदय, पहले ही व्यथित था। तेजसिंह आदि के सामने खड़े होने से क्रोध की एक विशेष लहर उसके अन्दर उठी। लहर के वशीभूत होकर उसकी विवेक शक्ति कुछ देर के लिये लुप्त सी हो गई। सब लोग उसकी इस दशा को देख आश्चर्यचकित से हो गये।

गुलाब सिंह की यह दशा कुछ क्षणों तक ही रही, गर्मियों के बादल की भांति वह शीघ्र ही उड़ गई। गुलाब सिंह ने अपने आपको कुछ संभाला और कदम आगे बढ़ा कर तेजसिंह और फूलसिंह के सामने जा खड़ा हुआ। यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि इस डाके के समाचार ने सबसे अधिक व्यग्रता तेजसिंहके हृदय में पैदा की थी। वह न जाने वास्तविक और न जाने बनावटी चिन्ता से बहुत ही व्याकुल प्रतीत होता था। यों तो वह सारा माजरा सुन चुका था, पर कई बातों के रहस्य वह गुलाब सिंह से जानना चाहता था। जो लोग घर के अन्दर घुसे, वह किस जाति के प्रतीत होते थे, उनके वेष कैसे थे, उनके पास कौन से हथियार थे, वे कितने थे। इन सब प्रश्नों के उत्तरों से वह लुटेरों का कुछ सुराग लगाना चाहता था। वह और फूलसिंह

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



निश्चय करके आये थे कि थोड़ा बहुत सुराग लगते ही दोनों कमला देवी की खोज में निकल पड़ेंगे।

तेजसिंह, गुलाब सिंह के अपने प्रति द्वेषभाव को जानता था। उसे निश्चय था कि मानी गुलाब सिंह आपत्ति में भी उस वैमनस्य को भुलायेगा नहीं। इसलिये वह स्वयं आगे बढ़कर पूछने का साहस नहीं कर सकता था। उसने यही निश्चय किया था कि औरों से गुलाब सिंह जो बातें करेगा, उन्हें वह ध्यान से सुनेगा। गुलाब सिंह को एकदम सामने खड़ा देख कर तेज सिंह कुछ आश्चर्यचकित सा हो गया और प्रतीक्षा करने लगा कि देखें सामने से क्या चीज भेंट होती है—अमृत या विष? गुलाब सिंह को भारी आपत्ति ने कुछ नर्म कर दिया है या और भी अधिक भयंकर बना दिया है। लोहा तप कर नर्म हो जाता है—और घड़ा आवे में कठोर हो जाता है। तेज सिंह निश्चय न कर सका कि गुलाब सिंह लोहे का अनुकरण करेगा या घड़े का?

किन्तु तेजसिंह को अधिक देर तक प्रतीक्षा न करनी पड़ी। गुलाब सिंह की शक्ल देखकर वह और भी आश्चर्य में पड़ गया। उसके नथुने फूले हुए थे, होंठ फड़फड़ा रहे थे और आंखों से लहू बरस रहा था। वह साधारण रोष तो समझ सकता था—पर इतने अधिक गुस्से के चिन्हों को देखकर वह अचम्भे में पड़ गया। उसे और भी अधिक विस्मय हुआ, जब उसके कान में गुलाब सिंह के निम्न-लिखित कर्कश शब्द पड़े:—"चाण्डाल! तू अब यहां क्यों आया है? घर में आग लगाकर तमाशा देखने के लिये क्यों आ खड़ा हुआ है? मैं सब कुछ जानता हूँ—मुझ से कुछ छुपा हुआ नहीं है। इस प्रकार की चालाकियों से मैं धोखे में आने वाला नहीं हूँ। मैं राजपूती शपथ खाकर कहता हूँ कि यदि ध्यान सिंह के वंश का समूल नाश न कर दूंगा, तो महापातकी हूँगा, घोर नरक में पड़ूंगा, और अनन्त काल तक वहां से छुटकारा न पाऊँगा।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



ये शब्द उपस्थित जन समुदाय ने सुने, परन्तु कोई भी कुछ समझ न सका। सब ने यहीं समझा कि आकस्मिक विपत्ति ने गुलाब सिंह के दिमाग को बेठिकाने कर दिया है। तेज सिंह तो और भी अधिक विस्मित हुआ, उसने इन कर्कश शब्दों से न घबरा कर बड़ी शांति से उत्तर दिया—

"मैं आपका कुछ भी अभिप्राय नहीं समझ सका। आप इस दुर्घटना का भार मेरे ऊपर क्यों डालते हैं? मैं इससे उतना ही दुखित हूँ जितने आप। मैं यहां क्या करना है, यह विचार करने आया हूं, किसी बुरे भाव से नहीं। आप कृपया अपने चित्तको सम्हाल कर आये हुये सज्जनोंके साथ परामर्शमें सम्मिलित हूजिए।" तेज सिंह की शांति और गम्भीरता ने गुलाब सिंह की रोषाग्नि पर मानो घृत की आहुति डाल दी। ऐसा दुष्ट कार्य–और यह दम्भ! एक तो डाका डालना और फिर ऐसा माथा, गुलाब सिंह का हाथ अनायास ही कमर में पहुंच गया। परन्तु वहां तलवार नहीं थी, उसने और भी ऊंचे और कठोर स्वरमें कहा–"पापी तेज सिंह! तू समझता है कि मैं धोखे में आ जाऊंगा। मैं भली भांति जानता हूँ कि तूने और फूल सिंह ने मिलकर ही यह नारकीयों का कार्य किया है। तू मुझे धोखा नही दे सकता। दुष्ट! क्या करूं इस समय कमर में तलवार नहीं है, नहीं तो राजपूत कुल में कलंक लगाने वाले तुम दोनों का सिर इसी क्षण धड़से जुदा हो जाता।"

तेज सिंह धीर था, गम्भीर था। परन्तु धैर्य और गम्भीरता की कोई हद होती है। तलवार का नाम, और "राजपूत कुल पर कलंक" शब्द सुन कर तेजसिंह अधिक न सह सका। किन्तु अधिक बखेड़ा करना भी उस समय उसने उचित न समझा। इसलिए अपने रोष को दबाकर रूखे स्वर में उसने केवल इतना कहा—

"गुलाब सिंह! तुम मेरे पिता के हमउम्र हो—इसलिये मैं तुम्हें अपने चचा के समान समझता हूँ। शत्रु होने पर भी तुम मेरे बड़े हो। साथ ही एक और भी सम्बन्ध है, जिससे तुम मेरे पूज्य हो। इसलिये

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



तुम्हारे इन शब्दों को मैं क्षमा कर देता हूँ। इस जनसमुदाय के सन्मुख मैं केवल इतना कहना चाहता हूँ कि तुम्हारा भ्रम निर्मूल है। किस पापी ने ऐसा दुष्कार्य किया है, इसका मुझे कुछ भी ज्ञान नहीं। यदि मैं उस मनुष्य जाति के कलंक को पाऊँ तो उसका सिर धड़ से जुदा कर दूँ।"

इतना कह कर तेज सिंह गुलाब सिंह के उत्तर की प्रतीक्षा न करके बड़ी फुर्ती से उस स्थान को छोड़ कर चला गया। फूल सिंह भी उसके साथ ही बिदा हुआ।

दोनों मित्र वहां से हट कर कुछ दूर एक मंदिर की छाया में खड़े हुए और सलाह करने लगे कि क्या किया जाय? देर तक परामर्श करते रहे। अन्त में दोनों में से कोई निश्चय न कर सका कि डाका मारने वाला कौन था। परन्तु कुछ करना अवश्य चाहिये। गुलाब सिंह की मति ठिकाने नहीं है, वह कुछ भी नहीं सोच सकता। तब स्वयं ही कुछ करना होगा। तेज सिंह के मन में एक और भी भावना उत्पन्न हुई। यदि खोज करने पर उसने कमला देवी को ढूँढ़ निकाला तो उसे पाने का अधिकार भी बढ़ जायगा। सम्भव है, गुलाब सिंह अधिक आक्षेप न उठायेगा? विधाता की बात कौन जानता है? शायद वह कमला देवी को ऐसी दशा में ढूंढ़ निकाले कि गुलाब सिंह से पूछने की अपेक्षा ही न रहे। चन्दन और चमेली स्वयं ही मिल जांय। इन सब विचारों ने तेजसिंह के चित्त में उत्साह और साहस का संचार कर दिया। 'कार्यं वा साधयेयं, देहं वा पातयेयम' की दृढ़ प्रतिज्ञा करके वह सन्नद्ध हो गया।

देर तक विचार के पीछे निश्चय हुआ कि पूरे शस्त्रों से सुसज्जित होकर दोनों मित्र गांव की दोनों ओर चल दें। तेज सिंह को दिल्ली की ओर का मार्ग मिला और फूल सिंह को दूसरी ओर आगरे का। यह भी निश्चय हुआ कि यह खोज दो रातों तक जारी रखी जाय, और फिर दोनों मित्र अपने अपने कार्य की रिपोर्ट दें।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# आठवां परिच्छेद

## भाग दौड़

मध्यान्ह का समय था। सूर्य भगवान अपनी प्रखर किरणोंसे भूमंडल को तपा रहे थे। दिल्ली के आस पास के मैदानों में चैत्र बैसाख में भी धीमी धीमी लूहें चलती हैं, उसे वे लोग ही जानते हैं जो कभी उस ऐतिहासिक नगर के समीप रहे हैं। दोपहर का समय इस प्रदेश में सदा ही असह्य होता है। पृथ्वी ने धूप से कुछ गाढ़ी मित्रता सी बांध रखी है। असह्य ताप से तपे हुए मैदान में तेजसिंह इधर उधर देखता हुआ चला जा रहा है।

यमुना तट के साथ ही साथ तेजसिंह जा रहा है। किनारे के खेतों तथा झाड़ खण्डों को भली प्रकार देखता जाता है। किनारे के कहीं बिल्कुल पास और कहीं कुछ दूरी पर पक्की सड़क बनी हुई है। उस सड़क तक नजर दौड़ाकर राजपूत फिर आगे को पग बढ़ाता है। गांव और दिल्ली में कोई लम्बा चौड़ा अन्तर नहीं है। तेज सिंह जैसे युवक के लिए केवल एक दिन का मार्ग है, परन्तु चारों ओर देखभाल करनी आवश्यक थी। उसी में विलम्ब होता जाता था। यद्यपि अभी तक तेज सिंह को डाकुओं का कुछ पता न चला था, तो भी उसने कहीं २ ऐसे चिन्ह अवश्य देखे थे, जिनसे उसे संदेह होता था, कि हो न हो वहां से कोई घुड़सवारों का दस्ता आज ही अवश्य गया है।

घोड़ों के पैरों के निशानों को देखता हुआ वह आगे बढ़ता जा रहा था। पैरों की पंक्ति शहर की ओर गई थी। पहले उसने समझा था कि यह भी मान लिया जाय कि ये चिन्ह डाकुओं के घोड़ों के ही हैं तो वे धोखा देने के

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



लिए शायद कुछ दूर तक शहर की ओर को गये हों। किन्तु जब कई मील तक निरन्तर घोड़ों के पैरों के चिन्ह उसी ओर को चले गये तो उसे सन्देह होने लगा। क्या डाकू कभी सीधे राजधानी की ओर भी जा सकते हैं? यह असम्भव है। तेज सिंह ने सोचा कि झूठी लीक पकड़ी है, इतना श्रम व्यर्थ गया। उसी समय एक और विचार उठा। दिल्ली के बादशाह का दरबार उन दिनों विलास का आवास था। दरबार के उमराव-उमरा भोग विलास में ही जीवन की इति श्री समझते थे। हिन्दू धन को अपना माल और हिन्दू रमणी को अपनी कामचेरी मानना ही उनका धर्म कर्म था। तेज सिंह ने सोचा-यह असम्भव नहीं है कि उन्हीं कामदेव के दासों में से किसी का यह कार्य हो, तब तो राजधानी की ओर घुड़सवारों का जाना समझ में आ सकता है।

इसी प्रकार तर्क वितर्क करता हुआ तेज सिंह जा रहा था। एक ही विचार में मस्त हुआ, संसार की चिन्ता भूलाकर अपनी प्रियतमा की खोज का व्रत लिए हुए वह राजपूत युवा भूख, प्यास और नींद की अवहेलना करता हुआ पापी के पकड़ने को आगे बढ़ रहा था। प्रातः काल से तेज सिंह के होठों ने पानी भी नहीं छुआ था। जो लोग एक लगन में मस्त हैं, उन्हें फिर शरीर की क्या सुध रहती है। एक जबर्दस्त उमंग और उमंगों को खा जाती है। एक प्रबल भावना अन्य भावनाओं को स्वाहा कर देती है। अत्यन्त त्यागी और भोगी में यदि कुछ साम्य है तो यही कि वे दोनों ही अवान्तर विषयों को भुला कर एक ही पदार्थ की प्राप्ति में मस्त हो जाते हैं। एकाग्रता एक सौभाग्य है, जो किसी किसी पुण्यात्मा को ही मिलता है। भोग में एकाग्र होने वाले भी अपनी एकाग्रता का सुफल और पाप का बुरा फल प्राप्त करते हैं। तेज सिंह भी उसी एकाग्रता के सौभाग्य का पात्र बन रहा था। प्रेयसी की चिन्ता में लीन वह तपी हुई भूमि पर वेग से बढ़ता जा रहा था।

आगे नदी के किनारे पर एक घना झाड़ खण्ड था। सपाट मैदान के बीच थोड़ी सी जगह में बहुत सी झाड़ियां पेड़ों के साथ साथ अड़ी हुई

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



उस वन खण्ड को रूण्ड मुण्ड वृक्ष पर बने हुये घोंसले के समान बना रही थीं। यद्यपि यह क्षुद्र-वन विस्तार में अधिक न था, तो भी उसके वृक्षों की सघनता इतनी थी, कि उसमें एक मिनट पहले घुसे हुए व्यक्ति को भी पाना कठिन था। वृक्षों की डालियां एक दूसरे में अड़ी हुई थीं और जंगली झाड़ियां उनके बीचों बीच फैल कर पूरा पूरा गोरखधन्धा सा बना रहीं थीं! दृष्टि उस पर पड़ कर किनारे पर ही रह जाती थी।

दोपहर की धूप से तेज सिंह के प्राण खुश्क हो रहे थे। यद्यपि एक ही लगन ने सारा क्लेश भुला दिया था, तो भी व्यथा का अनुभव हो ही रहा था। उस जंगल का दृष्टिगोचर होना था कि उसके मन में अपनी अवस्था की झलक सी भासने लगी। उसे प्रतीत हुआ कि वह बहुत थका हुआ है। प्रभात से पहली बार ही उसे प्यास का भान हुआ। धूप भी बहुत गर्म लगने लगी। जिन जिन शत्रुओं ने अभी तक सिर दबाया हुआ था, उन्होंने एक दम सिर उठा कर तेजसिंह पर धावा किया। धूप असह्य जँचने लगी, प्यास के मारे कलेजा सूखने लगा और भूख भी सताने लगी। तेजसिंह शत्रुओं से पराभूत अवस्था में उस जंगल में जा पहुँचा।

उस समय तक तेजसिंह इधर उधर का बहुत सा स्थान ढूंढ़ चुका था। उसे कमला देवी का कोई चिन्ह न मिला। अब दिल्ली समीप थी। यह उसे असंभव सा प्रतीत होता था कि कोई लुटेरा एक अबला को चुरा कर राजधानी के इतना समीप चला आया हो। इसलिए उस ओर अधिक बढ़ने की उसकी इच्छा नहीं रही थी। तब उसने थोड़ी देर विश्राम कर लेना ही ठीक समझा।

किनारे के पास से जंगल में घुसने की एक पगडंडी थी, उससे तेजसिंह जंगल में घुस गया। धूप से तपे हुए पुरुष को घनी छाया में पहुँच कर जो आनन्द आता है—उसका वे लोग ही अनुभव कर सकते हैं, जिन्हें कभी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



सूर्य भगवान का सामना करने का अवसर मिला हो। मनुष्य उस समय वृक्ष की झीनी छाया को घर की घनी और शीतल छाया से कहीं अधिक सुखदायिनी समझता है। वहां तो फिर छाया भी बड़ी घनी थी। कई गुंजान झुरमुटों के नीचे तो इतना सख्त अंधेरा था कि तहखाने से प्रतीत होते थे। ऐसे ही एक तहखाने को ढूँढ़कर तेजसिंह ने अपनी टांगों पर रोक लगाई।

इधर उधर देख भालकर पहले उसने बैठने के योग्य स्थान चुना, वहां से कांटा लकड़ी हटाकर कुछ पत्ते इकट्ठे किये और उन्हें बिछा लिया। कोई दो चार मिनट सांस लेने के अनन्तर वह अपनी प्यास शांत करने के लिये यमुना के किनारे पर उतरा। यद्यपि उसने प्रभात से एक दाना भी मुँह में न डाला था तो भी इतनी देर हो जाने से भूख मर गई थी और यदि न भी मरी होती तो भी उसके पास भूख की निवृत्ति का साधन कोई नहीं था। पीछा करने की शीघ्रता में पेट पालने की सामग्री लाना सर्वथा भूल गया था। यमुना के तीर पर पहुँच कर हाथ मुँह और सिर धोने के पीछे तेजसिंह ने जलपान किया और फिर झुरमुट के नीचे तैयार की हुई पर्ण शय्या पर आकर लेट गया। थकावट और धूप के मारे आंखों में निद्रा भरी हुई थी। वह निद्रा का प्रभाव हृदय में जलती हुई आग को कुछ निर्बल कर रहा था। अभी तक कमला देवी नहीं मिली। न जाने कौन पिशाच उसका हरण करके ले गया है? उसकी क्या गति होगी? वह बेचारी कातर हरिणी के समान भीरु बाला क्रूर चीते को देखकर किस प्रकार भयभीत हो रही होगी? क्या उसे अब पा सकेंगे? क्या अब उससे निराश हो जांय? हाय! हमने पहले ही बलात्कार से उसे क्यों न छीन लिया?

इस प्रकार के विचार थे जो उस थके मांदे वीर के हृदय में बार बार उठ रहे थे।

थोड़ी देर तक ऐसे ही विचार तेजसिंह के मन पर आक्रमण करते रहे। धीरे २ उनमें विच्छेद होने लगा। पहले और दूसरे विचार के

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



बीच में नींद का झोंका आने लगा। थोड़ी ही देर में झोंकों के विच्छेद कम होने लगे। चिन्ता के विचार भी कुछ स्पष्ट होने लगे। जो केवल चिन्ता थी, वह कुछ सपना सा भासने लगा। सपने में ही वसन्त के दिन की सारी घटनायें एक २ करके आंखों के सामने से घूम गईं। कमला देवी की खोज, शाही सवारी का आना, उसी समय आंखों का मिलना, सवारी का खड़ा होना, ये सब दृश्य अस्पष्टता से हृदय पर से घूम गये। बायसकोप के पात्रोंकी तरह चुपचाप नाटक के सारे पात्र अपना २ रङ्ग दिखा गए। शृंखला टूट गई पर नाटक वही रहा। सबसे प्रथम वही पहला दिन याद आया। यमुना पर शुद्ध वायु का फांकना, करुणध्वनि का सुनना और कमला देवी का दलदल से बचाना, सब कुछ अस्पष्टता से सन्मुख आ गया। भेद थोड़ा ही रहा। यमुना के स्थान पर एक तालाब सा दिखाई दिया। दलदल के स्थान में एक कुँआ था और कमला देवी उसमें आधी ऊपर आधी नीचे लटक रही थी। ऐसे ही दृश्य देखते देखते तेजसिंह को गहरी नींद ने आ दबाया। संसार के दुःख हरने वाली निद्रादेवी ने तेजसिंह के भी दुःख कुछ देर के लिए हर लिये। तेजसिंह उस समय इस दुखःमय लोक में नहीं था– तब वह कहां था ?

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# नवां परिच्छेद

## षड्यन्त्र

तेजसिंह लगभग तीन घण्टे सोया। जब उसकी नींद कुछ कुछ खुली, तब उसे ऐसा भान होने लगा मानो वह अकेला नहीं है। उसके कान में किसी दूसरे व्यक्ति का शब्द पड़ रहा था। कोई दो पुरुष परस्पर बातें कर रहे थे। तेजसिंह वैसे ही लेटा लेटा बातचीत सुनने लगा। शब्द उस झुरसुट के दूसरी ओर से आ रहा था। बातचीत के लहजे से प्रतीत होता था कि बातचीत करने वाले दोनों व्यक्ति मुसलमान हैं। एक दूसरे से कह रहा था—

"देखो भाई मुराद! तुम्हें मेरी कसम, यह बात किसी से मत कहना। कहोगे तो गुलाम कादिर को अपना दुश्मन पाओगे। खुदा की कसम खाकर कहो कि किसी से नहीं कहोगे।"

मुराद बोला—

"नहीं जनाब! आप कोई फिक्र न करें। यह बात मुराद किसी से नहीं कहेगा। फौलाद की दीवार को छेद कर हवा निकल सकती है, मगर मुराद के दिल को छेदकर बात नहीं निकल सकती। आप किसी तरह की चिन्ता न करें। लेकिन एक बात का ख्याल रखिएगा। कल्याण सिंह बोलने में बड़ा मीठा है, लेकिन है पूरा शैतान। वह जब अड़ जाता है तब मारने मरने पर उतारू हो जाता है। अगर उसे आप की हरकत से कोई शक हो गया तो बड़ी गड़बड़ होगी।"

"तुम उसकी कोई चिन्ता मत करो। जरा उसे मेरे पास भेज दो—मैं उस से स्वयं निपट लूंगा। सारा काम ऐसे ढंग से किया जायगा—जिसमें

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



वह औरत भी हमारे कब्जे में रहे और कल्याण सिंह को भी शक न हो और तुम जरा होशियारी से पालकी की हिफाजत करना। लेकिन इधर से भी बेखबर न होना। जब मैं ऊंचे स्वर से 'खबरदार' कह कर पुकारूं, तब तुम झट सब सिपाहियों सहित हाजिर हो जाना।"

तेजसिंह को पता लगा कि किसी औरत को फंसाने का मामला है।

मुराद 'बहुत अच्छा' कह कर एक ओर को चला गया। तेजसिंह ने बहुत जानने की कोशिश की कि मुराद कहां गया और पालकी किधर खड़ी है लेकिन झाड़ियों के कारण न देख सका, देखने के उद्देश्य से हिलना जुलना पड़ता, और तेजसिंह अपने वहां होने की सूचना किसी को नहीं देना चाहता था। उसी प्रकार स्तब्ध दशा में लेटा हुआ वह कल्याण सिंह के आने की प्रतीक्षा करने लगा। थोड़ी ही देर में सूखे पत्तों के दबने और चर चर की आवाज से उसने पहिचान लिया कि कल्याण सिंह आ रहा है। कल्याण सिंह आकर पहिले बैठे हुए मुसलमान सिपाही के पास बैठ गया। तेजसिंह के कानों में इस प्रकार की बातचीत पड़ने लगी—

मुसलमान ने कहा—

"कल्याण सिंह! आप लोगों की हिम्मत और बहादुरी से हमने वह काम कर लिया, जिसके लिए हम सबको बादशाह सलामत से बहुत सा इनाम मिलने की उम्मीद है। इस काम में जितनी सहायता मुझे तुमसे मिली है, और किसी से नहीं मिली। तुम अगर कल रात उस दरबान का काम तमाम न करते तो हमारा रास्ता रुका ही रहता, अब काम पूरा हो गया। सांझ के समय, सूरज डूबते ही, हम लोग पालकी को किले में पहुँचा देंगे। लेकिन तुम्हारे लिए एक और भी काम है। काम मुश्किल है, उसे करना तुम्हारे जैसे जवांमर्द का ही काम है। हमारे और सब साथी तो पूरे पूरे उल्लू हैं—एक तुम ही समझदार और बहादुर हो।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



अगर इसी वक्त रवाना हो जाओ तो कल दोपहर तक काम करके लौट सकते हो। कहो क्या तुम इस जरूरी काम के लिए जाने को तैयार हो।"

"मीर साहिब! आप हमारे मालिक हैं—और इस समय आपका हुक्म ही हमें सिर माथे पर रखना चाहिये। किन्तु बादशाह सलामत की आज्ञा आपको और मुझे दोनों को माननीय है। वे हम दोनों के स्वामी हैं। उन्होंने मुझे यही आज्ञा दी थी कि मैं किले तक आपके साथ रहूँ। किले में पालकी पहुँचते ही मैं आपकी आज्ञानुसार जाने को तैयार हूँ। काम करना तो हम लोगों का पेशा ही है—किन्तु स्वामी की आज्ञा को मानना भी परम-धर्म है। मैं किले तक अवश्य पालकी के साथ रहूँगा।"

"देखो कल्याण सिंह! यह तुम्हारा व्यर्थ का हठ है। तुम इस समय मेरे मातहत हो। मैं बादशाह सलामत की खिदमत में अर्ज कर दूँगा कि कल्याण सिंह को मैं ही दूसरे काम पर भेज आया हूँ, तुम्हारे सिर पर किसी तरह का खतरा नहीं आयेगा। वक्त फजूल गँवाने से क्या फायदा? दूसरा काम भी, जहां मैं तुम्हें भेजना चाहता हूँ, बहुत जरूरी है। अब रास्ते में कोई डर भी नहीं। गांव वालों ने हमारा पीछा भी नहीं किया—अगर किया भी हो तो अब हम दो तीन घंटे में किले में ही पहुँच जावेंगे। गांव वाले यहां भी हमारा क्या बिगाड़ सकते हैं। पांच आदमी हमारे साथ हैं—फिर मुराद और मैं मिलकर दस दुश्मनों का सामना करने की ताकत रखते हैं। इसलिये हमारी कोई फिक्र न करो और काम पर जाने को तैयार हो जाओ। काम होने पर तुम्हें काफी इनाम मिलेगा।"

"नहीं जनाब ऐसा न होगा। हम राजपूत लोग इनाम के लिये काम नहीं करते। अपने स्वामी की आज्ञा का पालन करना ही हमारा धर्म है। मुझे यही आज्ञा है कि मैं किले तक आप के साथ रहूँ। इस आज्ञा को आप के कहने से भी मैं टाल नहीं सकता।"

थोड़ी देर तक तेजसिंह के कानों में कोई शब्द नहीं आया, फिर गुलाम कादिर कहने लगा—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



"कल्याण सिंह! तुम व्यर्थ का हठ मत करो। देखो! तुम मेरे अधीन काम करते हो, तुम्हारी घटती बढ़ती मेरे हाथों में है। इस लिये मेरा कहा न मानना तुम्हारे लिये बुरा होगा। मैं तुम्हें समझा कर कह रहा हूँ—और मीठा बोल कर समझाना चाहता हूँ—इस पर मत भूलो। मेरे अन्दर ताकत है कि मैं तुमसे अपनी आज्ञा मनवा लूँ।"

गुलाम कादिर का स्वर कुछ कठोर हो गया। वह फिर कहने लगा—

"अब मैं सीधी तरह पूछता हूं कि तुम मेरा हुक्म मानने के लिए तैयार हो या नहीं?"

बड़े नर्म परन्तु रूखे शब्दों में कल्याण सिंह ने जवाब दिया—

"मैं मालिक की आज्ञा को नहीं तोड़ सकता, आपका धमकाना या लालच देना व्यर्थ है। राजपूत कभी अपने निश्चय से नहीं हिला करते, आप मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। मैं एक राजपूत बाला को कभी मुसलमान सिपाहियों के हाथ में छोड़ कर नहीं जा सकता।"

तेजसिंह का माथा ठनका। गांव से रात को उड़ाना—और राजपूत बाला—ये दो बातें तेजसिंह के मन में संदेह पैदा करने के लिये पर्याप्त थीं, उसके दिल में आया कि हो न हो ये लोग अवश्य कमला देवी को ही चुराये हुए ले जा रहे हैं, किन्तु अभी निश्चय नहीं हुआ था।

आगे गुलाम कादिर ने जो कुछ कहा, उससे तेजसिंह का संदेह निवृत्त हो गया—

"तो तू हम लोगों पर पहरेदार है? इस हिमाकत की भी भला कोई हद है? मेरे साथ इस समय छः सिपाही हैं? तू मेरा कहना नहीं मानता—इसलिये मैं यहीं पर तुझे सजा दे सकता हूँ। उस राजपूत औरत को हम लोग सुजानपुर से यहां तक क्या इसलिये लाये हैं कि अपने घर में डालें? उसे किले में पहुँचाने के लिये तेरी पहरेदारी की क्या जरूरत है? अब भी समझ जा—नहीं तो तू पीछे पछतायगा।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



तेजसिंह का संदेह दूर हो गया और उसने अपनी कमर में बँधी हुई तलवार की मुट्ठी पर हाथ रख लिया। किन्तु पालकी के साथ गुलाम कादिर के सिवाय छः सिपाही थे। सात से एक का लड़ना मुश्किल था। फिर कल्याण सिंह से भी सहायता की आशा रखें तो भी दो की सात से लड़ाई विषम लड़ाई है। किन्तु और कोई चारा नहीं। अभी दो घण्टे में पालकी किले में पहुंच जायगी और मुसलमान बादशाहों के किले अनन्त खाई के समान थे, उनमें एक बार जो सुन्दरी गई, उसका कहीं ठौर ठिकाना न मिलता था। तेजसिंह ने यह तो निश्चय कर लिया कि जो कुछ भी करना है अभी करना चाहिये—इसके बिना काम न चलेगा। वह तलवार संभाल कर उठ बैठा। उसी समय जोर से चिल्ला कर गुलाम कादिर ने कहा—

"खबरदार! कल्याण सिंह! यहां से मत हिलना, नहीं तो तेरा सिर धड़ से अलग हो जायगा।"

एक मिनट में तेजसिंह झाड़ी फांद कर गुलाम कादिर के सामने बिजली की तरह जा चमका और कल्याण सिंह की ओर देख कर कहा—

"राजपूत भाई! मत घबराओ। मैं तुम्हारी सहायता के लिए तैयार हूँ।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# दसवां परिच्छेद

## दोनों ज़ख्मी

तेजसिंह के प्रवेश से युद्ध की रंगभूमि का नकशा ही बदल गया। एक ओर तीन और दूसरी ओर छः, एक और दो का अनुपात था। गुलाम कादिर स्वयं असाधारण बलवान पठान था। उसके सब साथी भी खूब लम्बे चौड़े और अनुभवी लड़ाकू पठान थे। दूसरी ओर केवल दो व्यक्ति थे। कल्याण सिंह को यह मालूम था कि मुराद गुलाम कादिर का नायब होता हुआ भी उसका विरोधी है। उससे यह आशा तो हो सकती थी कि वह उदासीन रहे परन्तु किसी क्रियात्मक सहायता की संभावना नहीं हो सकती थी। इस तरह लड़ने वाले दल संख्या में बहुत ही असमान थे। परन्तु यह तो सारी सोचने की बातें थीं, और सोचने के लिये वहां समय ही कहां था? वहां तो एक एक क्षण कीमती हो रहा था, तेजूसिंह के मैदान में आते ही तलवारें टकराने लगीं।

तेजसिंह ने एक दम गुलाम कादिर पर हमला कर दिया। रुहिल्ला भी बिल्कुल तैयार था। उसने इधर तेजसिंह के वार को रोका और उधर अपने आदमियों से ललकार कर कहा, "तुम लोग कल्याण सिंह को सम्भालो, बचकर जाने न पाए, मार कर टुकड़े टुकड़े कर दो। मैं इसे सम्हालता हूं।"

तेजसिंह और गुलाम कदिर की तलवार की लड़ाई में बराबर की टक्कर थी। कुछ समय तक दोनों प्रहार और बचाव की बराबर की लड़ाई लड़ते रहे। बाकी के सब सिपाहियों में एक गोलमाल पैदा हो गया। यह हम देख चुके हैं, कि मुराद गुलाम कादिर का छुपा हुआ दुश्मन था। जिस पद पर अब गुलाम कादिर था मुराद देर से उसका उम्मीदवार था। गुलाम कादिर नौकरी में पीछे से आया, परन्तु कुछ तो एक मशहूर सिपाही का बेटा होने

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



के कारण और कुछ अपने डील डौल के कारण शीघ्र ही ऊँचे पद पर पहुँच गया। जिससे मुराद की आशाओं पर पानी फिर गया और वह नायब का नायब ही रह गया। वह गुलाम कादिर से जलता था और ऐसे मौके की तलाश में था कि जब इस "पठान छोकरे" से बदला ले सके। वह मौका आया देख कर मुराद ने गुलाम कादिर के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। उसने शेष मुसलमान सिपाहियों को डाट कर कहा—"खबरदार! तुम लोग इस लड़ाई में मत पड़ना, गुलाम कादिर ने बादशाह से बगावत की है। तुम लोग इसका साथ मत दो।" गुलाम कादिर के कानों में भी यह आवाज पड़ी, उसने तेजसिंह से लड़ते ही लड़ते सिपाहियों को ललकार कर कहा—"यह मुराद, गद्दार हो गया है, यह पठानों का दुश्मन है, इसकी बात मत मानो और इसे भी जहन्नुम रसीद करो।" इस वाक्य से पठान सिपाहियों का पठानी जोश उमड़ पड़ा और वह कल्याण सिंह और मुराद दोनों पर टूट पड़े। पठान पांच थे और वह दो। यह विषम लड़ाई देर तक न चल सकी और पठानों की जीत हो जाती, यदि एक नयी परिस्थिति न पैदा हो गई होती।

कुछ देर तक तो तेजसिंह और गुलाम कादिर में बराबर की लड़ाई होती रही। गुलाम कादिर शरीर का भारी था और तेजसिंह हल्का। तेजसिंह तलवार चलाने में अधिक फुर्तीला था। धीरे धीरे गुलाम कादिर ढीला पड़ने लगा। उसके शरीर पर कई गहरे घाव लग गये। घाव तो तेजसिंह के शरीर पर भी कई लगे, परन्तु वह इतने भारी नहीं थे कि उसका हाथ कमजोर हो जाता। जब गुलाम कादिर ने अनुभव कर लिया कि वह कमजोर पड़ रहा है तो उसने सिपाहियों को मदद के लिए पुकारा—"अरे! यह काफिर मुझे मार रहा है। इधर आओ।" इस पर दो पठान कल्याण सिंह और मुराद को छोड़कर तेजसिंह पर झपट पड़े और पीछे से जाकर तेजसिंह के सिर पर वार किया। तलवार सिर के अन्दर तो नहीं घुसी, परन्तु साफे पर इस जोर से पड़ी कि तेजसिंह का सिर भिन्ना गया और

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



वह गुलाम् कादिर पर एक जबरदस्त वार करने के बाद बेहोश होकर गिर पड़ा। सिपाही का वार तेजसिंह के सिर पर उस समय पड़ा जब उसकी तलवार गुलाम कादिर को बुरी तरह घायल कर चुकी थी। परिणाम यह हुआ कि दोनों लड़ाके लगभग एक ही समय में जमीन पर गिर पड़े- तेजसिंह बेहोश होकर और गुलाम कादिर गहरी चोट खाकर।

पठान सिपाहियों ने जब देखा कि गुलाम कादिर गिर गया है। तो लड़ना फजूल समझ कर वहां से भाग निकले। रणक्षेत्र में केवल दो आदमी रह गये, मुराद और कल्याण सिंह। वह दोनों गुलाम कादिर के पास आये तो देखा कि वह अपनी छाती के घाव को दबाये भूमि पर पड़ा कराह रहा है। गुलाम कादिर उस समय अर्ध चेतन दशा में था। मुराद और कल्याण सिंह ने कुछ देर तक इतिकर्तव्यता पर विचार कर के निश्चयं किया कि गुलाम कादिर को बांध कर बादशाह के सामने पेश करना चाहिये और सब समाचार भी सुना देने चाहिये, ताकि वह लोग गुलाम कादिर से लड़ने या उसकी हत्या के अपराधी न बनाये जा सकें। मुराद जाकर घोड़े के बांधनें की रस्सी खोल लाया और उससे गुलाम कादिर को खूब कस कर बांध दिया। इस डर से कि रक्त अधिक बहने से कहीं दिल्ली पहुंचने से पूर्व ही वह मर न जाए—दोनों ने मिलकर सिपाहियाना ढंग पर उसकी मरहम पट्टी भी कर दी।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# ग्यारहवां परिच्छेद

## कमला देवी कहां गई?

गुलाम कादिर से निबट कर कल्याण सिंह और मुराद तेजसिंह की ओर झुके। वह बिलकुल बेहोश हो गया था। बगल से अब तक लहू जारी था। चोटों की जितनी चिकित्सा एक सिपाही को जाननी चाहिए थी, वह कल्याण सिंह को आती थी। उसने खूब दबाकर घाव को बांध दिया जिससे लहू रुक गया। अब वहां से चलने का विचार होने लगा। कल्याण सिंह को एक दम पालकी की सुधि आई। लड़ाई की धुन में सब लोग पालकी को भूल ही गये थे। उसके पास कोई भी न रहा। दर्याफ्त करने पर सब सिपाही एक दूसरे का मुंह ताकने लगे। वह लड़ाई झगड़े की आवाज सुन कर भाग आये थे और डोली की रक्षा का प्रबन्ध भूल गए थे। बातचीत में व्यर्थ समय खोना उचित न समझ कर कल्याण सिंह मुराद और सब सिपाही उसी ओर को लपके जिधर डोली रखी हुई थी। वह स्थान दूर नहीं था। केवल तीन चार झाड़ियां बीच में पड़ती थीं। वहां जाकर जो कुछ देखा, उससे वह लोग अवाक रह गए। कहार भाग गए थे, डोली का पर्दा हटा हुआ था, और कमला देवी नदारद थी। उस दोपहर की कड़कती धूप में, इस बीयाबान जंगल में, उन कटीली झाड़ियों में, वह कोमलांगी अबला कहां गुम हो गई?

जिस समय रात को घर से कमला देवी का बलात्कार से हरण हुआ, वह मूर्छित सी दशा में थी। जब उसे पालकी पर रख कर सिपाहियों के कन्धों पर धरा गया, तब भी उसे कुछ चेतना नहीं थी, जब पीछा करने वालों को भ्रम में डालने के लिये पालकी वाले शहर के इर्द गिर्द चक्कर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



काटते रहे, तब तक भी उसे कुछ सुध-बुध नहीं थी। वायु के प्राभातिक झकोरों ने दवा का काम किया। जब वह सचेत हुई तब पालकी उजाड़ मैदान में से हो कर दिल्ली की ओर को जा रही थी। कुछ देर तक तो वह निश्चय न कर सकी कि वह कहां है। पालकी के दोनों दरवाजों पर मोटे मोटे पर्दे पड़े हुए थे। उनके किनारों से कभी कभी कोई सूर्य की किरण या हवा की लपट अंदर आ घुसती थी। उन्होंने भी यह जानने में कोई मदद न दी कि वह कहां है और किस के वश में है? थोड़ी देर बाद पालकी उठाने वालों में परस्पर बातचीत होने लगी। इस बातचीत से उसे केवल इतना मालूम हुआ कि कोई गुलाम कादिर नाम का सरदार उसे चुरा लाया है, और दिल्ली ले जायगा। कमला देवी साधारण स्त्रियों की सी भीरु नहीं थी। परन्तु अपने आपको एक मुसलमान के वश में पाकर वह भी कांप उठी। वह अधीर हो भगवान का स्मरण करने लगी। थोड़ी देर पीछे पालकी के पास दो नये स्वर सुनाई देने लगे, और घोड़ों की टाप भी सुनाई दी। बातचीत से मालूम होता था कि उनमें से एक मुसलमान है और दूसरा हिन्दू। हिन्दू के बोलने के ढंग से मालूम देता था कि वह मुसलमान के आधीन है, और मुसलमान उसका सरदार है। उनकी बात चीत से कमला देवी ने इतना और मालूम कर लिया कि उसकी पालकी बादशाह के हरम में पहुँचाई जायगी। बादशाह का हरम उस समय हिन्दू स्त्रियों के लिये श्मशान भूमि से कहीं अधिक भयानक था। कमला देवी कांप उठीं, "हे भगवान! क्या सचमुच मुझे जीते जी धर्म भ्रष्ट हो कब्रिस्तान में जाना पड़ेगा?" उसे यही चिन्ता होने लगी।

प्रभात हुये लगभग तीन घण्टे व्यतीत हुये होंगे कि पालकी वालों ने पालकी उतार कर नीचे रख दी। पालकी का एक पर्दा उठा और एक बांके राजपूत का चेहरा दिखाई दिया। पहले तो कमला देवी चिंहुक उठी, परन्तु जरा ध्यान से देखने पर न जान

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



उस राजपूत के चेहरे पर क्या चीज दिखाई दी कि राजपूतनी के दिल में ढाढस सा बंध गया। राजपूत ने दबे स्वर से कहा—

"बेटी ! मैं राजपूत हूं। मेरी उम्र तुम्हारे बाप के बराबर है। तुम मुझसे भय मत करो।"

कमला देवी ने कुछ साहस कर के बहुत धीमे स्वर से कहा—"मैं तुम्हारी शरणागत हूं। अब मेरी रक्षा करो।"

राजपूत मुँह पर अँगुली रख कर और अधिक धीमे स्वर से बोला—"शरणागत की रक्षा राजपूत का धर्म है।" फिर ऊँचे स्वर से कहा—"लो यह खाने की सामग्री है। इसे खाकर पानी पी लेना।" यह कह कर कपड़े में बँधा हुआ कुछ भोजन का सामान और लोटे में पानी, पालकी के अन्दर रख गया। उसी समय कमला देवी ने बाहिर को झांका तो देखा कि थोड़ी दूर पर एक शानदार मुसलमान घुड़सवार खड़ा है, जो बड़े ध्यान से पालकी के अन्दर दृष्टि गाड़े देख रहा है। कमला देवी ने झपट कर पालकी का पर्दा गिरा दिया। परन्तु ग़ुलाम क़ादिर के दिल का पर्दा न गिरा। कमलादेवी की सूरत ने उस पर जो असर किया, उसे सँभालने में वह असमर्थता अनुभव करने लगा। एक बार तो उसने सोचा कि फिर से पर्दा उठा कर पालकी के अन्दर बैठी हुई दिव्य मूर्ति के दर्शन कर लूँ, परन्तु बादशाह के डर ने हाथों को बांध दिया। गुलाम कादिर ने एक लम्बी साँस ली, और मुँह से बड़ बड़ा कर कहा—"काश कि मैं गुलाम न होता।" पठान की उग्र तबियत में ज्वाला उत्पन्न हो गई। एक नया मंसूबा बाँधने लगा।

थोड़ी देर पीछे कहारों ने पालकी को फिर कन्धों पर उठाया। ज्यों ज्यों पालकी आगे चलती थी, कमला देवी को दिल्ली का नरक सामने आता दिखाई देता था। वह कभी हाथ जोड़ कर भगवान से प्रार्थना करते

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



लगती, कभी दो चार आंसू गिरा देती, और कभी मन ही मन विचारने लगती । उसकी विचार धारा इस प्रकार प्रवाहित होती थी—

"इसका परिणाम क्या होगा ? क्या सचमुच ही मुझे मुसलमानों के वश जाना पड़ेगा । पड़ेगा क्या, मैं तो उनके वश में आ ही गई हूँ । छूटने का उपाय कोई भी नहीं दीखता । इन छः सात मुस्टण्डों के हाथ से छूटना आसान नहीं । तब क्या होगा ? मुसलमान के शरीर के स्पर्श से मुझे पातक, महा पातक लगेगा । इस जीवित शरीर को तो मुसलमान का हाथ न छू सकेगा । मुसलमान मुझे स्पर्श करें, इससे पहले तो मर जाना अच्छा है, और वे—क्या वे मेरे उद्धार का कोई यत्न न करेंगे? हाय, वे क्या करेंगे? उन्हें तो मालूम भी नहीं कि मैं कहां गई हूँ ? — वे क्या सोचते होंगे ? परन्तु मैं उनकी कौन हूँ ? वह मेरी बात क्यों सोचेंगे ? उन्हें मेरा ध्यान भी नहीं है । मैं ही मूर्ख उन पर मर रही हूँ । परन्तु फिर फूलसिंह ने आकर प्रस्ताव क्यों उठाया ? वह तो उनका परम स्नेही है । नहीं, मेरा अविश्वास निराधार है, वह भी मुझे चाहते हैं । परन्तु अब चाहने न चाहने से क्या होता है । अब तो मृत्यु के सिवा कोई चारा नहीं । मैं मरूँगी—तो क्या वह मेरे लिए दो आंसू बहायेंगे ? नहीं, वह मेरे लिए आंसू क्यों बहायेंगे ? उन्हें क्या मालूम कि मैं मर रही हूँ । वह तो समझेंगे मैं पाप के गढ़े में जा गिरी हूं ।"

इस तरह विचार करते २ कमला देवी का जी भर आया और वह फूट फूट कर रोने लगी । कमला देवी रो रही थी और कहार चले जा रहे थे । दिल्ली समीप आ रही थी और राजपूत बाला को नरक का द्वार समीप आता दिखाई देता था । दुनियां अपनी चाल से चली जाती है, पुरुष और स्त्री, बालक और वृद्ध उसे अपनी दृष्टि से देखने की कोशिश करते हैं, परन्तु वह किसी की ओर नहीं देखती ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## ग्यारहवां परिच्छेद

न जाने कमला देवी की यह शृंखली कहां तक चलती और वह कितना रोती, यदि पालकी वाले पालकी को नीचे न रख देते। जब पालकी जंगल में रख दी गई तो कमला देवी की उत्सुकता अधिक बढ़ी। वह दिल्ली की दूरी से परिचित नहीं थी। वह सोचने लगी कि क्या सचमुच दिल्ली आ गई। दिल्ली का डर उसके हृदय में इतना छाया हुआ था कि उसे तनिक पर्दा उठा कर झांकने की हिम्मत नहीं होती थी। उसने पर्दे को और भी अधिक फैला दिया, ताकि बाहर की कोई वस्तु दिखाई न दे सके। थोड़ी देर में किसी ने पर्दे को हिलाया। कमला देवी चौंक उठी। पर्दे को एक ओर करके उसी राजपूत ने फिर अपना मुँह सामने किया और पूछा कि 'कुछ चाहिये तो नहीं।' कमला देवी के चित्त में आया कि इससे यह तो पूछूँ कि 'आखिर मेरी सहायता करने का समय कब आयेगा।' कल्याण सिंह ताड़ गया और मुँह पर अँगुली रख कर चुप रहने का इशारा किया। इशारा बहुत पक्का था। कमला देवी मन मारकर चुप हो रही। केवल सिर हिला कर कह दिया कि मुझे कुछ नहीं चाहिये। यह देखकर उसे संतोष हुआ कि उसकी डोली जंगल में रखी गई है, दिल्ली में नहीं। कल्याण सिंह पर्दा गिरा कर चला गया।

बहुत देर तक सन्नाटा रहा। फिर कुछ ऐसा अनुभव होने लगा कि सिपाहियों में किसी प्रकार की घबराहट है। सिपाहियों की घबराहट से कमला देवी ने यह भी अनुमान लगाया कि किसी प्रकार के झगड़े का अन्देशा है। परन्तु पालकी के बन्द होने के कारण स्पष्टता से कुछ भी मालूम न हुआ। कुछ देर पीछे कमला देवी को लोगों के भागने की आहट सुनाई दी। कमला देवी का दिल कहने लगा कि हो न हो यह सब उसी राजपूत की करतूत है जिसने मुझे सहायता देने का बचन दिया था। भागने की आहट बन्द हुई तो साहस करके कमला देवी ने पर्दे का एक किनारा उठाया। उसे कोई भी दिखाई न दिया, तब उसने पर्दे को अच्छी तरह हटा कर और बाहिर मुंह निकाल कर देखा तो आसपास सुनसान

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



था। परन्तु कुछ दूर से लोगों की घबराहट भरी, बातचीत का शब्द स्पष्ट रूप से आ रहा था। कहार भी मौका देखकर भाग निकले थे। कमला देवी को सुअवसर मिला। वह झटपट बाहिर निकल आई और भागने का मंसूबा बांधने लगी। कहां जाऊंगी— विचारने का समय नहीं था। किधर जाऊंगी—बस इतना ही विचार हो सकता था। जिधर से शब्द आ रहा था, उससे दूसरी ओर को भागने का निश्चय करके कमला देवी उस कंटीले जंगल की झाड़ियों में घुस गई। कांटों और झाड़ियों की परवाह न करके वह वेग से भागने लगी। इतने वेग से वह जीवन में कभी न भागी होगी। थोड़ी दूर जाकर जंगल समाप्त हो गया और उसकी दृष्टि यमुना मय्या के शीतल जल पर पड़ी। जिस आनन्द का कमला देवी ने अनुभव किया उसे शब्दों में नहीं कहा जा सकता, कल्पना ही की जा सकती है। वह यमुना तट की निवासनी थी। बचपन से ही उसे यमुना को 'मैय्या' कहना सिखाया गया था। वह सहेलियों के साथ घंटों तक 'मैय्या' की छाती पर खेलती रहती थी। तैरने का उसे अच्छा अभ्यास था। यमुना के जल को देखकर उसने ऐसा अनुभव किया मानों कोई अभेद्य दुर्ग दिखाई दे गया। वह पूरे वेग के साथ नदी की ओर भागी और किनारे पर पहुँचते ही जल में कूद गई।

सिपाहियों ने लौट कर पालकी को खाली और कहारों को नदारद पाया। अकेली हिन्दू बाला भाग सकती है, यह तो उनकी समझ में आ ही नहीं सकता था। उन्होंने यही कल्पना की कि मौका पाकर कहार ही उसे ले भागे हैं। कहार या तो शहर की ओर जा सकते हैं, जो संभव प्रतीत नहीं होता और या वह गांव की ओर गये होंगे। कुछ देर तक क्या करना चाहिये इस पर विचार होता रहा। कल्याण सिंह और मुराद पर मानो बज्र पड़ा। इधर गुलाम कादिर से बिगड़ी, उधर चड़िया हाथ से उड़ गई। 'बादशाह की क्रोधाग्नि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



प्रचण्ड हो उठेगी। इधर की तो बिगड़ ही गई, उधर की भी नहीं बनी। बहुत कुछ सलाह मशविरे के बाद तीन पार्टियां बनाई गईं। दो सिपाही गांव की ओर भेजे गये, दो सिपाही जंगल में तलाश करने के लिये रवाना किये गये और कल्याण सिंह तथा मुराद दो सिपाहियों को साथ लेकर गुलाम कादिर को लादे राजधानी की ओर लपके। बादशाह की कठोर आज्ञा थी कि रात से पहले शिकार को महल में पहुंचाया जाय। इधर यह आफत आ गई। बेचारे सिपाही अपने कर्मों को कोसते और कहारों पर दांत पीसते हुये ढलती धूप में दिल्ली की ओर चले जा रहे थे।

उधर कमला देवी को गोद में लिये यमुना मैया संगम की ओर चली जा रही थीं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# बारहवां परिच्छेद

## बादशाह का कोप

रात के दस बजे होंगे। यह समय सामान्य नहीं है। यदि मनुष्य के अन्तरात्मा को समझना हो तो उसका इस समय में अनुशीलन करो। यदि किसी पुरुष की आदतों की परीक्षा लेनी हो, तो भी इसी समय मिलने जाओ। एक दूकानदार आप को बही के पन्नों पर आख गड़ाता हुआ मिलेगा, धर्मात्मा पुरुष को आप शयन से पूर्व प्रभु का ध्यान करते पायेंगे, साधारण गृहस्थ शायद उस समय भोजन करता हुआ मिले और विलासी पुरुष अपनी वासना की तृप्ति के सामान इकट्ठा करता हुआ मिलेगा। दो ही समय में मनुष्य की परीक्षा हो सकती है। रात को शयन से पूर्व, या प्रातः काल उठने के पश्चात। ये समय मनुष्य के मन की गहराई तक पहुँच जाते हैं।

भारत की राजधानी दिल्ली उन दिनों भोग और विलास की पुरी थी। दसों दिशाओं का ऐश्वर्य मानों वहां आकर एकत्र हो गया था। शाहजहानाबाद की शहरपनाह की गोद में साक्षात् लक्ष्मी का निवास था। उस समय के शासक भी भोग विलास के पुतले थे। बाबर और शाह आलम में वही भेद था, जो एक साम्राज्य के निर्माता और साम्राज्य के विनाशक में होता है। वह इन्द्रियों का स्वामी था, और यह इन्द्रियों का दास था। यदि किसी को लेखक का विश्वास न हो तो वह उसके साथ लाल किले की चार दीवारी के अन्दर चले और वहां उस समय के मुगल सम्राट शहन्शाह शाह आलम की अवस्था को देखे।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## बारहवां परिच्छेद

लाल किले के पूर्व दक्षिण के कोने में एक गुप्त कमरा है। वहां आम दरबारियों की तो क्या, खास दरबारियों तक की पहुँच नहीं है। कमरा छोटा है, परन्तु सजावट बढ़िया है। बेश कीमती पर्दों और गलीचों ने दीवारों और फर्श को सुन्दर बना रखा है। दो तीन गद्देदार चौकियां रखी हैं, जिनमें से एक पर इस समय स्वयं शाह आलम विराजमान हैं। शाह आलम की अवस्था इस समय ढल चुकी थी, परन्तु अभी बुढ़ापा नहीं आया था। अंधे शाह आलम का जो चित्र बाजारों में मिलता है, वह उसके असली रूप को नहीं दिखाता। जवानी में वह सुंदर था, यद्यपि उसकी सुन्दरता में स्त्रियों की सी कोमलता अधिक पाई जाती थी। दाढ़ी के बाल पकने आरम्भ हो गए थे, परन्तु पके हुए बालों की संख्या अधिक नहीं थी।

शाह आलम के चेहरे से उत्सुकता और खिजलाहट झलक रही थी। वह रह रह कर दरवाजे की ओर देख रहा था, मानो किसी की प्रतीक्षा कर रहा है। बीच बीच में खड़ा हो जाता था और दो एक कदम टहल कर बड़बड़ाने लगता था। फिर बैठकर दरवाजे की ओर देखने लगता था। दरवाजा बंद था, बाहर चोबदार खड़ा था। शाह आलम ने कई बार चाहा कि चोबदार को बुलाकर कुछ पूछे, परन्तु फिर न जाने क्या सोचकर चुप रह गया। उसकी सूरत देखकर प्रतीत होता था कि उसे प्रतीक्षा करते बहुत देर हो गई है। पेचदार सुनहरा हुक्का सामने धरा था, परन्तु पीने की सुध किसे ? बेचारा शाहआलम संसार में सबसे मीठी और सबसे कड़वी वस्तु–प्रतीक्षा द्वारा सताया जाकर अधीर हो उठा और हुक्के को एक जोर का धक्का देकर उठने को ही था कि चोबदार ने अन्दर घुस कर सलाम किया। बादशाह का ढाढ़स बँधा। वह बैठ गया और चोबदार की ओर देखने लगा। शाह आलम की सूरत में उस समय न जाने चोबदार को क्या दिखाई दिया कि उसकी जीभ बँध गई। वह डर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



कर चुप का पचु खड़ा रह गया। शाह अधीर हो उठा और झुंझला कर बोला-"अबे पत्थर सा क्या खड़ा है, बोलता क्यों नहीं ? क्या पालकी आ गई ?"

चोबदार ने डरते डरते, कांपते स्वर से कहा—"जहां पनाह! पालकी तो नहीं आई। दरवाजे पर दारोगा सर्फे खास खड़े हैं और हाजिर होने की इजाजत मांगते हैं।"

जहां पनाह इस समय दूसरी ही धुन में थे। माथे पर त्योरी चढ़ा कर बोले—"इस वक्त हम किसी से नहीं मिल सकते। मंजूर अली से कह दो वह हमसे कल मिले।"

दरवान–"जी हुजूर" कह कर चला गाया। शाह आलम कुछ बुड़बुड़ाता हुआ तकिये पर पीठ लगाने लगा कि दरबान ने फिर आकर सलाम किया। शाह आलम उचक कर खड़ा हो गया और बोला–"क्या पालकी आ गई ?"

दरबान ने डरते डरते कहा–"नहीं जहांपनाह, दरोगा सर्फे खास अर्ज करते हैं कि हुजूर ने अभी अभी मुझे बुलवा भेजा था, अगर हुकुम हो तो मैं हाजिर हो जाऊँ, नहीं तो कल हाजिर हो जाऊँगा।"

अब याद आया। अभी दस मिनट पहले मंजूर अली को बुलाने को आदमी भेजा गया था। पर बादशाह की मानसिक दशा ऐसी थी कि भूल गये। अब याद आने पर कुछ शर्म आई, परन्तु शर्म को बनावटी क्रोध से दबा कर दरबान को दो चार गालियां दीं और फरमाया कि "वह बदमाश कब टलने वाला है, अन्दर आये विना चैन न लेगा। अच्छा उसे भेज दो।"

मंजूर अली ने आकर दरबारी सलाम की और एक बिना गद्दे की चौकी पर बैठ गया। शाह आलम की आंखें दरवाजे की ओर लगी हुई थीं। उनमें शराब का नशा स्पष्टता से झलक रहा था। मंजूर अली की ओर देखे बिना ही बादशाह ने कहा-मंजूर अली! अभी तक भी गुलाम कादिर उस औरत

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



को लेकर नहीं आया, तुम हमेशा उसकी तारीफ किया करते हो, पर देखता हूँ कि वह बड़ा सुस्त है। न जाने कितनी देर तक इन्तिजार करवायेगा।"

मंजूर अली ने झुककर खुशामदाना लहजे में जवाब दिया—"जहांपनाह! मालूम होता है कि कोई खास रुकावट पैदा हो गई है। नहीं तो गुलाम कादिर रुकने वाला आदमी नहीं है। मेरा दिल कहता है कि वह कहीं किले के आस ही पास है।"

इसके उत्तर में शाह आलम कुछ गुर्राया जो मंजूर अली ने भी नहीं सुना। फिर सन्नाटा हो गया। कोई कुछ भी न बोला। शाह आलम दरवाजे की ओर देखता रहा और मंजूर अली शाह आलम की ओर।

कुछ देर पीछे दरवाजे पर पैरों की आहट सुनाई दी। शाह आलम चौंक कर उठा और मंजूर अली उठकर दरवाजे की ओर बढ़ा। दरबान ने अन्दर आ सलाम कर निवेदन किया कि "जहांपनाह! कल्याण सिंह दरवाजे पर हाजिर है।"

क्रोध के चिन्ह दिखाते हुए शाह आलम ने कहा—"अबे क्या गुलाम कादिर मर गया है जो कल्याण सिंह की खबर देता है। बाहर जाकर फौरन गुलाम कादिर को अंदर भेज दे और हां क्या दरवाजे पर कोई पालकी भी है?"

दरबान ने कहा—"हां हुजूर एक पालकी भी है।" इतना कहकर उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही गुलाम कादिर को बुलाने बाहर चला गया। इधर डोली का समाचार सुनकर शाह आलम के मुँह पर मुस्कान दिखाई दी। मंजूरअली भी मौका पाकर खुशामदाना ढंग से मुस्कराने लगा। दोनों गुलाम कादिर की प्रतीक्षा करने लगे।

प्रतीक्षा का क्षण भी बीत गया। दरबान ने झुक कर फिर सलाम किया और डरते २ कहा कि "हुजूर कल्याण सिंह अर्ज करता है कि गुलाम कादिर कैदी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



है। वह कैदी की हालत में हुजूर के सामने पेश किया जायगा। कल्याण सिंह खिदमत में हाजिर होकर सारा माजरा बयान करने की इजाजत चाहता है।"

गुलाम कादिर कैदी, यह बात शाह आलम की समझ में न आई—मंजूर अली तो स्तम्भित रह गया। यह क्या झमेला है ? दोनों ने एक दूसरे को आश्चर्य की दृष्टि से देखा। दोनों की दृष्टि में आश्चर्य विक्षोभ और घबराहट के निशान दिखाई दे रहे थे। शाह आलमने कड़कती हुई आवाज से कहा—अरे खड़ा २ क्या देखता है, क्यों नहीं कल्याण सिंह को हाजिर करता।"

दूसरे क्षण ही कल्याण सिंह ने झुक कर सलाम किया।

आगे चलने से पूर्व यहां पर गुलाम कादिर और मंजूर अली के संबन्ध में दो शब्द लिख देने आवश्यक हैं। गुलाम कादिर पठान सरदार जाबित खां का पुत्र था। जाबित खां अपने समय में बड़ा साहसी सरदार गिना जाता था। वह एक समय मुगल साम्राज्य का स्तम्भ गिना जाता था और दूसरे समय वही उसका कट्टर शत्रु बना। दोनों ही दशाओं में उसने मुगलों के दिलों पर कदम जमाया था। सन् १७७२ में जब मुगल बादशाह ने मरहठों की सहायता से उसका पीछा किया और पत्थरगढ़ तथा सूखतील नाम के किले उसके हाथ से जाते रहे, तब उसने अपने खास दुर्ग घोषगढ़ में शरण ली। वहां भी उसका पीछा किया गया तो वह जाटों की शरण में चला गया। उस समय उसका परिवार मुगल सेना के हाथ पड़ गया। परिवार में एक बालक भी था, जिसे गुलाम कादिर कहते थे। वह शाही हरम में गुलाम बना कर रक्खा गया।

कुछ समय तक जाबित खां इसी आपत्ति में ग्रस्त रहा। अन्त को उसके दिन भी फिरे और फिर से वह मुगल सम्राट का वजीर बनाया गया। इस बार वह मरहठों की कृपा से लक्ष्मी का कृपा पात्र बना। परन्तु मरहठों की दया दृष्टि का कोई भरोसा नहीं था। जाबित खां का प्रतिद्वन्द्वी नुजुफ खां फिर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



मरहठों से जा मिला। जाबित को दिल्ली छोड़कर भागना पड़ा और जाटों की शरण लेनी पड़ी। उन दिनों मरहठे और जाट आपस में लड़ २ कर मर रहे थे। नुजुफ खां और जाबित खां गिरगट की तरह पल पल में रंग बदल रहे थे। जीवन के अनन्त काल में जाबित खां मुगल सम्राट का जानी दुश्मन हो गया था। गुलाम कादिर ने पिता के पास रह कर जहां एक ओर लड़ना सीखा था, वहां साथ ही मुगलों से घोर विद्वेष भाव रखना भी सीखा। धीरे धीरे वह एक हट्टा-कट्टा खूबसूरत लड़ाकू जवान होकर यहां तक मद मस्त हुआ कि पिता के बन्धन में रहना भी दुष्कार मालूम होने लगा। एक दिन जो धुन समाई तो हथियार बांधकर घोड़े पर सवार हो गया और गरीब पिता के तम्बू को छोड़कर दिल्ली का रास्ता लिया।

दिल्ली में एक साहसी वीर के लिए खुला मैदान था। जो बहादुर कन्धे का धक्का देकर रास्ता निकाल सके, उसके लिये निर्बल राजा के जर्जरित राज्य की अपेक्षा उत्तम कार्य क्षेत्र मिलना कठिन है। गुलाम कादिर साहसी था, रूपवान था, निडर था और बलवान था। वह बोल चाल में चतुर और मीठा था। मुगल दरबार में जगह बनाते उसे देर न लगी। वह बादशाह के खास अर्दलियों में रक्खा गया।

दरबार में आने से कुछ दिन पीछे गुलाम कादिर को एक साथी मिल गया। बादशाहों के पास रहने वाले लोग जानते हैं कि बिना पार्टी बनाये काम नहीं चलता। वहां पार्टी के अन्तर्गत पार्टियां बनती हैं और एक दूसरे के खून की प्यासी बनी रहती हैं। जो दरबारी मजबूत संघ बनाकर रहते हैं वह जीवित रह सकते हैं। परन्तु जिनकी किश्ती दरबार के समुद्र में अकेली भटक जाती है, उनका ईश्वर ही रक्षक है। बादशाह जिस बुरी तरह पार्टियों और उप पार्टियों से घिरे रहते हैं, जाल में फंसी हुई मछली भी उनसे अच्छी है। गुलाम कादिर ने शीघ्र ही एक साथी ढूंढ लिया। मंजूर अली महलों का प्रबंधकर्ता था, वह बादशाह की आंखों पर चढ़ा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



था। महल के क्षुद्र षड्यन्त्रों में उसका दिमाग खूब काम करता था। वह धूर्त था पर साहसी नहीं। कादिर साहसी था, परन्तु धूर्त नहीं था। दोनों को एक दूसरे की आवश्यकता थी। 'हताश्वरदग्ध न्याय' के अनुसार दोनों एक दूसरे की ओर खिंच गये। मंजूर अली को एक मजबूत तलवार मिल गई और गुलाम कादिर को एक षड्यन्त्रकारी दिमाग मिल गया। मंजूर अली रात दिन बादशाह के पास रहता था। वह बात २ में गुलाम कादिर के गीत गाने लगा, जिससे वह पठान नवयुवा शाहआलम की नजरों में चढ़ता गया। वायुवेग से उड़ते हुए विमान की भांति खुशामदी की सहायता से कादिर का भाग्य ऊपर को उठने लगा।

वसन्त के दिन बादशाह के साथियों में गुलाम कादिर भी था। कमला देवी का दुर्भाग्य कि शाह आलम की दृष्टि उस पर पड़ गई। प्रजा की—विशेषतः हिन्दुओं की—स्त्रियों को मुसलमान शासक धर्मानुकूल अपनी समझते थे। उस गिरते हुए काल में तो मुगल बादशाहों की दशा और भी खराब हो गई थी। गुलाम कादिर को कल आज्ञा मिली है कि वह कमला देवी को छल या बल से ले आवे। उसकी सहायतार्थ कुछ सिपाहियों और एक पालकी को गांव में छोड़ दिया गया था। कमला देवी की सूरतने शाह आलम के दिल को घायल कर दिया है। वह बेचैन हैं। उसका दिन इसी चिन्ता में व्यतीत हुआ है कि कब रात हो आये और कब गुलाम कादिर राजपूत बाला को लावे। मंजूर अली चाहता था कि गुलाम कादिर को इस कार्य में सफलता हो। गुलाम कादिर की इस कार्य में सफलता का परिणाम उसकी निरन्तर उन्नति और असफलता का परिणाम सर्वनाश होगा—यह भी वह समझता था। गुलाम कादिर की उन्नति में मंजूर अली का भला था। वह कल्पना किया करता था कि जिस दिन मेरी अक्ल और कादिर की तलवार पूरे ज़ोर पर आयेगी, उस दिन कमजोर शाह आलम तो नाम का बादशाह होगा और असली बादशाहत तो हम दोनों करेंगे।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



कल्याण सिंह अन्दर आया। उसने अपनी तलवार बादशाह के चरणों में रख कर सलाम किया, और नीचे मुँह करके खड़ा हो गया। अधीर शाह आलम ने अकेले कल्याण सिंह को देख कर तीखे स्वर से कहा—"कल्याण सिंह ! गुलाम कादिर कहां है।"

कल्याण सिंह ने निष्कंप स्वर से कहा—'जहांपनाह ! वह कैदी है।"

'गुलाम कादिर !' शाह आलम ने और अधिक तीव्र स्वर से पूछा—"क्यों और किसके हुक्म से ?"

कल्याण सिंह ने विनय से कहा—"हुजूर ! हुक्म हो तो सारा किस्सा कह सुनाऊँ ? उससे सारा भेद खुल जायगा।"

शाह आलम ने झुंभला कर पूछा—"लम्बा किस्सा सुनाने से पहले यह बताओ कि तुम उस राजपूतनी को साथ लाये हो या नहीं ?"

कल्याण सिंह ने बड़ी स्थिरता के साथ उत्तर दिया—"हम लोग तो राजपूत बाला को ले आये थे, परन्तु गुलाम कादिर की धोखेबाजी ने उसे भगा दिया। उसके साथी शिकार को ले भागे हैं। इसी से हमने कादिर को कैद कर लिया है।"

अब तो शाह आलम के क्रोध का पारा बहुत ऊँचा चढ़ गया। राजपूतनी के न आने से तो उसे झुंझलाहट थी ही, गुलाम कादिर की धोखेबाजी की खबर सुन कर उसके क्रोध की सीमा न रही। कल्याण सिंह को वह एक विश्वास पात्र सिपाही समझता था। क्रोध और झुंभलाहट को सूचित करने वाले स्वर से वह मंजूर अली से बोला—"देखो मंजूर अली यही तुम्हारा गुलाम कादिर है। इस बदमाश जाबिते के बच्चे से और क्या उम्मेद हो सकती थी ? सांप के घर सांप के सिवा और क्या पैदा हो सकता है ? तुम्हारी सिफारिशों ने मेरी नाक में दम कर दिया है। बोलो अब क्या कहते हो ? इस धोखेबाजी के बदले में जाबिता के बेटे को जेल में डलवाऊँ या फांसी पर चढ़वाऊँ ?"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



मंजूर अली के सिर पर मानो बज्र गिरा । उसे अपनी आशाओं का महल गिरता हुआ नजर आया । फिर भी सँभल कर बोला—"जहाँपनाह ! भला मैं नाचीज आपके सामने क्या बोल सकता हूँ ? पर इतनी अर्ज जरूर करूँगा कि आप सिर्फ एक ही आदमी के कहने से कादिर को कसूरवार न ठहरावें । इस मामले की तहकीकात करने पर शायद कोई दूसरी बात मालूम हो ।"

"अच्छा तहकीकात भी हो जायगी"

रूखे स्वर में इतना कह कर शाह आलम ने कल्याण सिंह से कहा—"मंजूर का कहना भी ठीक है । तुम अपना पूरा किस्सा थोड़े में कह जाओ । याद रखना, एक भी झूठी बात मुँह से न निकले । तुम्हें हरेक बात साबित करनी पड़ेगी । आज या तो कादिर का सिर उड़ेगा या तुम्हारा ।"

कल्याण सिंह ने शांत भाव से सारा किस्सा कह सुनाया । केवल इतना बढ़ा दिया, कि "जब हम लोग कादिर की कुमन्त्रणा को जान कर उसे कैदी बनाने की कोशिश कर रहे थे, उसी समय कादिर के कुछ पठान साथी पालकी पर टूट पड़े और राजपूतनी को लेकर भाग गये । हमने दूर तक पीछा किया, लेकिन हमारे हाथ न आये । उनकी संख्या भी हमसे बहुत अधिक थी । हम लोग उनका पीछा करके भी जीत नहीं सकते थे । मेरे साथ जितने सिपाही थे उनमें कुछ तो पठानों का पीछा करते हुए दूर निकल जाने की वजह से लौट नहीं सके, बाकी तीन आदमी मेरे साथ हैं, उनसे सब कुछ दर्याफ्त कर सकते हैं ।"

एक एक करके तीनों आदमी बुलाए गए । मंजूर अली ने बहुत जिरह करने की कोशिश की, लेकिन कल्याण सिह और मुराद ने उन्हें ऐसा पढ़ाया था कि वह एक इंच भर भी इधर या उधर न हुए । मंजूर अली केवल इतना कर सका कि जब शाह आलम फैसला सुनाने लगा तब सिफारिश की कि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



गुलाम कादिर को भी एक बार बुलाकर पूछ ताछ करनी चाहिए । परन्तु शाह आलम के दिल में जाबित खां के प्रति जितनी घृणा थी, वह उभर आई थी । उसने एक न सुनी । मंजूर अली के बहुत आग्रह करने पर केवल इतना किया कि कादिर को मृत्यु या कैद का दण्ड न देकर दिल्ली से निकल जाने का हुक्म दिया । उस कमरे के बाहर किसी को भी सारा किस्सा न मालूम हुआ । बस सबने यही जाना कि जैसे जाबित खां बेइज्जती के साथ मुगल दरबार से निकाला गया था, वैसे ही उसका बेटा गुलाम कादिर भी निकलवा दिया गया ।

पास के गांव से एक दूसरी पालकी मंगवा कर कल्याण सिंह ने घायल तेजसिंह को दिल्ली में अपने एक राजपूत दोस्त के घर भिजवा दिया था । उसकी वहां सेवा सुश्रूषा होने लगी ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# तेरहवां परिच्छेद

## समय बीत गया

गुलाम क़ादिर लाल किले से निकाल दिया गया। वह कहीं चला गया। कमला देवी नदी के पार जा लगी, उसने कहीं आश्रय लिया। तेजसिंह घायल अवस्था में किसी राजपूत के यहां रखा गया, वहां उसका इलाज होने लगा। रात के पीछे दिन गुजरने लगे, दिन के पीछे रात गुजरने लगी। दिन महीनों में परिणित हो ऋतुओं के रूप में आ गये। पतझड़ के पीछे वसन्त आई। आमों की शाखायें बोझ से झुकने लगीं। झुकी हुई डाल पर बैठकर कोयल कलरव करने लगी। दिन रात का चक्र चलता ही रहा और मन्द सुरभि पवन का स्थान प्रखर ताप से तापित तीव्र वायुओं ने लिया। सूर्य भगवान अत्याचारी राजा की भांति प्रति दिन अधिकाधिक तीव्र होने लगे। समय अत्याचारी राजा को भी बूढ़ा कर देता है, बादलों ने आकर सूर्य के भयंकर मुंह को भी ढक लिया। चारों दिशाओं में वृक्षावली की हरियाली अपनी रौनक दिखाने लगी। तेजसिंह और कमला देवी जैसे वियोगी सज्जन जहां कहीं भी थे, वे सर्द आहें भर कर दक्षिण से बहते हुए वायु को सहायता देने लगे। धीरे २ पश्चिम के पवन ने दक्षिणानिल को शांत कर दिया। पहले सर्दी ने चुपके २ चोर की नाई रात की अंधियारी में प्रवेश किया, फिर पैर जमता देख कर दिन को भी दबोच लिया। सूर्योदय पर भी तन पर से कम्बल उतारना कठिन हो गया। इसी प्रकार प्रकृति देवी की मन तरंग के साथ ऋतुओं का चक्र फिर कर साल पर साल बीतने लगे। मनुष्यों की आयु बीतने लगी। हमारे उपन्यास के के पात्र अपनी २ दशाओं में जीवन बिताने लगे। समय न-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



राजा को देखता है न रंक को। सब को एक ही सान पर चढ़ाकर छीलता, और एक ही भट्टी में तपाता रहता है। वही सर्व शक्तिमान समय इस कथा के पात्र को भी छीलता और तपाता रहा, गुप्त रहस्यों के स्वामी समय के सब भेदों को कौन जान सकता है? इन बीच के कई सालों की बात भी हम नहीं जानते। हां, अगली कथा में स्वयं समय ही अपनी बीती सुना दे, तो हमारा आपका, दोनों का, उपकार होगा। चलो, इस बीच के समय को छोड़कर हम सन् १७८७ के किसी महीने के किसी दिन राजपूताने के एक मैदान में पहुंचें। वहां हमें मनोरंजन के लिये बहुत सा सामान मिलेगा।

*　　　*　　　*

जयपुर से ४३ मील पूर्व की ओर एक नगर है, जिसका नाम लाल सोठ है। उस नगर के समीप बड़ा विस्तृत मैदान है। इस मैदन से कोई डेढ़ दो मील की दूरी पर महादेव का एक मन्दिर था। यह मन्दिर बहुत बड़ा नहीं था। इसमें पुजारी भी अधिक नहीं रहते थे। नगर से दूर होने के कारण लोगों का वहां आना जाना कम था, इसलिए अधिक पुजारियों का निर्वाह होना भी कठिन था। किसी पुराने जमाने में पास के गांव की एक बुढ़िया कहती थी—एक पुजारी जोड़ा आकर उस मंदिर में ठहरा। ब्राह्मण उस समय युवा ही होगा और अब बूढ़ा हो गया था। ब्राह्मणी भी उस सयय लड़की या युवती ही होगी, अब वह भी बूढ़ी हो गई थी। दोनों वहां चिरकाल से रहते थे। बूढ़े मंदिर में बूढ़े जोड़े का जी खूब लग गया था। यह पुजारी अन्य पुजारियों में काफिर समझा जाता था, क्योंकि इस में लोभ कम था। वह लोगों की कन्याओं को खोटी दृष्टि से पवित्र नहीं करता था। विपत्ति आने पर आस पास रहने वाले लोगों की कुछ सहायता करने का अपराध भी कर देता था। आस पास के पुजारी इस पुजारी जोड़े को घृणा की दृष्टि से देखते थे और साधारण प्रजा शायद इसीलिए उसका बड़ा आदर करती थी, उसे प्यार करती थी। बरसों बीत गये—और यह

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



जोड़ा लोगों की श्रद्धा के कारण आनन्द पूर्वक जीवन के दिन काटता रहा। ब्राह्मण का नाम रामधन और ब्राह्मणी का नाम सरजू देवी था।

यह मंदिर सुरक्षित समझा जाता था। बूढ़ा ब्राह्मण अपने पास अधिक धन नहीं रखता था इसलिये एकांत स्थान होते हुए भी चोर, डाकू इधर मुँह नहीं करते थे। ब्राह्मण के चरित्र पर लोगों को बड़ा विश्वास था। भूली भटकी और निराश्रय स्त्रियां और ऐसे पुरुष प्रायः मंदिर में आकर आश्रय लेते थे। रामधन भी यथाशक्ति उनकी सहायता करता था और उन्हें आश्रय देता था। यह बात सचमुच एक मंदिर वासी पुजारी के लिये विचित्र थी।

जिस समय का हम वर्णन कर रहे हैं, उस वक्त वहां दो व्यक्ति नहीं, तीन व्यक्ति निवास करते थे। कोई दस दिन गुजरे, सायंकाल के समय रामधन अपने संध्या वन्दन से निवृत होकर घर का दीपक जला रहा था। दीपक के लिये आग जलाई, इतने में हवा का एक झोंका आया और आग बुझ गई। रामधन ने फिर आग जलाई और हाथ देकर उसे वायु से बचाना चाहा, किन्तु वायु का वेग ऐसा प्रचण्ड था कि मानो आज वह 'कृशे कस्याहित सोहृदम' के सिद्धांत को ही सार्थक कर दिखाने को तैयार हुआ था। आग फिर बुझ गई। रामधन परिश्रम निष्फल होता देख शत्रु का द्वार रोकने के लिये चला। बाहिर कुछ अँधेरा हो चला था। दरवाजे पर पहुँचा तो एक दम ठिठक गया। देखा द्वार के पास एक योगिनी भेष-धारिणी अबला खड़ी है। ऐसे समय उस रूप को देख कर रामधन कुछ आश्चर्यचकित सा हुआ। वह मूर्ति रामधन को देख कर पहले तो संकोच से कुछ एक ओर को दबी, किन्तु पीछे शीघ्र ही आगे बढ़ कर प्रणाम किया। पास आने पर रामधन को उसको भली प्रकार देखने का अवसर मिला।

वह जोगिन मध्यम वर्ग की प्रतीत होती थी—किन्तु पास आने पर भी उसकी आयु पहचानना कठिन था। उसने अपना मुंह कपड़े से ऐसे ढंग पर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



ढका था कि सिवा आंखों और नाक के और कुछ दिखाई नहीं देता था। केवल आंखें दीखती थीं, किन्तु वह समाचारों का एक खजाना उपस्थित कर देती थीं। उन आंखों में तेज की प्रधानता थी या प्रेम की, उनमें ओज की सौख्यता थी या मधुरता की – यह कहना कठिन था। वे आंखें प्यासी शेरनी की आंखें प्रतीत होती थीं। रामधन ने दुनिया देखी थी। भिन्न २ प्रकार के मनुष्यों को देखते २ ही उसके बाल पक गये थे। उसे आंखें पहचानते देर न लगी। उसे एक नजर डालते ही ज्ञात हो गया कि यह कोई विशेष अबला है। चरणों में झुकी हुई जोगिन को आशीर्वाद दे कर बूढ़े पुजारी ने कहा—

"देवी! तुम्हें अभीष्ट लाभ हो। तुम्हें वे सब ऋद्धि सिद्धियां प्राप्त हों, जिनकी इच्छा से तुमने यह भेष धारण किया है। कहो क्या चाहती हो?"

जोगिन ने शिर झुकाये ही झुकाये मन्द स्वर से कहा—"महाराज! मैं आपके मन्दिर में कुछ समय के लिये विश्राम चाहती हूं।"

बूढ़े ब्राह्मण ने प्रेम पूर्ण स्वर में कहा—"हे अज्ञात अबले! मैं नहीं जानता तुम कौन हो? किन्तु तुम्हें देख कर मेरे चित्त में ऐसा भान होता है मानों मैं अपनी पुत्री को देख रहा हूं। वह भी यदि जीवित होती तो इसी आयु की होती।" यह कह कर बूढ़ा ब्राह्मण कुछ क्षणों के लिये चुप हो गया, फिर भरे हुए कंठ से उसने कहा—"पुत्री! तुम बिना किसी संकोच के मेरी धर्मपत्नी के पास जब तक चाहो रह सकती हो।"

इतना कह कर पुजारी उस आगन्तुक जोगिन को अपने साथ मंदिर में ले गया। दरवाजा बंद करके रोशनी की और अपनी स्त्री को पुकार अतिथि को उसके सुपुर्द कर दिया।

इस दिन से वह जोगिन मंदिर में ही रहती। वह बाहर बहुत कम निकलती। निकलती भी तो ऐसे समय में, जब लोगों का उधर संचार कम हो। बाहर जा कर भ्रमण करती रहती है, या कहीं वृक्ष के नीचे एकान्त में बैठ जाती है। जब भी अकेली बैठती है, गले से माला निकाल कर न जाने

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



क्या जपने लगती है। रामधन ने उसके आने से दूसरे दिन उसके पूर्व वृतान्त को जानने का यत्न किया? उससे पूछा, परन्तु जोगिन से कोई उत्तर न पाया। उसने केवल इतना ही कहा कि "महाराज! मैं अनाथ हूं और संसार के कष्टों से दुःखित हूँ। दुःख को माला फेर कर भुलाना चाहती हूँ और अपने इष्ट देवता की खोज में घूमती फिरती हूं। मेरे इष्ट देवता ने मुझे एक बार मानों सपने में दर्शन दिया था। आंख खुली तो शून्य ही शून्य पाया। अब नहीं जानती उस इष्ट देवता को कहां, किस मंदिरमें पा सकूंगी। उसी की माला जपती हूं और उसी की खोज में देश-देशान्तर घूमती फिरती हूं। महाराज! मैंने दुखिया हो कर यह भेष धारा है और संसार से मन मोड़ लिया है।" इतना कहते कहते जोगिन की आंखें तर हो गयीं और गला रुकने लगा। वह आंखों पर कपड़ा देकर वहां से उठ गई। रामधन ने देखा कि यह प्रश्न जोगिन को कष्ट प्रद है। तब, फिर उन्होंने आगे कोई पूछ-ताछ करना उचित न समझा। अपनी पुत्री मान कर उसे घर में रक्खा और उसी प्रकार व्यवहार करने लगे। जोगिन भी देवता की माला जपती, ठाकुर पूजन करती और गृह कार्य में सरजू की सहायता करती हुई समय बिताने लगी।

* * *

लाल सोठ गाँव के पास एक चौड़ा मैदान है, जो मीलों तक फैला हुआ है। वह मैदान स्थान स्थान पर झाड़ियों और वृक्षों से सघन है और बीच बीच में छोटे बरसाती नालों के खड्ड भी हैं।

यह मैदान प्रायः खाली पड़ा रहता है। किन्तु १७८७ ई० के किसी महीने के एक दिन सायंकाल वहां बड़ी रौनक थी। एक बड़े पेड़ की छाया में कोई पन्द्रह राजपूत जवान बैठे हुये गप शप कर रहे थे। सभी जवान सिपाही भेष में थे और कुछ खाली समय पाकर बात चीत का आनन्द ले रहे थे। कोई लेटा था और कोई बैठा था। कोई अर्ध लेटायमान था और

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



दूसरे साथी का सहारा ले रहा था । इसी प्रकार आनन्द में बात चीत का दौर चल रहा था । एक जवान ने कहा—

"यारो ! अब के तो बड़ी मौज है। मुगल लड़ते थे यां लगान लेते थे, सो तो था ही अब मैंढकी को भी जुकाम होने लगा । ये कल के मरहठे भी चौथ लगाने और हम लोगों की बराबरी करने लगे । धिक्कार है इन लोगों को । अब ये बच्चू भी पूरा मजा पायेंगे ।"

दूसरे जवान ने तर्क्न में तान मिलाई और कहा "पूरा, मजा पायेंगे । राजपूतों से कभी वास्ता नहीं पड़ा होगा । भला मुसलमान कूदें तो कूदें भी ये मरहठे भी कूदने लगे । लीजिए साहिब, बोरियां भी कूदने लगीं । अब तो जी चाहता है, आज ही लड़ाई छिड़ जाय और पटेल का सिर उड़ा लाऊँ। वाह ये भी क्या ही मजेदार बात होगी ।

सारे जवानों ने हां में हां मिलाई । पर न जाने क्यों उन राजपूतों में से एक को यह सारी बात चीत पसन्द न आई । उसके मुंह पर कुछ असन्तोष के से चिन्ह पाये गये । कुछ देर बाद वह कहने लगा, 'अरे भाई ! तुम्हारीं एक बात समझ में नहीं आती। मुसलमान क्या मरहठों से बहुत अच्छे हैं, जो तुम उनके गुण गाते हो ? मरहठे आखिर तो हमारे भाई हैं । उनके चोटी है, वे गऊ की, मन्दिरों की और ब्राह्मणों की रक्षा करते हैं । हमारे महाराज से उनकी लड़ाई है, सो लड़ना तो हमारा धर्म हैं । परन्तु मुसलमानों की तुलना में उन्हें गिराना अच्छा नहीं ।" यह कथन सारी मण्डली पर उल्कापात की भांति गिर पड़ा । " हैं।" यह क्या ? राजपूत के मुंह से मरहठों की प्रशंसा ! वे हिन्दू हैं तो क्या ? पर मरहठे तो हैं ।" सब विस्मय और आश्चर्य से वक्ता की ओर देखने लगे । उनमें से एक चुप न रह सका और बोला । —

"देखो तेजसिंह ! तुम्हारी बहादुरी और चतुरता के कारण हम सभी तुम्हारा आदर करते हैं; किन्तु तुम्हारे कई विचार बड़े विलक्षण हैं । इन

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



विचारों के कारण हमें भय है कि तुम कभी खतरे में पड़ोगे। महाराज तक यह विचार पहुँच गये तो अनर्थ हो जायगा और हम लोग भी मरहठों की प्रशंसा नहीं सुन सकते, शेर कभी लोमड़ी की कीर्ति नहीं सह सकता। हम क्षत्रिय कुलोत्पन्न हैं, हमने भगवान सूर्य के कुल में जन्म लिया है। ये मरहठे-ये तो शूद्र हैं, अधम और पतित हैं। ये हमारी बराबरी का दम भरते हैं, तो क्या हमें सह्य हो सकता है? याद रखो—मुगल साम्राज्य में जो स्थान कुछ समय पूर्व राजपूतों को प्राप्त था, आज वह मरहठों के हाथ में जा रहा है। राजपूत इस भयंकर अपमान को नहीं सह सकते और नहीं वे किसी राजपूत के मुँह से उनकी प्रशंसा ही सुन सकते हैं।"

इन शब्दों में एक राजपूत युवक के लिये पर्याप्त अपमान भरा हुआ था तेजसिंह के होठ भी कुछ फड़फड़ाने लगे किन्तु अपने आप को संभाल कर उसने कहा—

"भाई शेर सिंह! इतने जोश में न आओ, राजपूती के लिए जो तुम्हारा प्रेम भाव है उसका मुझ में अभाव नहीं है। मेरे हृदय में भी महाराणा सांगा, प्रणवीर प्रताप और जयमल के लिए वही आदर भाव है, जो तुम्हारे हृदय में है। किन्तु आत्म सम्मान का जैसा तुम प्रयोग करते हो, मैं वैसा नहीं करता। तुम मुसलमानों का आधिपत्य सह सकते हो, मैं उसे नहीं सह सकता। तुम मुसलमानों के आधीन रह कर ऊंचे पद पाने को उपादेय वस्तु समझते हो, मैं उसे अत्यन्त घृणा की दृष्टि से देखता हूं। जो विदेशी है, वह जब तक मेरे देश की स्वाधीनता पर बंधन डालता है, मेरा शत्रु है। उसकी तुलना में स्वदेशी शूद्र क्या स्वदेशी कुत्ता भी मेरे लिये अधिक आदरणीय है। मरहठे तो फिर वीर हैं, योद्धा हैं और देश भक्त हैं। जिस दिन मरहठों ने अपने देश की रक्षा के लिए हथियार उठाया, उस दिन से ही वे मेरे मित्र, भाई और पूज्य हो गये। जिस दिन पहले मरहठों के शरीर से लहू की बून्द देश की रक्षा में भूतल पर गिरी, उसी दिन से वे मेरे सहोदर से भी अधिक

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



सन्न हो गये। भाई मैं नहीं जानता, तुम किस प्रकार विचारते हो। मैं केवल इतना जानता हूं कि मेरे लियें अपने और पराये की कसौटी देश है। जो मेरा देशी और देशभक्त है, वह मेरा सब कुछ है। जो विदेशी है और विदेशियों का हितैषी है, वह मेरा शत्रु परम शत्रु है।"

शेरसिंह अपने को बड़ा बुद्धिमान समझता था, किन्तु तेजसिंह के इस तेजस्वी भाषण का वह कुछ उत्तर न दे सका। उसकी युक्ति का महल तेजसिंह के उत्कृष्ट विचार रूपी तोपों से उड़ गया। शेरसिंह ने सहायता के लिए चारों ओर दृष्टि दौड़ाई, परन्तु और साथियों के मुंह पर भी तेजसिंह के शब्दों का असर देखकर कुछ खिसियाना सा होकर वह कहने लगा—

"अच्छा भाई! ऐसा ही सही। पर इतना मैं कहे देता हूं कि ये विचार एक राजपूत के योग्य नहीं हैं। क्योंकि मुसलमानों से घृणा और मरहटों से प्रेम करनेवाले राजपूत देर तक नहीं फल फूल सकते। महाराज के हृदय में स्थान पाने का यह रास्ता नहीं है। आगे तुम्हारी मर्जी।"

महाराज के हृदय में स्थान पाने का नाम सुनकर तेजसिंह कुछ घृणा पूर्वक मुस्करा सा दिया और बातचीत का प्रवाह दूसरी ओर चल निकला।

बातचीत होते कुछ ही समय बीता होगा कि शेरसिंह की दृष्टि दूर से आते हुए एक सिपाही पर पड़ी। जिस वेग से वह भागा आ रहा था, उससे अनुमान होता था कि वह कोई खास समाचार ला रहा है। सारी मण्डली समाचार सुनने के लिए उत्सुक हो गई। पास आने पर उस सिपाही से पता लगा कि अभी आध घण्टे में राजपूत राजाओं का दरबार होने वाला है और वहां सारी फौज को बुलाया गया है।

यह समाचार सुन कर सब राजपूत एक दम खड़े हो गए और द्रुत वेग से डेरे की ओर चल दिए। आइए पाठक! हम भी चलकर जरा राजपूतों के दरबार की शान को देखें।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# चौदहवां परिच्छेद

## कठिन कार्य

मैदान के मध्य में एक विशाल तम्बू गड़ा हुआ था, जो देखने में शानदार था, किन्तु सादा था। उस तम्बू के ऊपर देवी देवताओं के चित्र थे, किन्तु उनमें भी सादगी थी, विलासिता या वैभव के चिन्ह नहीं थे। तम्बू के चारों ओर नंगी तलवार का पहरा था और थोड़ी थोड़ी दूर पर मूछें ताने हुये राजपूत जवान घूम रहे थे। तम्बू के दरवाजे के सामने बहुत चौड़ा मैदान था, जो लम्बाई में लगभग मील भर चला गया था। उसी मैदान में राजपूत सेना एकत्र हो रही थी।

राजपूत सिपाहियों की शान अनूठी ही थी। लंबे कद और उभरी हुई छाती पर चढ़ी हुई मूंछें और तेजस्वी आंखें अद्भुत शोभा दे रही थीं। सिर का फेंटा राजपूतों के बांकेपन का नमूना था। सिपाहियों की कतारों की कतारें आकर खड़ी हो रही थीं। कमर में लटकती हुई तलवारें एक दूसरे के साथ भिड़कर हिलतीं और शब्द करती थीं, मानों शीघ्र ही शत्रु को ढूंढ़ने के लिये अधीरता प्रकाशित कर रही हों।

यह पूरी तरह अनुमान लगाना कठिन था कि सारे सिपाहियों की संख्या क्या है? पैदल और घुड़सवार मिला कर एक लाख से कम न होंगे। एक ओर को ४०० तोपों का तोपखाना भी दिखाई दे रहा था। पाठकगण! कहीं इन तोपों को आज कल के यम द्वार न समझ लेना— ये तोपें तो आज कल के तोप रूपी विक्रमादित्य भोजों के सन्मुख भोजा तेली की हैसियत ही रखती थीं। बहुत देर तक भरभराने के पीछे एक गोला फेंका जाता था और वह बहुतों को घायल न कर सकता था। उस समय यही

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



बड़ी बात थी। जिस सेना के पास ४०० तोपें एकत्र हो जाती थीं वह अजेय समझी जाती थी।

तम्बू के बाहिर सेनायें एकत्र हो रही थीं, और तम्बू के भीतर सेनाओं के नायक बैठे हुये थे। द्वार से अन्दर जाते ही सीधी दृष्टि जिस महापुरुष पर पड़ती थी, वह ऊँचे मंच पर बैठा हुआ था। वह इस संपूर्ण संघ का मुखिया, जयपुर का अधिराज, राजा प्रताप सिंह था। उसके दाहिने हाथ की ओर एक और शानदार राजपूत मूर्ति विराज रही थी। यह मूर्ति उदयपुर के राजा की मूर्ति थी, और प्रताप सिंह के बाईं ओर उन्ही के जमाई, जोधपुर के युवक महाराजा विजय सिं शोभायमान हो रहे थे।

यह त्रिमूर्ति राजा प्रताप सिंह की प्रेरणा से एकत्र हुई थी। कुछ समय से दिल्ली के मुगल राज्य की बागडोर राजपूत राजाओं के हाथ से निकल कर मरहठे लोगों के हाथ में जा रही थी। जो स्थान किसी दिन राजपूतों को प्राप्त था, आज उस पर मरहठों की ध्वजा फहरा रही थी। इससे राजपूतों के हृदयों में ईर्षा की आग जल उठी थी। उसी आग को बुझाने के लिए प्रताप सिंह ने उदयपुर और जोधपुर के राजाओं को साथ मिलाया था। और सिंधिया की सेनाओं को पराजित करके मुगल राज्य में अपना सिक्का बिठाने का विचार किया था। यह सेना राजपूतों के जाते हुए गौरव को पुनः स्थापित करने के लिये एकत्र की गई थी।

यह सेना उस समय की दृष्टि से बहुत बड़ी थी। एक लाख सिपाहियों को एकत्र कर लेना थोड़ा काम न था। राजा प्रताप सिंह की इस समय राजपूताने में बड़ी ख्याति हो रही थी, और इसे धर्म युद्ध समझ कर चारों दिशाओं से राजपूत एकत्र हो रहे थे।

तीनों राजा एक ऊंचे मंच पर बैठे थे। और उनके दांये बांये और सामने बड़े सरदारों के आसन लगे हुए थे। सभी सरदार सन्नद्ध थे। सलाह को देख सुनकर स्पष्ट प्रतीत होता था कि युद्ध छिड़ने की हर क्षण में सम्भावना

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



हो रही है। बाहर सेना की तैयारी को देख कर यही जंचता था कि आज राजपूत तलवार किसी बड़े उद्देश्य के लिये खेंची गई है और रजवाड़ों की नाक आज किसी बड़े दाव पर रखी जा रही है।

राजाओं की ओर सरदारों की परस्पर सलाह हो रही थी; अभी समाचार पहुंचा था कि माधोजी राव सिंधिया की जबर्दस्त सेनायें कहीं पास ही आ पहुंची हैं और अनुमान किया गया था कि अब युद्ध प्रारंभ करने में कुछ विलम्ब न करना होगा। युद्ध किस प्रकार आरंभ किया जाय, किस प्रकार शत्रु का किस ओर से सामना किया जाय, किस सेना का कौन सेनापती हो—इन्हीं सब बातों पर विचार करने के लिये यह पंचायत हो रही थी। इस समय पंचायत समाप्त हो चुकी है। जो जो प्रश्न विवाद ग्रस्त थे, उनका निपटारा हो चुका है। सब सेनापति उठकर और नरपतियों का उचित सम्मान करके बाहर जाने की तैयारी कर रहे हैं। तीनों नरपति भी उठ कर अपनी सेनाओं का निरीक्षण करने के लिये जाने का विचार कर रहे हैं। जोधपुर का नवजवान राजा विजय सिंह अपने ससुर महाराज प्रतापसिंह से युद्ध से पूर्व अंतिम सलाह ले रहा है कि इतने में एक लंबे चौड़े डील डौल वाला शानदार राजपूत उनके पास आया। आकर उसने सिर के झुकाव से नरपति का उचित सम्मान किया और आज्ञा की प्रतीक्षा में खड़ा हो गया। महाराज प्रतापसिंह ने सम्मान के उत्तर में सिर हिलाकर पूछा:—

"कहो रामसिंह! उस काम के लिये कोई उचित मनुष्य मिला?"

रामसिंह ने सिर के झुकाव से आदरभाव सूचित करके उत्तर दिया कि "अन्नदाता! उस कार्य के लिये योग्य आदमी को मैं ढूंढ़ लाया हूं। आज्ञा हो तो एकान्त में उसे आपकी सेवा में उपस्थित कर दूं।"

प्रतापसिंह ने व्यंग को समझ लिया और शीघ्र ही राजा विजयसिंह से छुट्टी ली। तम्बू के एक कोने में एक गौर वर्ण तेजस्वी राजपूत खड़ा हुआ महाराज प्रतापसिंह और सेनापति रामसिंह के आने की प्रतीक्षा कर रहा था।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



उन दोनों महापुरुषों को पास देख राजपूत सिपाही घुटनों तक झुक गया और आदर सूचक स्थितिमें खड़ा हो गया। प्रतापसिंह कुछ देर तक उस युवक को ऊपर से नीचे तक देखते रहे। उनकी आंखों ने उन्हें बताया कि इस सामने खड़े युवक में वे सब गुण विद्यमान हैं जो एक साहसिक योद्धा में आवश्यक हैं। उसके माथे पर, आंखों में या देहावस्थान में कहीं भी शिथिलता, निर्बलता या अनिश्चय का नाम नहीं था। उसके अंग अंग पर 'करूँ या मरूँ' का सिद्धांत लिखा हुआ था। प्रताप सिंह देखने की परीक्षा में युवक को उत्तीर्ण कर उसे सम्बोधित कर पूछने लगे—

"राजपूत युवक! तुम्हारा नाम क्या है?"

युवक ने उत्तर दिया, "महाराज मेरा नाम तेजसिंह है।"

प्रताप—"तेजसिंह! तुम्हारी आकृति तो अवश्य तुम्हारे नाम के समान है। क्या तुम कठिन कार्य में भी अपने नाम को सार्थक बना सकोगे?"

तेजसिंह—"महाराज फल का राजा ईश्वर है, परन्तु हां, इतना मैं अवश्य कहता हूं कि जो कुछ इस देह और तलवार से सम्भव होगा, उसमें अणुमात्र भी त्रुटि न होगी। महाराज! क्या मैं पूछ सकता हूँ कि मुझे क्या काम करना होगा?"

प्रताप—"बालक! अधीर न हो। मै तुम्हें अभी कार्य बतलाता हूँ। पहले मेरे दो एक प्रश्नों के उत्तर दे लो।"

"क्या तुम अकेले ही रात के समय शत्रु के दल में जाने का साहस रखते हो?"

तेजसिंह–"महाराज! अपने सेनापति की आज्ञा पाऊं तो रात या दिन के समय यमपुरी में भी जाने को उद्यत हूंगा। शत्रु कादल तो क्या वस्तु है?"

प्रताप—"शाबाश राजपूत शाबाश! तुम्हारा उत्तर राजपूत के ही योग्य है। अब दूसरे प्रश्न का भी उत्तर दो। शत्रुके दल में एक महाराष्ट्र सेनापति

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



है जिसका नाम है......। उसे ढूंढना होगा और ढूंढ कर जो वस्तु तुम्हें दी जाय, उसके हाथ में देनी होगी। क्या यह दुष्कर काम कर सकोगे ?"

तेजसिंह—"महाराज ! मैं इस कार्य के लिये यत्न करने का साहस रखता हूँ फल सिद्धि भगवान के हाथों में है।"

प्रताप—"तेजसिंह ! मनुष्य के हाथों में सिवाय यत्न के और है ही क्या? फल तो उसी के हाथ में है, जिस पर किसी का बल नहीं। साहसी और कायर में भेद इतना ही है कि जहां पहला इसी बात को सोच कर निराश नहीं होता वहां दूसरा इसी बात को विचार कर हाथ नहीं उठाता। मुझे प्रसन्नता है कि तुम्हें इस कार्य में लगा रहा हूं। परमात्मा तुम्हें इस कार्य में पूरी सफलता प्रदान करेंगे। सेनापति रामसिंह तुम्हें अलग ले जाकर एक पत्र दे देंगे जो तुम्हें उस महाराष्ट्र सेनापति के हाथों में देना होगा। अब देर न करो और जाओ, सफलता की देवी तुम्हार साथ देंगी।"

तेजसिंह ने झुक कर फिर नमस्कार किया, और सेनापति के पीछे पीछे दरवाजे से बाहर हो गया।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# पन्द्रहवां परिच्छेद

## शत्रु का दल

१

अब हम मराठा इतिहास के प्रसिद्ध माधोजी सिंन्धिया के उपनिवेश की ओर जा रहे हैं । जिस माधोजी ने अपने बाहुबल और बुद्धि बल से मुगल सम्राट को कठपुतली बनाया हुआ है, पाठक वृन्द ! उसके शिविर में जरा सम्भल कर चलना, कहीं नीति के जाल में तुम्हारा भी पांव न फँस जाय ।

यह शिविर राजपूतों के शिविर से लगभग दो मील दूर था । शिव का मंदिर हमारा पहले देखा हुआ है, वह इस शिविर के फैलाव के अन्दर ही आ गया था । डेरा पड़े अभी देर नहीं हुई थी । आज ही सुबह यह भारी लश्कर यहां आया था और देखते ही देखते चारों ओर मोर्चे खड़े हो गये थे । सिंधिया जहां एक ओर नीति में निपुण था, वहां युद्ध में भी परम प्रवीण था । इतनी बड़ी राजपूत सेना के साथ कैसे युद्ध करना होगा, इसे वह खूब समझता था । चारों ओर गढ़ बनाये जाने लगे, तोपखाना चढ़ाया गया और युद्ध सम्बन्धी आज्ञायें जारी की जाने लगीं ।

आप राजपूतों की शान देख आये, अब यहां की भी शान देखिये । आपको यहां उससे कई भेद दिखाई देंगे । वहां आप को तम्बुओं में और साज सामान में केवल सादगी मिली थी—यहां सादगी और शान का मेल था । मराठे स्वभावतः सादगी को पसन्द करते थे, किन्तु अब तो वे मुगलों की सेना में थे न, माधोजी सिंधिया इस समय दिल्ली के मुगल बादशाह की ओरसे लड़ रहा था । इसलिये मुगलोंके शानदार साज सामान उसके यहां भी साथ थे । तम्बुओं के कपड़ों पर सुनहरी झालरें लटक रही थीं, घोड़ों

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



की क़ाठियां सुनहरी कीलों से भरी पड़ी थीं और सेना के साथ आनन्द के सामान का भी अभाव नहीं था।

दूसरा भेद यह था कि जहां राजपूतों की सेनामें एक ही जातीयता दिखाई देती थी—वहां इस सेना में हिन्दुओं के शुद्ध पवित्र चूल्हे से कुछ ही दूरी पर मुसलमानों की हांडी में कबाब चढ़ा हुआ सुगन्ध दे रहा था। केवल मुसलमान ही नहीं—यहां कई योरुप के सिपाही भी दिखाई दे रहे थे। सेनापति डी० बोयने अपनी चुनी हुई सेना के साथ सिंधिया का दाहिना बाहु बना हुआ था। यह साहासिक सिपाही जन्म का फ्रेंच था। फ्रेंच सेना से रूसी सेना में नौकर हुआ और वहां से किसी तरह भारतवर्ष में पहुंचा। भारतवर्ष में भी कई हाथों की मैल लेता हुआ अन्त को सिन्धिया की सेना में भर्ती हो गया। उसके चारों ओर और भी कई जातियों के थोड़े से योरुपियन सिपाही इकट्ठे हो गये थे और इस प्रकार सिंधिया की सेना में हिन्दू, मुसलमान और ईसाई–तीनों धर्मों के मानने वाले सिपाही थे। पंचमेली फौज की शान निराली ही थी।

इस सेना को सेनापतियों की भी कोई कमी नहीं थी। सिंधिया स्वयं चतुर और अनुभवी सेनापति था और कई सेनापतियों का यश धूल में मिला चुका था। उसके पास इस समय दो प्रसिद्ध मराठे सेनापति थे। आपा जी इंगिलया और अप्पू जी खांडेराव कोई कम दर्जे के योद्धा न थे। हम ऊपर कह आये हैं कि सेनापति डी० बोयने तो सिंधिया की दाहिनी भुजा था। मुगल सवारों और खास बादशाही सेनाओं का सेनापति मुहम्मदबेग भी बड़ा दिलेर और जवांमर्द था, परन्तु मुगल सेनाओं की आंखें उसके भतीजे इस्माईल बेग की ओर लगी हुई थीं, जो आग का परकाला समझा जाता था। इस अद्भुत नौजवान के बारे में आगे हम कुछ जानेंगे।

इन प्रसिद्ध सेनापतियों के साथ होते हुए सिंधिया को राजपूतों के जत्थे की क्या चिन्ता थी। किन्तु फिर भी तम्बू के अन्दर जा कर देखो तो मानो

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



जी चिंतित भाव से घूम रहे हैं। माथे पर मानों राहु की रेखा चढ़ी हुई है। आंखों में उदासी का बोझ मालूम हो रहा है। यह क्यों? इसका कारण पाठक धीरे धीरे जानेंगे—अभी बताने का अवसर नहीं हैं।

बड़ा भारी खेमा—चारों ओर मुगल सवारों का पहरा—अपूर्व सजावट और ऊपर मुगली झंडा, चलिए बीच में चलें। बीच में माधोजी सिंधिया क दरबार लगा हुआ है। समय लगभग वही है जो राजपूती दरबार का था।

यह दरबार सामान्य नहीं था—विशेष काम से बुलाया गया था। थोड़ी देर खड़े होने पर हमें पता लग जायगा कि दरबार किस काम के लिये जमा था।

माधोजी सिंधिया बीच में गद्दी पर विराजमान थे। उनके दायें हाथ आपाजी और अप्पूजी खड़े थे और बाईं ओर मुहम्मदबेग और इस्माइलबेग खड़े थे। अनेकानेक सेनापति और सरदार जमा थे। कई ऐसे लोग भी जो आंखें बचाकर अन्दर घुस आये थे, पीछे छिप कर खड़े थे। तम्बू में हिन्दू और मुसलमानों के दो दल एक दूसरे के आमने सामने खड़े थे। यद्यपि सेना एक ही थी—परन्तु दोनों ही दलों में जोश दिखाई देता था। सेनापतियों की आँखें लाल हो रही थीं, और हिन्दू मुसलमानों को और मुसलमान हिन्दुओं को रोष भरी निगाहों से देख रहे थे, मानों एक ही कौर कर जायेंगे।

उस जोश के उमड़े हुए समुद्र में एक ही शान्त स्थिर मूर्ति दिखाई देती थी और वह थी माधोजी सिंधिया की। सिंधिया शान्त स्थिर भाव से आसन पर बैठे हुए किसी के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। देखने से ही यह असाधारण व्यक्ति बड़ा चतुर और गहरा प्रतीत होता था। मुंह पर राजनीति की सारी रेखायें विद्यमान थीं। आंखें जिसकी ओर देखती थीं, मानों उसके अन्दर गड़ जाती थीं। माथे पर चिन्ता की एक

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



रेखा थी, परन्तु उसके अतिरिक्त माथा शान्त समुद्र की भांति लहर-विहीन था।

इतने में चार सिपाहियों के मध्य में घिरे हुए एक मराठे युवक ने प्रवेश किया। जमाव अभियोग सुनने के लिए हुआ था, किन्तु अभियोग सुनने के लिए एक अपराधी भी चाहिये, और इस युवक में अपराधी के कोई चिन्ह नहीं दिखाई देते थे। देखने में यह युवक सुन्दर, सुडौल और मध्य कद का था। मुंह पर यदि कुछ थी तो एक छुपी हुई सी मुस्कराहट थी, जो वीरात्माओं के मुंह पर तब दिखाई दिया करती है, जब वे अपना कोई कर्तव्य पालन कर चुके हों।

युवक की मूर्ति और मुखड़े को देख कर सब के हृदयों में एक बार तो आदर भाव उत्पन्न हुआ, किन्तु दो क्षण पीछे ही सब उसे उस दृष्टि से देखने लगे, जैसे जैसे उनके हृदय के भाव थे।

युवक बीचों बीच होता हुआ सिंधिया की गद्दी के सामने जा पहुंचा और फौजी प्रणाम करके धीर भाव से खड़ा हो गया। अब भी चारों सिपाही उसे घेरे हुए थे। उसके खड़े हो जाने पर मुकद्दमा प्रारम्भ हुआ। सिंधिया ने मुसलमानों के दल की ओर देख कर कहा—"इस सिपाही का अपराध बताया जाय।"

मुसलमानों के दल में से एक मनुष्य आगे बढ़ा। यह मनुष्य सिपाही नहीं था। लम्बी दाढ़ी, लम्बी अचकन और लम्बी नाक देख कर ही ज्ञात हो जाता था कि आप मुसलमानों के मौलवी साहब हैं। मुकद्दमा कुछ ऐसा समझा गया था कि मौलवी साहब ही बोलने वाले नियत किए गये। मौलवी साहब से मुकद्दमा पेश कराने से मुसलमान सेनापतियों का यही अभिप्राय था कि मामला बिलकुल मजहबी रंग पकड़ जाय।

मौलवी साहब कट्टर मुसलमान थे, काफिर के आगे कब सिर झुकाने लगे। आकर सीधे बांस की तरह खड़े हो गए। सलाम की पर्वा न करके,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



सिंधिया ने फिर कहा—"इस सिपाही का अपराध बताया जाय।" उत्तर में मौलवी साहब ने खुदा और मजहब का बीसों बार नाम लेकर जो भाषण किया उसका सारांश यह था कि इस सिपाही ने अपनी सेना के एक मुसलमान सिपाही को तलवार से मार डाला है। मौलवी ने इतनी बात को खूब बढ़ा कर कहा। खून का कारण बतलाते हुए आपने कहा कि "यह नई बात है। मुसलमानी बादशाहत में पहले ऐसा नहीं हो सकता था। हिन्दू की मजाल नहीं होती थी कि मुसलमान पर हाथ उठावे। आज बदकिस्मती से हमें यह दिन भी देखना पड़ा। आप बादशाह सलामत के बड़े वजीर हैं। आपको मजहबी ख्याल छोड़कर ईमान से फैसला करना चाहिये। हां, अगर इस दरबार में फैसला न हुआ तो फिर हमें बड़े दरबार तक भी पहुंचना पड़ेगा।"

मौलवी का बोलना मानों सूखे जंगल में आग बरसाना था। कथन ऐसे ढंग पर किया गया था कि मुसलमानों के धार्मिक आवेश खूब भड़क उठें, और दूसरी ओर वह ऐसे वाक्यों से पुर था जिनमें हिन्दू और हिन्दू सेनापतियों का खूब अपमान हो। ज्यों ज्यों भाषण होता था मुसलमान धार्मिक जोश में, और मराठे अपमानजनित क्रोध में आ रहे थे। आखिर भाषण समाप्त हुआ। सिंधिया के माथे पर पहले चिन्ता की एक रेखा थी। अब दो हो गईं, और कोई भेद नहीं आया। चारों ओर जोश और रोष का तूफान आ रहा था। वीरों की भुजायें फड़क रही थीं, और म्यानों में से तलवारें सरक रही थीं। ऐसा प्रतीत होता था, मानों महासागर का जल दो भागों में बँट कर आमने सामने जम गया हो, और अब प्रतीक्षा है कि कब छुट्टी मिले और आपस में टकरायें।

थोड़ी देर यही हालत रही। सिंधिया ने कैदी सिपाही की ओर दृष्टि उठाई और गम्भीरता से कहा—"तुम अपनी सफाई में क्या कहना चाहते हो?"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



सिपाही की ओर देखा तो आंखें लाल, होंठ क्रोध से फड़कते हुए और तन मानों आग में जल रहा था। मौलवी का भाषण उस पर भी काम किए बिना न रहा। ऐसी दशा में भी सिपाही ने अपने आप को संभाला और नम्र, किन्तु तेजस्वी स्वर में कहना प्रारम्भ किया—

"महाराज ! मुझ पर एक मुसलमान को मारने का अपराध लगाया गया है। मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि वह अपराध सच है। मैंने एक मुसलमान सिपाही को मारा है और आगे को और भी यदि कोई मुसलमान देवमंदिर में जाकर देवमूर्ति को अपवित्र करना चाहेगा, या अपशब्द कहेगा तो मैं ऐसा ही करूँगा।" पाठक भूले न होंगे कि इसी मैदान में एक देवमन्दिर भी था। उसी में आज दोपहर को यह घटना हुई थी।

सिपाही इतना कह कर चुप हो गया। माधोजी राव बड़ी विचित्र दशा में थे। मौलवी ने जिस ढंग पर कथन किया था, उसे सिंधिया समझते थे। वे जानते थे कि नटखट मौलवी का एक मात्र उद्देश्य सेना में हिन्दुओं और मुसलमानों की खटपट करवाना, और दूध में खटाई डाल कर उसे फाड़ना है। वे यह भी जानते थे, कि एक मराठा युवक देवमन्दिर में देवता का अपमान नहीं सह सकता ? किन्तु समय बड़ा पेचीदा था। सामने प्रबल शत्रु धावा करने की तैयारी कर रहा है, इधर मुगलों की सेना की विजय पराजय का भार सिंधिया पर ही है। इस समय पर यह बुरा बखेड़ा उठ खड़ा हुआ।

सिंधिया ने मन ही मन तर्क किया कि अब क्या किया जाय ? मराठे युवक को मृत्यु दण्ड देना अन्याय होगा क्योंकि उसने भड़काये जाने पर ऐसा किया है। किन्तु उसकी गर्दन लिये बिना मुसलमानों की छाती ठण्डी नहीं होगी। वे उसके खून के प्यासे हो रहे हैं, और मुसलमान सेना पहले ही दो किश्तियों में पैर रखे बैठी थी। मुसलमान भी इस बात से प्रसन्न नहीं थे कि एक हिन्दू सरदार मुगल साम्राज्य की मशीन चलाने वाला हो और बादशाही सेनाओं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



का मुख्य सेनापति हो। एक ओर मुसलमानों को अप्रसन्न करने का भय और दूसरी ओर सत्य का खून और हिन्दुओं की अप्रसन्नता। सिंधिया के चित्त में थोड़ी देर यही विचार दौड़ते रहे। आखिर सत्य पर भय और नीति ने विजय पायी। सिंधिया ने सोचा—हिन्दू फिर भी अपने हैं, सख्ती करने पर भी बिगड़ न जायंगे। मुसलमान नाराज होंगे तो अभी डेरा डंडा उठा दुश्मन से जा मिलेंगे। दिल को छुरे की तेज धार पर रखकर सिंधिया ने जल्दी ही फैसला सुना दिया। देर के लिये समय ही नहीं था। फैसला यह था कि "हिन्दू सिपाही अपराधी है। इसे मौत का दण्ड दिया जाता है।"

इस फैसले का सुनाया जाना था कि सारा तम्बू "अल्लाहो अकबर!" के नाद से भर गया। ऐसा प्रतीत होता था कि मानों कोई बड़ा मैदान जीत लिया हो। हिन्दू सेनापतियों की गर्दनें झुक गईं और दिल ही दिल में सिंधिया को सैंकड़ों शाप देने लगे। सिंधिया दरबार बरखास्त करके शीघ्र ही उठ गया और पास बैठे हुए सेनापतियों को लड़ाई के लिये तैयारी करने की आज्ञा सुना कर अपने तम्बू में चला गया।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# सोलहवां परिच्छेद

## कुमन्त्रणायें

"चचा साहिब ! आप का यह कहना ठीक है कि आज सिंधिया ने हिन्दुओं की तरफदारी नहीं की, किन्तु क्या इस एक बात से हम पुरानी सभी बातें भूल जायं ? क्या हम यह भूल जायं कि हम मुसलमान हैं और वह हिन्दू हैं ? यह भी न सही । क्या हम यह भूल जायं कि हम मुगल हैं और वह मरहठा हैं ? क्या बादशाह औरंगजेब के हम-ईमान होकर हम शिवाजी के हम-ईमान पर कभी भरोसा कर सकते हैं ?"

मुकद्दमे का दरबार समाप्त हुए लगभग आधा घंटा हो चुका है। डेरों से कुछ दूर सायंकाल की धुंध में दो मुसलमान सिपाही आपस में बातचीत कर रहे हैं। बड़ा प्रौढ़ वय का है और छोटा अभी चढ़ती जवानी में है । जवान सिपाही दूसरे को उपर्युक्त वाक्य कह रहा है। दोनों एकान्त में टहल रहे हैं । बड़े ने छोटे से कहा—

"सुनो इस्माईल ! इस प्रकार झगड़े पर उतारू होना अच्छा नहीं। अच्छा यह तो बताओ कि अगर सिंधिया शिवाजी का हम-ईमान है तो क्या राजपूत हजरत मुहम्मद के अनुयायी हैं ? फिर मरहठों का साथ छोड़ कर राजपूतों का साथ देने में क्या भलाई है ? और यह भी तो सोचो कि सिंधिया का भी वही मालिक है, जो हमारा है । हम भी उसी बादशाह के हुक्म से यहां आये हैं, जिसके हुक्म से सिंधिया आया है । हमने मुगल बादशाह का नमक खाया है । आड़े वक्त नमकहरामी करना अच्छा नहीं होगा ।"

२

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



यह सिपाही मुगल सेना का सेनापति मुहम्मदबेग था। उसके भतीजे इस्माइलबेग ने उत्तर दिया—

"चचा साहिब! यह ठीक है कि राजपूत भी हिन्दू हैं—और काफिर हैं। शैतान प्रताप इन्हीं लोगों में पैदा हुआ था। किन्तु एक बात तो देखिये। प्रताप को छोड़कर राजपूत लोग हमेशा मुगल बादशाहों के गुलाम बन कर रहे हैं, और मरहठे हमेशा दुश्मन बन कर। अगर हम राजपूतों का साथ देते हैं तो उनसे ऊपर होकर रहेंगे। वे हमारी इज्जत करेंगे, क्योंकि वे हमारी अधीनता कबूल कर चुके हैं। लेकिन हम मरहठों के साथ जब भी रहेंगे, नीचा होकर रहना पड़ेगा। नमकहरामी का इसमें सवाल ही क्या है? राजपूतों के साथ मैं इसलिये नहीं मिलना चाहता कि मुझे बादशाह से कोई रंजिश है। मैं तो समझता हूँ कि हमारे बादशाह काफिर के पंजों में फँस गये हैं। दुनिया जानती है कि शाह आलम इस वक्त सिंधिया के हाथ की गुड़िया हैं। सिंधिया जैसे चाहता है, उन्हें नचाता है। राजपूतों से मिलकर मैं चाहता हूँ कि अपने बादशाह को इस काफिर के चंगुल से बचाऊँ। इसमें भला नमकहरामी क्या है?"

मुहम्मद—"लेकिन एक बात तो कहो। तुम सिंधिया से इतने नाराज क्यों हो? देखो, आज उसने मुसलमानों को खुश करने के लिये एक हिन्दू को कुर्बान कर दिया। क्या अब भी तुम्हारा जी हल्का नहीं हुआ?"

इस्माईल—"ठीक है, उसने हम लोगों को खुश करने के लिए आज एक भाई को कुर्बान कर दिया है। लेकिन क्या यही सिंधिया कल अपना भला देखेगा तो अपने भाईयों को खुश करने के लिये हम सब को कुर्बान न कर देगा? मैं कहता हूँ कि सिंधिया बेईमान है, उसने आज ईमान छोड़कर फैसला किया है। जो आदमी अपने भाइयों के साथ बेईमानी कर सकता है, क्या वह दूसरों के साथ बेईमानी करने में कसर छोड़ेगा? ऐसे

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



आदमी का जितनी जल्दी हो सके, साथ छोड़ देना चाहिये। आमतौर पर भी मुसलमानों को सिंधिया से बहुत शिकायतें हैं।"

मुहम्मद—"आज की बात जाने दो, इसके दोनों मतलब निकल सकते हैं। लेकिन यह तो बताओ कि आम तौर पर तुम्हें सिंधिया से क्या शिकायत है? जहां तक मैं जानता हूँ, वह हमेशा हम लोगों की इज्जत करता है।"

इस्माईल—"यही तो कमी है, चचा साहिब! आप तस्वीर के दोनों पहलू नहीं देखते। क्या सिंधिया से हमें कोई शिकायत नहीं? सिंधिया ने बहुत से मुसलमान सरदारों की जागीरें जप्त करके अपने भाईबन्दों में बांट दी हैं, क्या यह शिकायत की जगह नहीं है? आप अपनी ही कहानी याद कीजिये। जब आप रघूगढ़ के किले को फतह करने गए थे तब सिंधिया ने आपको वहां से वापिस बुलवाया और सारी फौज तोड़ देने के लिए कहा? यह शिकायत का मौका नहीं है, तो और कौन सा होगा?

मुहम्मद—"ये छोटी छोटी बातें हैं और ये सख्तियां सिर्फ मुसलमानों पर ही नहीं की गई हैं, हिन्दुओं पर भी सिंधिया ने ऐसी ही कई सख्तियां की हैं। मालगुजारी का महकमा राजा नारायणदास के पास था। सिंधिया ने उससे लेकर शाह निजामुद्दीन को दे दिया। तब क्या हिन्दुओं को भी उससे नाराज हो जाना चाहिए?"

इस्माईल—बेशक, हिन्दुओं को उससे नाराज हो जाना चाहिए। मैं हिन्दू होता तो आज की बात से उसके खून का प्यासा हो जाता। जहां तक मेरे कान सुन सकते हैं, आज हिन्दू फौज में भी शोर सुनाई दे रहा है।"

मुहम्मद—"फिर भाई! तुम बताओ क्या चाहते हो? क्या मैदाने-जंग में अपने साथियों को छोड़कर दुश्मन से जा मिलें? ऐसे मौके पर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



राजपूत भी हमें क्यों लेने लगे! और वहां जाकर भी हमें इज्जत नसीब होगी–इसका क्या सबूत है?"

इस्माईल—"हम राजपूतों से इज्जत हासिल करने नहीं जाते हैं, इज्जत तो हम अपनी तेग के जोर से लेंगे। हम तो काफिर सिंधिया का सिर नीचा करने जाते हैं—और खुदावन्द तआला ने चाहा तो हमारी इच्छा पूरी होगी।"

मुहम्मद—"मान लो तुम्हारी बात स्वीकार कर ली जाय तब यह तो बताओ कि उसके लिये मौका कौन सा ठीक होगा? क्या अभी भाग जाना फायदेमन्द हो सकता है? यह मुश्किल है। सारी फौजें तितर बितर हो रही हैं, उनके इकट्ठा होने में बात खुल जाने का अन्देशा है।"

इसके पीछे इब्राहीम ने कोई सलाह बताई जो मुहम्मद ने स्वीकार की, लेकिन वह गुप्त थी अतः उसे हम नहीं सुन सके।

+ + +

अभी रात पहर भर ही गई होगी। सेनाओं के डेरे में अभी तक शांति नहीं हुई थी। पहरे वाले पहरों पर जम रहे थे, और शेष सिपाही भोजनादि से निवृत्त होकर आराम करने की तैयारी में थे। आज सांयकाल की घटना की चर्चा के कारण कुछ अस्वाभाविक खलबली भी प्रतीत हो रही थी। दो दो चार चार की मण्डलियां जुदा २ बैठ कर टिप्पणियां कर रही थीं। कोई मुसलमानों को गालियां दे रहा था, तो कोई सिंधिया पर क्रोध निकाल रहा था। मुसलमानों की पंचायतों में आज खुशी के शेर पढ़े जा रहे थे, और काफिरों की हार की काफी चर्चा थी।

इस प्रकार विस्तृत सेना के उपनिवेश में थोड़ी थोड़ी बातों का मिलकर एक गहरा शब्द उत्पन्न हो रहा था, जो दूर दूर तक दिशाओं में फैल रहा था। वह शब्द वहां भी कुछ तक सुनाई दे रहा था, जहां डेरे के एकांत में एक छोटी सी छोलदारी में अकेले बैठे हुये दो आदमी परस्पर कुछ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



बातें कर रहे थे। इन दोनों आदमियों को इस छोलदारी में बैठे हुये अभी अधिक देर नहीं हुई, लगभग पांच ही मिनट हुए होंगे। छोलदारी में किसी प्रकार का सामान नहीं था, केवल एक छोटी सी चटाई पड़ी थी, कोने पर एक छोटा सा दीपक जल रहा था, जो उस एकान्त और सूनी सी तम्बोटी के सूनेपन को और भी बढ़ा रहा था। छोलदारी का दरवाजा पर्दा डाल कर ढंक दिया गया था जिसके कारण बाहर से आने वाले के लिए वह दीपक, उसके अन्दर बैठे हुए दो आदमी, और नीचे बिछी हुई चटाई—यह सभी कुछ अदृश्य सा हो रहा था। कोई यह भी अनुमान न कर सकता था कि यहां कोई है भी, यदि तम्बोटी से कोई पन्द्रह बीस हाथ की दूरी पर एक सिपाही एक हाथ से घोड़ा थामे और दूसरे में नंगी तलवार लिए न खड़ा होता। नंगी तलवार बिना कहे ही बतला रही थी कि आगे जाने का रास्ता बन्द है।

सब का रास्ता बन्द हो, परन्तु उपन्यास लेखक का रास्ता बन्द नहीं हो सकता, हम तो वहां पहुँच ही जायंगे। उन दोनों गुप्त मन्त्रणाकारियों को देखेंगे, और उनकी बातें भी सुनेंगे। जो लोग ऐसी गुप्त रीति से मंत्रणा करते हैं, उनकी भयानकता निश्चित होती है। ऐसे भयानक आदमियों की मंत्रणा अवश्य सुननी चाहिये।

जब हमारी कल्पना वहां पहुंची तो दोनों में से छोटा बोल रहा था। यह लगभग २४ बरस का जवान था। लम्बा कद, भरा हुआ चेहरा, जोशीली आंखें, और होठों में साहस टपक रहा था। इस युवक का नाम इस्माईल बेग था। यह हमारा पूर्व परिचित नाम है। वह कह रहा था—

"अजी साहिब! पहले दांव में जैसा माल मारा है, अगर आगे भी ऐसा ही मिलता रहा तो कुछ ही दिनों में काम बन जायगा। काफिरों के सरदार को लाल किले से बाहर कर देंगे, और फिर एक बार ईमान का डंका चारों तरफ गूंज उठेगा। पहले तो चचा साहिब बहुत आगा पीछा करने

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



लगे, किसी तरह मानते ही नहीं थे, लेकिन आखिरकार लाजबाव होकर सीधे रास्ते पैर आ गये और तुतलाती सी जबान से 'अच्छा' कह दिया । उधर हिन्दुओं में भी खूब खलबली मच रही है। वे भी सिंधिया के खून के प्यासे हो रहे हैं।"

अभी तक दूसरा योद्धा चुप था। इस समय हम नहीं बतायेंगे कि वह कौन है। इतना कहना ही पर्याप्त है कि उसकी आयु लगभग ३० साल की होगी, और शारीरिक डील डौल से इस्माईल की अपेक्षा अधिक बलवान और मुस्तैद प्रतीत होता था। वह बोला—

"खूब किया इस्माईल, खूब किया। अब मुगल और पठान मिल जायंगे, तब काफिर को इस जमीन पर जगह मिलनी भी मुश्किल होगी। तुमने अपने चचा को मना लिया, सो बड़ा काम किया। अब यह कहो कि सिंधिया के हार जाने के पश्चात क्या किया जायगा? क्या इस वक्त सिंधिया को ऐसी शिकस्त दी जा सकती है कि वह एक साल भर सिर उठाने के लायक न रहे? मेरी राय में तो इस पहलवान को पहिली ही बार में बिल्कुल चित्त करना मुश्किल है। इस लड़ाई में हराकर दूर तक और देर तक इसका पीछा करना पड़ेगा। उसका भी तो कोई इन्तिजाम कर लेना चाहिये।

इस्माईल—"ठीक है खां साहिब! उसका पीछा किये बिना काम न चलेगा। यह काम आप अपने ऊपर लें!"

"और दिल्ली का काम कैसे होगा?"

इस्माईल—"वह आप मेरे सुपुर्द कीजिये। खुदा ने चाहा तो बड़ी खूबी से निबटा दूँगा।"

"इसमें एक गड़बड़ होगी। मेरे साथ इस वक्त बहुत थोड़ी-करीबन ५०० के फौज है। उसे लेकर सिंधिया की बड़ी फौज का पीछा करना बहुत मुश्किल है। तुम्हारे पास पूरी सेना है और राजपूत साथी भी होंगे।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



तुम्हीं उसका पीछा करो तो अच्छा होगा। दिल्ली का काम, मैं खतम कर लूंगा।"

इस्माईल—"यह तो ठीक न होगा। अच्छा यों सही कि जब तक मैं सिंधिया का फैसला करके लौटूं तब तक आप चुप रहें। दिल्ली बेशक चले जायं, लेकिन वहां जाकर कोई मामला न छेड़ें। वह काम इतना भारी है है कि अकेले से होना मुश्किल है। उसमें बहुत से खतरे हैं, जिनका सामना दो की जगह चार हाथ ही भली भांति कर सकेंगे।"

दूसरा सिपाही कुछ विचार में पड़ा। वह कुछ सोचकर बोला—

"अच्छा यों ही सही। तुम्हारे लौटने तक मैं टोह लगाता रहूंगा। कोई काम नहीं शुरू करूंगा। यह बात पक्की ठहरी। लेकिन तुम सिंधिया को आधे रास्ते में छोड़कर वापिस न आना। नहीं तो बीच में ही सारा काम धरा धराया रह जायगा। दांव बड़ा भारी है, सीधा पड़ गया तो हम दोनों का मार्ग निष्कंटक हो जायगा।"

इस्माईल—"इससे आप खातिर जमा रखें। सिंधिया को बारह पत्थरों से बाहर करके आऊंगा, लेकिन एक और बात का फैसला अभी हो जाना चाहिये। हम दोनों कौन से ओहदे लेंगे?

"इसके फैसला करने की क्या जल्दी है। दोनों अपने २ काम बांट लेंगे। एक वजीर बन जायगा, दूसरा सिपहसालार हो जायगा। अभी से यह झगड़ा उठाने से क्या फायदा?"

इस्माईल—"खां साहिब ऐसे मामलों का पहिले ही तय कर लेना अच्छा होता है।"

"अच्छा, फिर जंग खतम होने दो। अब मुझे भी जाने की जल्दी है। लड़ाई दो तीन दिनों में पूरी हो ही जायगी। उसके पीछे सब बातें तय कर डालेंगे। 'सहज पके सो मीठा होय।' धीरे धीरे सभी कुछ ठीक हो जायगा। तुम किसी तरह की फिक्र मत करो। मैं इस वक्त जाता हूं २ जरा सोच समझ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



करें काम करना। कोई भी पासा उलटा नहीं पड़ना चाहिये। इ दो में से एक चीज मिलेगी, तख्त या तख्ता। अगर सारे दांव ठीक बैठ गये तो एक बार फिर औरंगजेब के दिन रियाया को याद आ जायंगे। हां— एक बात पूछना भूल गया। तुम लोग अपनी फौज को लेकर किस मौके पर राजपूतों से जा मिलोगे ?"

इस्माईल—"अगर मेरा बस होता तो इसी वक्त चल देता। लेकिन अब तो चचा का मुंह ताकना पड़ता है। उनकी राय है कि एक दिन रंग ढंग देखा जाय, और दूसरे दिन होशियारी से जा मिलें। कल शाम या परसों सुबह तक हम लोग दुश्मन से जा मिलेंगे।"

"यह भी अच्छा है, इसमें सिंधिया को और भी सख्त चोट लगेगी। अच्छा तो फिर अब मैं जाता हूं। कल तो नहीं, हां, परसों रात को इसी वक्त शायद फिर मुलाकात होगी। मैं यहां बिल्कुल छुप कर आया हूं— जिसमें किसी को किसी तरह का शक न हो।"

यह कहता हुआ वह सिपाही उठ खड़ा हुआ। इस्माईल भी साथ साथ हो लिया। तम्बोटी का दिया बुझा दिया गया और दोनों सिपाही वहां से निकल घोड़े के पास आये। वहां जाकर इस्माईल का साथी घोड़े पर सवार हो गया, और यथोचित सलाम के उपरान्त एक ओर को अंधेरे में चल दिया। घोड़ेवाला पहरेदार भी उसके पीछे पीछे चला।

इस्माईल थोड़ी देर तक तो वहां खड़ा हुआ कुछ सोचता रहा। एक बार मुस्कराया, और दूसरी बार माथे पर त्यौरियां चढ़ाई। अन्त में अनायास ही कह उठा—"यहां भी इस्माईल है—कोई और नहीं। मैं जानता हूं कि तू मेरे से बढ़कर धूर्त है, लेकिन मेरे हाथ में तलवार है, और तलवार का भयंकर वार है। देखा जायगा। अभी तो तुझे मेरी जरूरत है और मुझे तेरी जरूरत है। काम हो जाने पर देख लूंगा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# सत्रहवां परिच्छेद

## दो पुराने दोस्त

वह मुसलमान सिपाही, जो जाति का पठान था, घोड़े पर चढ़ा हुआ जा रहा था। अंधेरे की चादर में से सूई निकालना भी मुश्किल दीखता था। घोड़े की गर्दन भी भली प्रकार दिखाई नहीं देती थी, रास्ते की कौन कहे। पठान सवार रास्ता भूल गया, और पीछे आने वाले पैदल की प्रतीक्षा करने लगा। पैदल के आने पर उसने कहा कि "शायद हम रास्ता भूल गये हैं—इधर तो कुछ डेरा सा दिखाई दे रहा है।"

पैदल सिपाही कुछ देर तक देखता रहा। उसकी भी यही राय ठहरी कि "रास्ता भूल कर हम राजपूत सेना के डेरे के पास आ पहुँचे हैं।" दोनों की सम्मति मिल जाने पर सवार ने लगाम फेरी और बांये हाथ की ओर चलने लगा। स्वामी का घोड़ा आज्ञा पाते ही मुंह मोड़ चौकन्ना हो कर निर्दिष्ट दिशा की ओर चल पड़ा।

थोड़ी दूर तक घुड़सवार और पैदल रास्ता ढूंढ़ते हुए चलते गये। दो शत्रुओं के डेरों के बीच में से गुजरना खतरे का काम है। न जाने किधर का पहरेदार उधर आ निकले और दुश्मन समझ कर आवाज दे बैठे। कुछ दूर तक रास्ता ढूंढ़ने पर भी कोई चिन्ह नजर न आये। तब घुड़सवार ने यही निश्चय किया कि अंधेरे में इस तरह मार्ग मिलना कठिन है, चलो फिर डेरे की ओर ही चलें, किसी सिपाही से दिशायें पूछकर अभीष्ट दिशा की ओर चल देंगे। यह सोच कर उसने घोड़े की बाग बादशाही डेरों की ओर मोड़ी।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



कोई मील भर रास्ता गुजरा होगा, तब बादशाही डेरों के चिन्ह दिखाई देने लगे। पास ही बाईं ओर को एक मकान सा प्रतीत होता था। सवार उसी ओर झुका।

पास जाने पर मकान के ऊपर एक नोकदार छतरी सी प्रतीत हुई, जिसे देख कर सवार ने अनुमान किया कि यह कोई मन्दिर होगा। तब वहां कोई न कोई आदमी भी जरूर रहता होगा और वह रास्ता बतलाने में इन्कार न करेगा। यही सोचकर सवार ने पैदल सिपाही को कहा— "जाकर देखो कि इस मंदिर में कोई आदमी है या नहीं।"

पैदल सिपाही कुछ आगे बढ़ा और मंदिर का दरवाजा ढूँढ़ने लगा। इसी समय सवार को ऐसा प्रतीत हुआ, जैसे थोड़ी दूर एक वृक्ष के पास से कोई आदमी गुजर रहा है। उसने और जरा ध्यान से देखा तो उसे प्रतीत हुआ कि वह आदमी उसी की ओर आ रहा है। सवार उस ओर अधिक ध्यान से देखने लगा और सावधान हो गया। वह आदमी कुछ दूर तक तो आया लेकिन पास आने से पूर्व ही खड़ा हो गया। दोनों आदमी एक दूसरे की ओर ध्यान से देख रहे थे। कोई भी नहीं जानता था कि वह मित्र के सामने खड़ा है या शत्रु के सामने।

थोड़ी देर तक दोनों खड़े रहे, उसके बाद नया आगन्तुक न जाने क्या सोच कर एक ओर को चल दिया। सवार के चित्त में संदेह की लहरें उठने लगीं। यह कौन आदमी है? इस अंधेरी रात में यह मेरे पीछे पीछे क्यों आ रहा है? यह कहीं सिंधिया का कोई गुप्त दूत तो नहीं? कहीं इसने मेरी इस्माईल से बातचीत तो नहीं सुन ली? सुनकर इसने मेरा पीछा किया हो, तब तो सारा भण्डा फूट जायगा। इस प्रकार के अनेक संकल्प विकल्प करनेमें सवार को आधा मिनट भी न लगा होगा। बस उसने निश्चय कर लिया कि चाहे यह कोई हो, इसे यहां से जाने नहीं देना चाहिये। यह सोच कर सवार ने उसकी ओर अपना घोड़ा बढ़ाया और उसके पास पहुँच गया। सवार को

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



पास आते देखकर वह आगन्तुक भी ठहर गया और सावधानी के साथ के आने की प्रतीक्षा करने लगा।

आगन्तुक ने समझा कि शायद यह कोई पहरेदार है और मुझसे कुछ दर्याफ्त करेगा। वह सवार के बोलने की प्रतीक्षा करने लगा। उसका ध्यान सवार के हाथ की ओर नहीं गया—जिसमें लम्बा बर्छा पकड़ा हुआ था, और धीरे २ पीछे को जा रहा था। आगन्तुक क्षणिक प्रतीक्षा करने के पीछे स्वयं कुछ कहा ही चाहता था कि सवार का बर्छा ऊपर को उठा और सावधान होने से पूर्व ही आगन्तुक की छाती पर आ जमा। इस आंख झपकन में आगन्तुक जितनी फुर्ती कर सकता था, उसने की। फुर्ती का परिणाम यह हुआ कि बर्छा ऐन सामने छाती पर न पड़कर बगल में लगा। बर्छे की चोट को आगन्तुक का हृष्ट पुष्ट शरीर भी न संभाल सका। उसने ऊँचे स्वर से इतना ही चिल्ला कर कहा कि "आह! पापी ने अंधेरे में वार किया" और धड़ाम से भूमि पर गिर पड़ा।

आगन्तुक के ऊँचे शब्द से रात्रि की निस्तब्धता भग्न हो गई। मंदिर में सवार के सिपाही ने रास्ता पूछने के लिए पुजारी को जगाया था। पुजारी और सिपाही दोनों ने ही उस शब्द को सुना और हाथ में जलती हुई बत्ती लेकर बूढ़ा पुजारी आगे २ और सिपाही पीछे २ आ पहुँचे। मन्दिर का द्वार सर्वथा समीप ही था। रोशनी आती देख कर पहले तो सवार का विचार हुआ कि वह एक ओर छुप कर खड़ा हो जाय। किन्तु उसने जब बूढ़े पुजारी को देखा तो सन्देह छोड़ दिया, बूढ़े पुजारी से उसे किसी प्रकार के भय की आशंका न थी। आगन्तुक घायल हो चुका था, उससे डर ही क्या था? वह कौन है यह जानने की सवार के हृदय में प्रबल इच्छा थी। इस लिये वह वहीं खड़ा रहा।

रोशनी पास आई और पहले घायल के मुंह पर पड़ी क्योंकि सवार कुछ दूर खड़ा था। सवार घायल की सूरत देखते ही न जाने क्यों एकदम चौंक

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



उठा, मानों कोई पुरानी बात याद आ गई। उसे और अच्छी प्रकार देखने के लिए वह आगे को बढ़ा और स्वयं भी रोशनी के पास आ गया। घायल की बगल में से रुधिर जारी था और मूर्च्छा की अवस्था समीप ही आ रही थी, लेकिन आंखें खुली हुई थीं। घायल की आंख सवार पर पड़ी— तो वह भी मानों तड़प सा उठा। न जाने अकस्मात घायल में कहां से बल आ गया कि घाव की कोई पर्वा न करके क्षण भर में खड़ा हो गया और वेग से सवार की ओर झपटा, किन्तु सवार तक पहुंच न सका, और सिपाही ने रास्ते में ही पकड़ लिया।

ठीक इसी समय दूर से मुगल सेना के दो पहरेदारों ने आवाज दी कि "यह रोशनी कैसी है?" "ये कौन खड़े हैं।" सवार अब वहां न ठहर सका, और घोड़े को एड़ लगा दूसरी ओर रवाना हो गया। पैदल सिपाही भी घायल को छोड़ उसके पीछे पीछे नौ दो ग्यारह हुआ।

दूसरे दिन प्रातः काल रात का घायल आगन्तुक एक चटाई पर पड़ा था। रात का घाव गहरा नहीं था, बांध देने से खून रुक गया था और आधी रात के लगभग गहरी नींद आ गयी थी। पौह फूटने का समय था और उदित होता हुआ भास्कर मैदान में पड़ी हुई शत्रु सेनाओं को सन्नद्ध देखने की इच्छा से पूर्ववर्ती धुन्ध को घायल कर रहा था। अभी तक धूप के टुकड़े आकाश के रास्ते में ही विहार कर रहे थे और भूमि पर नहीं उतरे थे। घायल आगन्तुक आधी नींद और आधी जागृति की दशा में पड़ा हुआ सपने भी देख रहा था और मंदिर के पूजा स्थान में घूमती हुई झाड़ू का भी शब्द सुन रहा था। सपना शृंखलाबद्ध नहीं था, टूटा फूटा टुकड़ों के रूप में था। यह नदी का किनारा है और किनारे से कुछ दूर पानी में एक मछली तैर रही है। मछली से डर कर एक स्त्री चिल्ला चिल्ला कर कह रही है कि "मुझे बचाओ, मुझे बचाओ, मछली मुझे खाये जाती है।" घायल आगंतुक इस अबला को बचाने के लिये पानी में घुसने लगा,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



बस पानी का छूना था कि सपना टूट गया । सपना तो टूट गया, परन्तु आंखें नहीं खुलीं, क्योंकि रात को खून बह जाने से निर्बलता अभी गयी नहीं थी । दिमाग बहुत शिथिल हो रहा था और चेतना भली प्रकार नहीं चमकी थी ।

आंखें बन्द हो रहीं और दूसरा सपना प्रारम्भ हो गया । एक मुसलमान सिपाही उसी नदी वाली सुन्दरी को बगल में दबाये उड़ा जा रहा है और वह सुन्दरी रो रही है, चिल्ला रही है । आगन्तुक ने कस के तीर मारा, वह मुसलमान को जाकर लगा । तीर लगते ही न वह मुसलमान रहा और न वह अबला । दोनों कहीं आकाश में विलीन हो गये । आकाश में एक काला बादल सा आ गया और क्षण भर में धुएं की भांति चारों ओर छा गया । आगन्तुक की दृष्टि उत्तर दिशा में पड़ी तो बादलों के बीच में उसे उसी मुसलमान का मुंह फिर दिखाई दिया । इतने ही में दक्षिण दिशा के बादल में से एक सुरीली आवाज आई 'हा भगवान् !' आगन्तुक की दृष्टि उसी ओर उठ गई । उधर जो कुछ देखा, उससे आगन्तुक का शरीर कांप गया । भय से कांपा या आवेग से—इसका निर्णय हम नहीं करेंगे ।

'हा भगवन' यह शब्द हुआ और न जाने क्या वस्तु आगन्तुक के पास से सरक गई । सोये हुए आगन्तुक ने शब्द सुनी और जागते हुए आगन्तुक ने किसी के पैर की आहट और कपड़े का सरकना सा अनुभव किया । आगन्तुक बिल्कुल सचेत हो गया था और आंखें खुल गई थीं । आंखें खुलने पर उसकी दृष्टि सीधी एक द्वार पर पड़ी जिसमें से एक लम्बा सा चोला बाहर को जा रहा था । वह केवल कपड़वाले व्यक्ति के बाहर निकलते हुए चोले को देख सका और कुछ नहीं ।

चोला चला गया, साथ ही आगन्तुक का चित्त भी चला गया । क्या यह शब्द इसी चोले का था, आह ! क्या मैंने सपने में भी सत्य शब्द सुना था ? या केवल धोखा ही था ? जरूर धोखा ही होगा । कहां जयपुर और कहां

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



सुजानपुर, कहां यह रण भूमि और कहां मेरी....। हाय! फिर क्या मुझे सचमुच ही धोखा हुआ? नहीं, धोखा नहीं होगा। शब्द चाहे आकाश से आया हो चाहे पाताल से, पर था बिल्कुल वैसा ही, वैसा ही सुरीला, वैसा ही मीठा, वैसा ही मधुर,। यमुना के किनारे दलदल में से निकाली जाकर भी तो उसने ऐसे ही गले से बातें की थीं। पर वह गला यहां कैसे आया? ओह जाना, रात को गिरने से मेरे सिर में भी चोट लगी थी, उसी से यह भ्रम उपस्थित हुआ है। यह सब कुछ नहीं, भ्रांतिमात्र है।

भ्रांतिमात्र है, यह निश्चय करने के अनन्तर वह आगंतुक जो हमारा वही पूर्व परिचित तेजसिंह है और राजा का काम करने के लिये रात को जाता हुआ रास्ते में ही घायल किया गया है, अपनी दशा पर विचार करने लगा। अपनी दशा का विचार आते ही उसके माथे पर चिन्ता की रेखा पड़ गई, और मुँह से दुःख की आह निकल पड़ी। आह! राज कार्य पूरा न हो सका। जो पत्र शत्रु की सेना में पहुंचाना था वह अभी गले से ही बंधा हुआ है। वह पत्र रात ही रात में अपने स्थान पर पहुँचना चाहिये था, किन्तु नहीं पहुँच सका। कार्य नहीं हो सका, इसका तेजसिंह को भारी दुःख हुआ। उसका हृदय टुकड़े २ होने लगा। हा! महाराजा प्रतापसिंह क्या कहेंगे? वे ही कहेंगे कि तेजसिंह ने धोखा दिया, वह विश्वास पात्र नहीं था, वह कायर था। न जाने उस पत्र में क्या है? कोई न कोई बड़ी आवश्यक बात होगी। आज युद्ध प्रारम्भ होगा-शायद उसके संबंध में ही कोई बात हो। ऐसा न हो कि इसी पत्र के न पहुंचने के कारण हमारे पक्ष को कोई हानि हो। अब क्या करूं? उठने की ताकत नहीं है कि कोई उपाय कर सकूं।

तेजसिंह फिर सोचने लगा—"रात मुझे किसने घायल किया था। उसका चेहरा तो कहीं देखा हुआ है। ऐसा प्रतीत होता है मानों पूर्व जन्म में देखा हो, हां अवश्य ऐसा ही है। याद नहीं आता कि कब देखा था, और फिर मुझे बचाया किसने? यह स्थान कौन सा है जिसमें पड़ा हूं? यह तो

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



छोटी सी कोठरी है—इसमें न जाने कौन रहता है ? हां—वही चोले वाली या चोले वाला रहता होगा।

तेजसिंह देर तक की चिन्ता से फिर निर्बलता अनुभव करने लगा। निर्बलता से फिर कुछ ऊंघ सी भी आने लगी। उसी अर्ध निद्रा की अवस्था में फिर हल्के हल्के शब्द से पूछने लगा—यह चोले वाली या चोले वाला कौन है ? वह शब्द तो परिचित सा था। हां, हां वही शब्द तो था। नहीं, मेरा भ्रम है। भ्रम, नहीं, सत्य है।

निर्बलता बढ़ गई, और भ्रम सत्य के बीच में डुलायमान तेजसिंह बेहोश सा हो गया। आंखें फिर बंद हो गईं।

---

# अठारहवां परिच्छेद

## प्यारी ! तू यहां कैसे ?

तेज सिंह देर तक उसी मूर्छित दशा में पड़ा रहा। धीरे २ उसे कुछ अस्पष्ट सी चेतना आने लगी। वह अपनी सत्ता का अनुभव करने लगा। अपनी सत्ता के साथ ही साथ उसे कुछ और भी ज्ञात होने लगा। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि अब वह सख्त चटाई पर नहीं, पर किसी चारपाई पर पड़ा है। सिर के नीचे भी कोई वस्तु प्रतीत होने लगी–परन्तु तेजसिंह यह न समझ सका कि वह क्या है। उसे यह भी प्रतीत हुआ कि उसके मुंह का स्वाद बदला हुआ है। अवश्य कोई वस्तु उसके मुंह में डाली गई है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



कुछ देर तक इतनी ही चेतना रही। धीरे धीरे अधिक अनुभव होने लगा। उसे प्रतीत हुआ मानों उसके हाथ को कोई छू रहा है—हाथ को छूने के पीछे किसी ने उसके दिल पर हाथ लगाया, पर फिर मानों कुछ कहा और एक कपड़े से तेजसिंह का मुह पोंछ दिया। चेतना और अधिक चमक उठी और आंख खोलने का सामर्थ्य हुआ। उसी समय यह भी भान हुआ कि उसके सिर के नीचे कपड़े का तकिया नहीं बल्कि किसी व्यक्ति की गोद है। उसका सिर किसी की गोद में रखा हुआ है।

तेजसिंह की आंखें खुल गईं, और खुल कर ऊपर को उठीं। आखों ने जो देखा, वह न जाने क्या था, पर तेजसिंह की आंखे झट से बन्द हो गईं। वह आंखों पर विश्वास न कर सका। बन्द करके कुछ टूटे फूटे शब्द मुंह से निकले, "क्या-सपना! नहीं" ये अस्पष्ट से शब्द सुनाई भी पड़े। आंखें फिर खुल गईं, और उन आंखों से जा मिलीं, जो पहले ही तेजसिंह के मुह पर लगी हुई थीं।

प्रेम बिजली है या चुम्बक है—इस टेढ़े प्रश्न का उत्तर हम यहां न देंगे। हां-इतना हम कहेंगे कि प्रेम एक जीवन बूटी है, जो जड़ में भी चेतना डाल सकती है। न जाने तेजसिंह की निर्बलता कहां गई और शक्ति और स्फूर्ति का संचार कहां से हो गया?

प्रेमी पाठको! इसके आगे हम कुछ नहीं लिखेंगे। तुम में से जो सचमुच प्रेमी हों, और प्रेम के मर्म को जानते हों, स्वयं ही समझ जाओगे कि आगे क्या हुआ। तुम में से जो सच्चे प्रेमी हों, और प्रेम की पवित्रता को जानते हों, हमें आज्ञा भी न दोगे, कि दो चिरविमुक्त प्रेमियों के मिलनोत्सव के समय उपस्थित रहें। वह दृश्य देवताओंके देखने का है, मनुष्योंके देखने का नहीं। प्रेमी भी कैसे? जिनकी प्यास आज तक एक बार भी नहीं बुझी थी। दूरता ने जिन्हें आज तक बांध रक्खा था। आज इस टूटे फूटे देव मंदिर के पास, एक सूने घर में उनका मिलन महोत्सव देखने के हम अधि-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



कारी नहीं हैं। चलो पाठक! बाहिर चलें और प्रेमियों को निःसंकोच मिलने दें।

हम बाहर जा रहे थे, जाते जाते इतना हमारे कानों में पड़ गया "प्यारी! तू यहां कैसे?"

# उन्नीसवां परिच्छेद

## लाल सोठ का युद्ध

उस प्रातःकाल से ही युद्ध की तैयारियां होने लगीं। सन् १७८७ ई० के मई मास की ३० तारीख थी। इस महीने में सारे देश में ही गर्मी अपने पूरे जोर पर होती है। फिर राजपूताना और उसमें भी जयपुर। भयंकर गर्मी के सामान हो रहे थे। किन्तु ताजधारियों को गर्मी सर्दी कहां? वहां तो स्वार्थ और कोरा स्वार्थ है, वहां सिपाहियों के दुःख सुख की परवाह नहीं होती। वीर सिपाही लड़नेमें गर्मी सर्दी की परवाह किया ही नहीं करते। सूर्योदय से पहिले ही दोनों कैम्पों में सलाह प्रारम्भ हो गई थी।

सिपाही अपनी वर्दियां कसने लगे, सेनाध्यक्ष शीघ्र तयार होने की आज्ञायें देने लगे, घोड़े काठी के बन्धन में बंधकर हिनहिनाने लगे और गर्दन हिलाकर असहमति भी प्रकट करने लगे, किन्तु फिर सवार से पुचकारने की रिश्वत खाकर गर्दन नीची कर पांव से भूमि कुरेदने लगे, और तोपची लोग लम्बी लम्बी लोहे की छड़ों से अपनी तोपों के पेट साफ करने लगे। राजपूत सेना के प्रधान मुखिया महाराज प्रतापसिंह अपने शानदार घोड़े पर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



सवार होकर सेना के तैयार होने से पूर्व ही कैम्प में चक्कर लगा रहे थे, और उपसेनाध्यक्षों को आज्ञायें देते जाते थे। जाते जाते सामने से सेनापति रामसिंह घोड़ा बढ़ाये आते हुए दिखाई दिये। महाराज कुछ ठहर गये। रामसिंह ने नियमपूर्वक प्रणाम किया और पास आकर खड़ा हो गया। उन में इस प्रकार बातचीत होने लगी—

प्रतापसिंह— "क्यों रामसिंह! कल जो चिट्ठी भेजी थी, उसका जवाब तो अभी तक नहीं आया? आदमी तो चतुर मालूम देता था–फिर न जाने क्या दुर्घटना हुई। उसकी आंखें देखकर तो यही ज्ञात होता था कि हमारा काम भली प्रकार हो जायगा। फिर न जाने क्या कारण हुआ?"

रामसिंह— "अन्नदाता! तेजसिंह को मैं देर से जानता हूं। मैं भी आज रात तक यही जानता था कि उस जैसा विश्वास पात्र और कोई नहीं है। इसी लिये महाराज! इतना जरूरी काम करने के लिये मैं उसे आपकी सेवा में लाया था। किन्तु मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मुझसे भूल हुई। आधी रात गए मेरे पास दो तीन सिपाही मिलने आये और उन्होंने बताया कि तेजसिंह कल शाम मित्र मंडली में बैठा हुआ मरहठों के पक्ष की बातें कर रहा था! बात तो साधारण है, महाराज! पर भय प्रतीत होता है। कहीं वह शत्रु से ही न जा मिला हो।"

प्रतापसिंह— "रामसिंह! मेरी आयु कम नहीं है, मैंने बहुत दुनिया देखी है और सैंकड़ों प्रकार के आदमियों से वास्ता पड़ा है। मेरी पहचान अशुद्ध नहीं होती। तेजसिंह धोखेबाज नहीं हो सकता। उस नवयुवक की आंख में जो ज्योति थी, और उसके माथे पर जो रेखा थी, वह सचाई की थी, स्वामी भक्ति की थी, धोखे की नहीं थी। शायद उस पर कोई आपत्ति आ गई हो, परन्तु वह मुझे धोखा नहीं देगा—यह मुझे निश्चय है।"

रामसिंह—"महाराज! ईश्वर करे, आपका विचार ठीक हो। किन्तु यह भी बात ध्यान में रखने योग्य है कि उसका पिता ध्यानसिंह अभी तक

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



दिल्ली में नौकर है। महाराज! मुझे तो भय लगता है। यदि वह चिट्ठी सिंधिया के हाथ लग गई, तो हमारा काम तो बिगड़ेगा ही साथ ही कई लोगों की जानें भी जायेंगी।"

प्रतापसिंह—"इसकी चिन्ता मत करो। सूर्य अन्धेरा नहीं दे सकता। तेजसिंह ने जैसा कहा है, वह वैसा ही करेगा। अब तो युद्ध की तैयारी कराओ। सूर्य चढ़ते ही युद्ध आरम्भ हो जाना चाहिये। जब उस चिट्ठी का कोई फल निकलेगा—देखा जायगा, अभी उसकी ओर ध्यान न देना चाहिए। यदि कोई फल न निकले तब भी हमारी विजय में कोई संदेह नहीं है। यह शेरों की सेना कभी पराजित होगी—इसकी मुझे संभावना ही नहीं है।"

इतना कहकर प्रतापसिंह ने घोड़ा बढ़ाया। रामसिंह अभी कुछ और कहने को था, किन्तु अभिप्रायः समझ कर नमस्कार किया और तेजी से घोड़ा दौड़ाकर अपनी सेना में जा मिला।

युद्ध आरम्भ हो गया। दोनों ओर के बड़े बड़े सेनापति अपनी वीरता और उत्साह का विजयनाद बजवाने के लिए सिर तोड़ कोशिश करने लगे। पहल इस्माईलबेग ने की। चुने हुये ३०० सवारों को साथ लेकर वह राजपूत सेना पर टूट पड़ा। राजपूतों की पैदल सेना सवारों के जबरदस्त आक्रमण से पहले तो कुछ तितर बितर सी हो गई, किन्तु शीघ्र ही संभल गई।

रामसिंह पैदल सेना का मुखिया था। अपनी सेना को भंग होते देख कर उसने ऊंचे स्वर से एक बार महादेव बाबा का जय जयकार बोला और तलवार हाथ में लेकर आगे बढ़ा। राजपूत सिपाहियों ने देखते ही देखते इस्माईल के सवारों को घेर लिया। इस्माईल के लिए अब सिवा पीछे लौटने के कोई रास्ता न था। घुड़सवार घोड़ों के मुँह मोड़कर भगाने लगे। ३०० में से कई एक तो धराशायी हुए, शेष घायल शरीरों को लिये हुए अपनी सेना में जा मिले।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



विचार यह किया गया था कि जिस समय इस्माईलबेग के सवार आक्रमण करके राजपूतों की पंक्तियों को तोड़ दें, उसी समय पैदल मरहठे टूटी श्रेणियों पर चारों ओर से आक्रमण करें। इस्माईलबेग ने अपना काम कर दिया, परन्तु मरहठों ने उस समय आक्रमण करना उचित न समझा। न जाने उस समय कितने मरहठे सिपाहियों के चित्तों में पहले दिन के मुकदमे का दृश्य घूम रहा था। पीछे से सहायता न पाकर इस्माईल मुश्किल में पड़ गया, और मुंह की खाकर वापिस चला गया। इस प्रकार राजपूतों के लिए श्री गणेश मंगल सूचक हुआ।

आज इतना ही युद्ध पर्याप्त समझा गया। महाराज प्रताप सिंह के पास वैसा जबर्दस्त तोपखाना नहीं था, जैसा सिंधिया के पास था। इसलिये उसने आक्रमण न करके अपनी रक्षा पर रहने की नीति का ही अवलम्बन किया था। प्रारम्भ में ही हार खा और पहले विचार के अनुकूल कार्य न होने से गड़बड़ बढ़ जाने के कारण बादशाही सेना का साहस न हुआ कि आक्रमण करे, और राजपूत आक्रमण करना ही नहीं चाहते थे। इसलिये युद्ध वहीं समाप्त हो गया। सांझ होने से पहले ही दोनों सेनायें अपने २ डेरों में लौट गईं। आज रात इस्माईल ने फिर चचा से राजपूतों के साथ मिल जाने का आग्रह किया। मुहम्मदबेग का यही उत्तर थां कि "अभी नहीं। अभी मिल जाने से काम नहीं चलेगा, न जानें राजपूत हमें स्वीकार भी करेंगे या नहीं? अभी कल और देखो, फिर देखा जायगा।" असल में बात यह थी कि मुहम्मदबेग अपने भतीजे को प्रसन्नता के साथ रखने के लिए ही ऐसी मीठी २ बातें कर रहा था, परंतु वह सिंधिया का साथ छोड़ना नहीं चाहता था। वह जानता था कि मुगलों की नौकरी में रहते फिर भी उच्च स्थान पाने की आशा है। परंतु राजपूतों के साथ मिलने से क्या लाभ होगा। वहां राज्य नहीं मिल सकता, ऊंचा स्थान नहीं मिल सकता। फिर नमक हरामी का दोष सिर पर क्यों लिया जाय?

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



इस्माईल को नाराज करना भी उसे अभिप्रेत नहीं था, इस्माईल की बहादुरी सर्व सम्मत थी। मुहम्मद चाहता था कि भतीजे की बहादुरी से अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने में सहायता ले। इधर इस्माईल भी चचा को छोड़कर राजपूतों के पक्ष में नहीं जाना चाहता था। सेनापति मुहम्मद था—मुगल सेना उसी को जानती थी। सेना को छोड़कर अकेले शत्रु से जा मिलने में क्या लाभ हो सकता था? आज रात भी इस्माईलबेग ने चचा के साथ देर तक बात चीत की, किन्तु चचा को न मना सका।

दूसरे दिन फिर प्रातःकाल से ही सेनायें जुट गईं। युद्ध का प्रारम्भ फिर भी इस्माईल के धावे से ही हुआ। इस्माईल ने आज पैदल ही धावा किया। उसकी सेना के दोनों ओर जंगी तोपखाना था। धावा अच्छी सायत में शुरू हुआ था। कुछ देर तक राजपूतों को पीछे भी हटना पड़ा, किन्तु थोड़ी ही देर पीछे वही पहले दिन की कहानी दोहराई गई। दूसरी ओर से मरहठों ने भी राजपूतों पर धावा किया किन्तु उस धावे में दिल नहीं था। राजपूतों ने भंग की तरंग में आकर ऐसी तलवार बरसाई कि मरहठे गाजर मूली की तरह कटने लगे, उधर से सहायता न पाकर इस्माईल फिर दुविधा में पड़ गया।

उसे उस समय दुविधा से छुड़ाने के लिए दैव आ उपस्थित हुआ। पश्चिम से घनघोर आंधी चढ़ आई और आनकी आनमें सेनाओं को आ घेरा। भयंकर आंधी के थपेड़ों में खड़ा रहना असम्भव हो गया। अन्धेरा ऐसा हुआ कि शत्रु मित्र में तो क्या, सवार और घोड़े में विवेक करना भी कठिन हो गया। कुछ देर तक तो आंधी का जोर रहा। धीरे धीरे जोर कम होने लगा। आंधी के दबाव से दोनों ही सेनायें अपने अपने उपनिवेशों की ओर को कुछ कुछ झुक गई थीं। थोड़ी शांति होने पर दोनों ओर के गोलन्दाजोंने शत्रुओं का गोलों से सत्कार करना आरम्भ किया। स्थान चुन २ कर तोपची लोग तोपें दागने लगे, मानों गेंदों का खेल होने सगा। थोड़ी देर शांति रहती—इतने में

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



सरसराता एक गोला आ धमकता, दो सवार इधर गिरते और तीन पैदल उधर पड़ते थे। देर तक ऐसा ही टूटा फूटा युद्ध होता रहा।

इसी बीच अकस्मात मुगल सेना में भयंकर कोलाहल मच गया। क्या हुआ ? क्या हुआ ? कौन मरा ? कौन मरा ? का शोर सारी सेना में सुनाई देने लगा। एक कोने में किसी ने कह दिया 'सिंधिया मर गया,' दूसरे कोने में कोलाहल मच गया 'अपना तोपखाना उड़ गया' तीसरी ओर किसी ने चिल्ला दिया कि 'दुश्मन के सवार टूट पड़े और इस्माईल को उठाकर ले गये।' सेना में खलबली सी मच गई और जिसे जिधर रास्ता मिला वह उधर ही को भागने लगा।

धीरे २ असली बात पता लगी। राजपूतों की ओर से एक गोला आकर मुगल सेना में गिरा। पहले उसने दो घुड़सवारों का सफाया किया, फिर उछलकर उस हाथी के हौदे पर जा पड़ा जिसमें मुहम्मदबेग बैठा हुआ था। गोला जाकर मुहम्मदबेग की दाहिनी भुजा पर बैठा और उसे हाथी से नीचे घसीट लाया। पास ही हाथी के खाने के लिए वृक्षों की शाखाओं का एक ढेर लगा था। मुहम्मदबेग को लिए वह गोला उसी ढेर पर आ पड़ा। गिरते हुए मुहम्मद का सिर एक मोटी शाखा से टकरा गया। वह टक्कर ऐसे जोर की थी कि उसी समय, सेनापति के प्राणपखेरू शरीर छोड़कर रवाना हो गये।

मुहम्मदबेग को मरा सुनकर इस्माईल कुछ मुस्कराया, फिर लगाम खेंच कर घोड़े को खड़ा किया और जरा छाती उभाड़ कर कहा—"बस, अब मैं ही सेनापति हूं।" उस शाम और अधिक युद्ध नहीं हुआ।

पाठक जिस बात की स्वयं ही कल्पना कर सकते हैं, उसे विस्तार पूर्वक लिखने की क्या आवश्यकता है। रात गहरी होने से पूर्व ही पूर्व इस्माईलबेग मुगल सेना को लेकर राजपूतों की ओर जा मिला।

३१ मई की रात थी। सिंधिया के कैम्प से कुछ दूर एक ऊँची सी जगह पर चार आदमी बैठे हुए कुछ बातें कर रहे थे। अन्धेरे में उन्हें

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



साफ साफ पहिचानना तो कठिन था, पर हां इतना कह सकते थे कि ये चारों मरहठे थे और सिपाही थे।

एक ने कहा-"सुनते हैं, इस्माईल सारे मुगलों को ले गया, एक भी तो नहीं बचा।"

दूसरे ने कहा—"खूब हुआ, अच्छा हुआ। धर्मद्वेषी सिंधिया के साथ ऐसा ही होना चाहिये था। मजा तो तब होता अगर इस्माईल सिंधिया को भी अपने घोड़े के पेट के नीचे लटका कर ले जाता। एक निरपराध वीर का रक्तपान करने का मजा तो उसे तभी मिलता। अभी म्लेच्छों का पक्ष लेने का पूरा मजा नहीं आया।"

तीसरे ने कहा—"मजा भी आ ही जाता पर न जाने क्या हुआ। अभी तक महाराजा प्रतापसिंह की ओर से कोई उत्तर नहीं आया। मेरे दूत परसों रात और कल रात को सारे डेरे के चारों ओर घूमते रहे कि अब राजपूतों का उत्तर आता है, अब आता है। परन्तु कोई आया ही नहीं, न जाने क्या बात है।"

चौथे ने कहा—"भाइयो! अब तो नहीं सहा जाता। इन सेनापतियों की बात तो हम नहीं जानते, ये ठाठ से मजे उड़ा रहे हैं। पर, हां हम से तो अब सहन नहीं होता। देखो तो महीना भर हो गया, किसी को पैसा भर तलब नहीं मिली। अनाज का यह हाल है कि आज रुपए का चार सेर अनाज बिक रहा है। भला यह अनर्थ भी कहीं देखा जाता है। प्राण बचें तो कैसे बचें।"

दूसरे ने कहा—"यारो! आज अभी अनाज के लिए रोते हो, कल सिरों के लिए रोना पड़ेगा। अभी दो दिन ही मुश्किल से हुए हैं, कल तो राजपूत भूखे शेरों की भांति हमें कच्चे चबा जायंगे। बचना भी मुश्किल होगा। पन्द्रह हजार मुगल सिपाही शत्रु के साथ जा मिले हैं—एक लाख राजपूत पहले ही थे। अब तो हम लोगों की बोटी बोटी उड़ जायगी।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



चौथे ने कहा— "उधर राजपूतों का बल, इधर खाली पेट। अब तो घरवाली का मुंह देखना नसीब न होगा। न जाने किस बुरी घड़ी में इस मुए सिंधिया की नौकरी में लगे थे। हम तो समझते थे कि वह हिन्दू है— पर वह तो मुसलमानों से भी गया गुजरा है। ऐसे अधम के पास नौकरी कौन करे। मुसलमान ने मंदिर में घुसकर देवता को गाली की, तो हरदेव ने क्या बुरा किया जो उस देव निन्दक की समाप्ति कर दी?"

तीसरे ने कहा—"किन्तु अब किया क्या जाय? कोई उपाय नहीं सूझता। यह संभावना नहीं थी कि जयपुर का राजा इतना विलम्ब करेगा। मुझे उनके मंत्री से मिले आज तीन दिन हुए। उन्होंने परसों तक उत्तर भेज देने की आशा दिलाई थी। आज भी उत्तर नहीं पहुंचा।"

इतने में पहला सिपाही चौंक कर खड़ा हो गया। शेष सब आश्चर्य में हो उसकी ओर देखने लगे और पूछने लगे "क्या है, क्या है?" कुछ देर एक ओर को देख कर उसने कहा—"कोई इधर आ रहा है।"

गुप्त मंत्रणा करने वाले स्वभाव से ही अविश्वासी हो जाते हैं। पत्ते के खड़कने में उन्हें भूत का ध्यान आता है। जरा सी आहट पाकर वे चौंक पड़ते हैं। प्रकाश और गुप्त चरित्र में यही भेद है कि पहला विश्वास और दूसरा अविश्वास का प्रमाणपत्र है। कोई इधर को आ रहा है, इतना सुनते ही सब के सब खड़े हो गये, और अपनी अपनी कमर पर हाथ रख लिया।

थोड़ी देर प्रतीक्षा के पीछे दो आदमी उनकी ओर को आते दृष्टिगोचर हुए। सबके मनों में यही प्रश्न था कि वे शत्रु हैं या मित्र। धीरे धीरे दोनों व्यक्ति पास आये। तीसरे नम्बर के सिपाही ने उन्हें पास आते देख पुकार कर कहा—"कौन आ रहा है।" दूसरी ओर से उत्तर आया "आप का सेवक" स्वर पहचान कर सब बैठ गये और दोनों को आगे आने के लिए कहा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



दोनों व्यक्ति पास आ गये। पास आकर एक ने झुककर सलाम किया। तीसरे नम्बर के सिपाही ने पूछा—"कहो ! सिन्धू, तुम्हारे साथ कौन है?"

"रावजी ! ये राजपूत-राजा प्रतापसिंह के दूत हैं।"

"अच्छा। आइये, विराजिये। आप क्या कोई पत्र लाये हैं या मौखिक संदेश लाये हैं।"

दूत—"क्या उत्तर देने से पूर्व मैं यह पूछने का साहस कर सकता हूं कि मैं किनके सामने खड़ा हूं?"

"क्यों नहीं। मेरा नाम कृष्ण भास्कर है। मैं तीन दिन हुए तुम्हारे राजमंत्री के पास गया था। और कहो क्या पूछना चाहते हो?"

"क्या मैं पूछ सकता हूं कि आपसे महाराज ने अंतिम बात कौन सी कही थी?"

"हां, महाराज ने मुझे चलते हुए कहा था कि मेरा दूत आपको तभी संदेसा देगा जब आप "आज ही" ये शब्द उसके सामने कह देंगे, और पूछिये।"

बस ! मुझे और कुछ पूछना नहीं है। मैं आपको महाराज का पत्र अभी दे देता हूं। देने से पूर्व दो दिन देर हो जाने का कारण भी बता देना चाहता हूं। मैं परसों यह पत्र लेकर चला था। ज्योंही मैं उस देव मंदिर के पास पहुंचा जो आपके डेरों के पास है, त्योंही मुझ पर एक पठान सरदार ने वार किया और घायल कर दिया। कल दिन और रात भर मैं बिस्तरे पर से उठने योग्य नहीं था, हिलना भी असम्भव था। आज अभी तक निर्बलता है, और घाव भी है। परन्तु राजा का सन्देश अत्यावश्यक जानकर इस पत्र को आप तक पहुँचाने आना ही पड़ा। मार्ग में आपके आदमियों से भेंट हुई और उनकी बातों का अभिप्राय जानकर आपके पास पहुँचा। अब देर का अवसर नहीं है। यह पत्र लीजिये। अभी इसे पढ़कर उत्तर दे दीजिये। मुझे

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



प्रात:काल तक अपने डेरे पर लौट जाना है।" इतना कहकर तेजसिंह ने गले में कपड़े से बँधी हुई चिट्ठी को खोलकर कृष्ण भास्कर के हाथ में दे दिया।

इशारा पा कर तेजसिंह भी उन के पास ही बैठ गया।

आधी रात का समय था। आकाश से अन्धेरे के बादल बरस रहे थे। कैम्प की ओर से पहरेदारों की ऊंची ध्वनि के साथ मिला हुआ अस्पष्ट सा सां सां शब्द आ रहा था। उस एकान्त अंधेरे में बैठे हुए वे छः आदमी भारतवर्ष के इतिहास में एक अति प्रसिद्ध संग्राम का भाग्य निर्णय कर रहे थे।

जेब से कुछ रोशनी का सामान निकाल कर सिपाही नं० १ ने अपनी ओट में थोड़ा सा उजाला किया। कृष्ण भास्कर ने उसी उजाले में चिट्ठी को खोला। चिट्ठी में और कुछ नहीं, केवल एक राशि लिखी हुई थी, और नीचे एक ही शब्द था। चिट्ठी का निम्न लिखित रूप था—

"२००००० रुपए स्वीकृत हैं।"

कृष्ण भास्कर ने पढ़कर सब साथियों को सुनाया। सुन कर सब ने कहा—"पर्याप्त है।" कृष्ण भास्कर ने कहा—"मैंने भी दो लाख ही पेश किया था।" सर्वसम्मति से यही निश्चय हुआ कि स्वीकार है।

तेजसिंह ने पूछा कि "मुझे क्या संदेशा ले जाना होगा?"

कृष्ण भास्कर ने उत्तर दिया—हमारा उत्तर यही है कि हम लोग आज अभी अपनी सेना को भड़काना प्रारंभ करेंगे। उन्हें प्रेरित करेंगे कि ये पहले से अपनी तनख्वाह मांगें। अनाज महंगाई हो रही है, यह भी भड़काने के लिये काफी साधन है। आशा है कि कल प्रातः काल ही हम पहुंच जायंगे। बहुत संभव यही है कि कल लड़ाई न होगी।"

तेजसिंह यह संदेशा लेकर रवाना हो गया और वे पांचों भी उठकर अंधेरे में विलीन हो गये।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



तेजसिंह उन लोगों के पास से रवाना होकर सीधा मंदिर की ओर चला। उसने यह विचार किया कि लौटते लौटते एक बार कमला देवी से क्षणिक भेंट करते जायं। न जाने फिर मिलने का कब अवसर मिले। यही सोचता विचारता द्रुत गति से मंदिर के पास पहुंचा। अभी कुछ दूर ही था कि उसके कान में कुछ विचित्र सा शब्द पड़ने लगा। ऐसा प्रतीत होता था मानों कई घुड़सवार घोड़ों पर जा रहे हैं और वे मंदिर में से निकले हैं। मंदिर के पास घुड़सवारों को देखकर तेजसिंह कुछ घबरा सा गया और जल्दी जल्दी कदम भर कर मंदिर के द्वार पर पहुंचा। वहां उसने जो कुछ देखा, उससे उसके हवास उड़ गए। मंदिर के साथ की उस कोठरी का जिसमें कमला देवी से भेंट होती थी, दरवाजा टूटा पड़ा था, अन्दर मध्यम सा दीपक जल रहा था और कमला देवी जिस खाट पर सोती थी वह खाली पड़ी थी।

तेजसिंह ने समझा शायद पुजारी से कुछ पता चले। दूसरी ओर दृष्टि पड़ी तो देखा कि बूढ़ा पुजारी और बूढ़ी पुजारिन लहू में लथपथ बेहोश पड़े हैं।

"हा देव! यह क्या हुआ" कहता हुआ तेजसिंह सिर पकड़ कर बैठ गया। किन्तु अब रोने धोने का समय नहीं था। इधर उधर ढूंढ़ ढांढ कर जब तेजसिंह को निश्चय हो गया कि मंदिर में कमला देवी नहीं है तो वह द्रुत गति से डेरे की ओर रवाना हुआ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# बीसवां परिच्छेद

## सिपाहियों का बलवा

जब तेजसिंह सेनापति रामसिंह के डेरे पर पहुंचा, तो रात आध घड़ी शेष होगी। लड़ाई से थका मांदा रामसिंह एक काठ की खाट पर सो रहा था। चौकीदार ने जाकर तेजसिंह के आने की सूचना दी। तेजसिंह के लौटने की अब किसी को भी आशा नहीं रही थी। सब यही समझ बैठे थे कि अब वह वापस नहीं आयेगा। उसका क्या हुआ- इस विषय में सबने अपनी २ भावना के अनुसार समझा। जो तेजसिंह के मित्र थे उन्होंने समझा कि वह शत्रु के हाथ पड़ गया होगा और जो उसकी बढ़ती हुई ख्याति से ईर्षा रखते थे उन्होंने छूटते ही कहा—"हम तो पहले ही जानते थे कि वह मरहठों के साथ जा मिलेगा।"

रामसिंह कुछ आश्चर्यचकित हुआ। उठ कर रोशनी करवाई और फिर तेजसिंह को अंदर बुलाया। उचित सम्मान करके तेजसिंह रामसिंह के सन्मुख आ खड़ा हुआ।

रामसिंह ने पूछा—"तेजसिंह! बड़ी देर में आये। पहले तो कहो कि वहां का समाचार क्या है, और पत्र का उत्तर क्या लाये हो?"

तेजसिंह—"वहां का समाचार सिंधिया के लिये बुरा और हमारे लिये अच्छा है। बहुत सी मरहठा सेना प्रातः काल तक यहां आ जायगी। मुझे वहां जाने से पता लगा कि पटेल से हिन्दू सिपाही बहुत नाराज हैं।

रामसिंह—"यह समाचार यदि सच हो तो बड़ा शुभ है। अब यह कहो कि तुम्हें इतना समय कहां और कैसे लग गया? हम लोग तो समझ बैठे थे कि तुम किसी आपत्ति में फँस गये हो, अब नहीं लौटोगे।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



तेजसिंह ने उत्तर में अपनी सारी कहानी कह सुनाई। यह कहे बिना ही जाना जा सकता है कि कमला देवी का नाम कहानी में नहीं आया। सुन्दरी बाला के स्थान में सेवा सुश्रुषा का भार कहानी में बूढ़ी पुजारिन को सौंपा गया था।

रामसिंह तेजसिंह के दुःख की कहानी सुनकर बहुत दुःखित हुआ। उसके मन पर सुनने सुनाने से तेजसिंह की ओर कुछ बुरा भाव हुआ था, स्वभाव से वह बड़ा वीर, अतएव उदार था। अविश्वास उसके लिये अनैसर्गिक था—नैसर्गिक नहीं। रामसिंह सारा वृतान्त सुनने के बाद उठा और उसने तेजसिंह के बँधे हुए घाव को देखा। घाव अभी तक विद्यमान था, किन्तु भयंकर नहीं था।

तेजसिंह की पीठ ठोक, दिलासा देकर, और आराम करने के लिये कह रामसिंह ने वर्दी पहनी और महाराज प्रतापसिंह को समाचार देने के लिये प्रस्थान किया। तेजसिंह भी अपने साथियों को डेरे में ढूंढ़ने के लिये चल दिया।

महाराज प्रतापसिंह अभी उठे नहीं थे। दरवाजे के पास ही एक छोटी सी तम्बोटी आजकल के वेटिंगरूम के तौर पर बनी हुई थी। चौकीदार को अपने आने का समाचार देकर रामसिंह उसी तम्बोटी में जा बैठा। लगभग आध घण्टे पीछे चौकीदार ने सूचना दी कि "महाराज उठे हैं, और आपको याद करते हैं।"

प्रतापसिंह तेजसिंह का समाचार सुनकर उसके दुख से दुखित और वापिस आने से प्रसन्न हुए। फिर रामसिंह से कहने लगे—

"रामसिंह, भगवान जो कुछ करते हैं, अच्छा ही करते हैं। तेजसिंह का विलम्ब भी हमारे लिए अच्छा ही हुआ। युद्ध होने से मुहम्मद बेग मारा गया, सुनते हैं सिंधिया का एक बड़ा सेनापति अतीतराव भी धराशायी हुआ है। हमारी ओर इनदानी का मरना भी शोकजनक है,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



किन्तु हमारा उस पर कोई बड़ा भरोसा न था। न मुहम्मद बेग मरता और न ईस्माईल बेग सिंधिया से फंटता। देखें प्रातः काल तक क्या होता है? इस युद्ध में पहले से ही हमें भगवान का हाथ दिखाई दे रहा है। मुनीम ज्वालाराम को कहना कि दो लाख रुपया तैयार रक्खें। मरहठा सेना को आते ही रुपया दे देना चाहिये।"

रामसिंह ने कहा—"महाराज। मैं अभी जा कर मुनीम जी से रुपयों के विषय में कह दूँगा। एक बात कल न पूछ सका, इस्माइल बेग पर छुपा पहरा रखने के लिये कितनी सेना को नियुक्त किया जाय?"

प्रतापसिंह—"मेरी सम्मति में आज संग्राम समाप्त हो ही जायगा। फिर पहरा रखने की आवश्यकता ही न रहेगी। इस्माईल पर मुझे बिल्कुल विश्वास नहीं है, क्योंकि जिस आदमी ने अपने बादशाह के नमक की पर्वाह नहीं की, उस पर हम कैसे भरोसा रख सकते हैं? परन्तु उसे टालने का भी एक उपाय है। कल आते ही बातचीत में उसने मुझसे कहा था कि सिंधिया जब हार कर भागेगा तो उसका पीछा करने का काम वही करेगा। इस प्रकार आज शाम तक ही इस्माईल को टाल देंगे। हां जब तक मरहठा सैन्य इधर नहीं आती तब तक वैसी ही देख भाल रक्खो, जैसी रात भर रक्खी गई है।"

"जो आज्ञा" कह कर राम सिंह जाने को उद्यत हुआ। प्रताप सिंह ने जाते २ उससे कहा—"तेज सिंह ने बड़ी वीरता का काम किया है। उसने हमारी सेना में घाव भी पाया है। हम उसे कुछ पुरस्कार देना चाहते हैं। मरहठा सैन्यका समाचार आ चुकने पर दोपहर को उसे हमारे पास भेज देना।"

नमस्कार करके राम सिंह बाहर चला गया।

दिन चढ़ा। महाराज माधोजी राव सिंधिया भी अपने चिन्तातुर हृदय को धैर्य से थाम कर उठे और सेनापति को युद्ध के लिए तैयार होने की आज्ञा भिजवाने लगे। उसी समय आकर घबराये हुए चोबदार ने कहा— "

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



"महाराज ! बड़ी गड़बड़ मच गई है। आपकी सेना तम्बू को घेरे खड़ी है, और कहती है कि महाराज कहां हैं ? महाराज कहां हैं ?"

माधोजी राव चिन्तित हुए। किन्तु धैर्य छोड़ना सिंधिया के स्वभाव में नहीं था। उन्होंने चोबदार को आज्ञा दी कि "आई हुई सेनाओं के जो नेता हैं, उन्हें मेरे पास बुला लाओ।" थोड़ी देर में चौबदार लौटकर आया, और निवेदन किया कि वे लोग कहते हैं कि अभी २ हमारी तनख्वाहें बांट दो नहीं तो हम शत्रु से जा मिलेंगे।"

आपत्ति पर आपत्ति आ रही है। दो दिन की पराजय और इस्माईल बेग की नमक हरामीका चिन्ता भार अभी सिर पर ही था कि यह नई चिन्ता आई। पटेल अपने बिस्तरे पर बैठ गये, और सिर पकड़ कर सोचने लगे। बाहर शोर होने लगा, और धीरे धीरे कोलाहल बहुत बढ़ता गया। माधोजी राव १० मिनट तक विचार करते रहे। उन्होंने दिमाग को चारों ओर दौड़ाया तो उन्हें अपनी असहाय दशा का ज्ञान होने लगा। खजाना खाली पड़ा था। सेना के दम छूटे हुए थे, मुगलों ने धोखा दिया, और अब सिपाही बलवा करने के लिये तैयार हैं। कुछ न सूझा कि क्या करें।

चोंबदार फिर आया। आकर उसने निवेदन किया कि महाराज सारी सेना दुश्मन के डेरे की ओर चली गई। थोड़ी ही देर में अप्पा जी इंगिलया ने आकर सूचना दी कि हमारे १४००० सिपाही बहुत सा खाने पीने का सामान लूट लाट कर राजपूतों के साथ जा मिले।

उसी दिन दोपहर के समय सिंधिया ने अपनी सेना के मनुष्य विहीन डेरे उठवाकर ग्वालियर का रास्ता लिया।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# इक्कीसवां परिच्छेद

## दिल्ली की ओर प्रस्थान

महाराज प्रतापसिंह एक गद्दी पर बैठे हैं, सामने तेजसिंह खड़ा है, तम्बू में और कोई नहीं हैं। प्रतापसिंह ने तेजसिंह से कहा—

"तुमने जो काम किया है, वह पुरस्कार के योग्य है। उस कार्य के करनेमें तुम्हें जो कष्ट हुआ है, घाव लगा है, वह उस पुरस्कार के मूल्य को और भी बढ़ा देता है। कहो, क्या पुरस्कार चाहते हो?"

"महाराज! आपका कार्य मुझ से हो सका—यही मेरे लिये पर्याप्त पुरस्कार है। स्वामी की सेवा कर सकने से बढ़कर राजपूत युवक को कोई पुरस्कार नहीं चाहिये। मेरी स्वामी से केवल एक प्रार्थना है कि मुझे कुछ दिनों के लिये सेवा से मुक्त किया जाय।"

"सेवा से मुक्त-कभी नहीं। इस समय तुम्हारा कार्य देख कर मुझे बड़ा सन्तोष हुआ है, और मैंने तुम्हारे लिये एक और कठिन कार्य सोच रक्खा है। इस समय छुट्टी न मांगो।"

तेजसिंह ने हाथ जोड़कर कहा—"स्वामिन्! सेवक केवल विनय कर सकता है, और कुछ नहीं। सेवक की प्रार्थना स्वीकार हो तो कृपा होगी। एक बड़ा आवश्यक कार्य है, जो सेवा से पृथक होकर ही पूरा सकता है।"

"वह कौन सा कार्य है? यदि रहस्य न हो तो कहो, शायद मैं तुम्हारी कुछ सहायता कर सकूं।"

"यह तो आपकी दयालुता और भक्त वात्सल्य का प्रमाण है। किन्तु, महाराज! आपका समय जाति के लिये मूल्यवान है। मेरे तुच्छ कार्य में उसका शतांश भी व्यय नहीं होना चाहिये। शेष रहा मेरा कार्य, वह तो मूर्ख युवक की मौज है। अन्य लोग उसे सुनकर हंस देंगे।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



"मैं समझ गया। होनहार युवक! अपने समय में किसने मन नहीं बेचा? यह यौवन की शोभा है, वीरता का भूषण है। मेरी ओर से एक अनुभवी की इतनी ही सलाह ले लो कि जिससे प्रेम करना, उसके प्रेम की परीक्षा ले लेना, कहीं धोखा न मिले। ईश्वर करे, तुम्हारी मनोकामना पूर्ण हो। वह सुन्दरी सचमुच गुणवती होगी जिसने हमारी सेना का एक उज्ज्वल भूषण हमसे छीन लिया। मुझे शोक इतना ही है कि जो काम तुम्हारे लिए रक्खा था वह दूसरे को सौंपना पड़ेगा। तुम पर मुझे पूरा विश्वास था।"

"ये शब्द निःसंदेह मुझे साभिमान करने वाले हैं कि आप का मुझपर विश्वास है। यदि इस समय मैं आप की सेवा से भागूँगा, तो निःसंदेह विश्वास के अयोग्य हूंगा। महाराज मैं अपने काम पर पीछे जाऊंगा, पहले आप की सेवा बजा लाऊंगा।"

प्रताप सिंह कुछ देर तक सोचते रहे और फिर तेजसिंह के मुंह की ओर देखा। तेजसिंह की आंखों में आंसू भरे हुये थे। प्रतापसिंह समझ गये, कि इसने जो कुछ कहा है, हृदय से कहा है। वे बोले—

"शायद हम दोनों का ही काम सिद्ध हो सके। तुम अपनी प्यारी से मिलने किधर जाओगे?"

"महाराज! मिलने तो नहीं, पर हां उसे ढूंढ़ने के लिये, और यदि वह जीवित है (यहां तेजसिंह का गला भर आया) तो उससे मिलने के लिये दिल्ली की ओर जाने का विचार रखता हूं।"

प्रतापसिंह ढूंढ़ने का कारण पूछा चाहते थे परन्तु यह समझ कर कि शायद तेजसिंह को कहने में संकोच हो, उस विषय में चुप रहें। उन्होंने प्रसन्न होकर कहा—

"लो—तब तो एक पन्थ दो काज होंगे, मैं भी तुम्हें दिल्ली ही भेजना चाहता था। मुझे बादशाह शाह आलम के पास कुछ गुप्त संदेशा भेजना है, वह देकर फिर अपने काम में लगना।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



"मेरे धन्यभाग हैं, कि मैं आप की सेवा के सौभाग्य से वंचित नहीं हूंगा। आज्ञा कीजिये, मुझे क्या संदेशा देना होगा।"

प्रतापसिंह कुछ देर तक सोचते रहे। फिर तेजसिंह की ओर देख कर कहा—

"तेजसिंह! तुम्हें मैं जो काम सौंपता हूं, वह बहुत गुप्त और आवश्यक है। इसे मेरा कोई साथी राजा या सेनापति भी नहीं जानता, और न उन्हें जताना आवश्यक है। यह कार्य शीघ्र और अवश्य होना चाहिये। गुप्तता और शीघ्रता—क्या इन दोनों बातों की तुम प्रतिज्ञा करते हो?"

अन्त में आकर प्रतापसिंह का शब्द आज्ञा के समान हो गया था। तेजसिंह ने सिर झुका कर सूचित किया कि वह इन दोनों बातों की प्रतिज्ञा करता है। प्रतापसिंह ने फिर कहा—

"तुम्हें इस काम के लिए दो कारणों से चुनता हूँ। एक तो तुम्हारी बहादुरी और बुद्धि पर भरोसा है, दूसरे अपने पिता के प्रभाव से तुम्हारा बादशाह के दरबार में प्रवेश सुगमता से हो सकेगा। यह संदेशा लेकर पिता को भी बताये बिना दरबार में प्रवेश करना और ऐसा ढंग बनाना कि तुम किसी प्रकार अकेले में मेरा संदेशा दे सको। क्या तुम ऐसा कर सकोगे?" तेजसिंह ने स्वीकृति की सूचना दी।

"संदेशा इतना ही है कि बादशाह को यह समझा देना कि मुगल साम्राज्य के सच्चे पुराने सहायक राजपूत ही हैं, मरहठे विश्वास पात्र नहीं हैं। वे मुगल साम्राज्य की कीर्ति को कहां तक स्थिर रख सकते हैं, इसका यही युद्ध प्रमाण है। उससे कहना कि राजपूतों ने इस युद्ध में मरहठों से युद्ध किया है, मुगल बादशाह से नहीं। हम अब उनके मित्र हैं, और उनकी ओर से मित्रता का सबूत पाते ही सहायता के लिये आ सकते हैं। सारी दुनिया कहती है कि बादशाह पटेल का बंधुआ है। हम चाहते हैं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



कि उसे बन्धन से छुड़ा दें। बस संदेशा इतना ही है। भाषा तुम्हारी होगी, बुद्धि तुम्हारी होगी। समझा देना तुम्हारा काम होगा। उत्तर भेजना बादशाह का काम होगा, वह तुम्हें न करना पड़ेगा। इतना काम करके तुम अपने आपको छुट्टी पर समझना।"

प्रतापसिंह कह चुके, किन्तु तेजसिंह अभी विचार सागर में गोते खा रहा था। तेजसिंह के हृदय में मुसलमानों के प्रति बड़ी घृणा थी। वह हिन्दू को हिन्दू का स्वाभाविक मित्र और हिन्दू को मुसलमान का स्वभावतः शत्रु समझता था। इस संदेश में उसके विचारों का साफ ही प्रतिषेध था। वह बड़े असमंजस में पड़ गया। एक ओर अपनी प्रतिज्ञा और स्वामी का आदेश दूसरी ओर अपनी सम्मति। कुछ देर तक सोच कर उसने निश्चय किया कि मैं केवल सन्देश ही दूँगा—सन्देशा दूसरे का होगा। मैं उसके लिये उत्तरदाता नहीं हूंगा। कर्तव्य भाव की विजय हुई और तेजसिंह ने सन्देशा ले जाना स्वीकार कर लिया।

महाराज से यथोचित बिदा लेकर उसी सायंकाल तेजसिंह डेरे से रवाना हो गया।

जाते हुए महाराज की ओर से उसे आदर के तौर पर एक सुनहली म्यान सहित तलवार, एक दरबारी चोगा और बहुत सा रुपया पुरस्कार के तौर पर मिला।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# बाईसवां परिच्छेद

## एक झांकी

एक छोटा जंगल है, और नाले का किनारा है। गर्मी के दिन होने से नाला सूखा पड़ा है, शीतल जल का स्थान तपती हुई रेत ने ले रक्खा है। जंगल भी सूखा हुआ है, कहीं कहीं कोई पेड़ हरे पत्तों वाला दिखाई देता है, नहीं तो अधिकतया पेड़ों की डालियां वर्षा ऋतु की प्रतीक्षा कर रही हैं। जो पशु-पत्ती नाले से पानी पी कर निर्वाह करते थे वे बेचारे जल ढूंढ़ने कोसों निकल जाते हैं, तब कहीं प्यास बुझती है। उन लोगों को पानी का बड़ा कष्ट है, क्योंकि वे उस कुएं से पानी नहीं पी सकते, जो एक बड़े पीपल के तले बना हुआ है और इस समय जिसके पास ही कुछ पठान सिपाहियों का डेरा पड़ा हुआ है। हमें इस डेरे से कोई काम नहीं। इस में कौन लोग हैं, कहां जा रहे हैं, इन सब बातों से हमारा कोई मतलब नहीं निकलेगा। हां—हमें डेरे से ३०० कदम की दूरी पर एक छोटा किन्तु सुन्दर तम्बू लगा दिखाई देता है। वहां अवश्य पहुंचना चाहिए। वहां हमें एक दूसरे ही ढंग का दृश्य दिखाई देगा।

तम्बू के अन्दर बहुत से फूंस पत्ते आदि डालकर एक फर्श बनाया हुआ है, और इस फर्श पर अच्छा मोटा गद्दा बिछाया हुआ है। गद्दे पर एक नवीन वयस्का सुन्दरी हाथ पर गाल रखे किसी चिन्ता में मग्न बैठी है। यह सुन्दरी कमला देवी है। कमला देवी की मूर्ति इस समय बहुत कुछ बदली हुई प्रतीत होती है। हमने उसे सुजानपुर में देखा था उस समय इस पर आनंद, आमोद और निश्चिन्तता का उल्लास झलकता था। फिर उसे देव मंदिर में देखा। उस समय उसके मुखपर वैराग्य और छुपे प्रेम का तेज

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



प्रतीत होता था। आज हम उसे और ही दशा में देखते हैं। जैसे हिम के पड़ने से कमलिनी कुम्हला जाती है और सूर्य के प्रकाश से तारों की छवि मद्धम पड़ जाती है, उसी प्रकार आकस्मिक आपत्ति के आने से कमला देवी की मुख श्री म्लान हो गई है। उसकी आंखों में निराशा के चिन्ह पाये जाते हैं। उन चिन्हों को आंसुओं का पानी बह बह कर धो नहीं सकता, प्रत्युत सींच कर बढ़ाता है। आंखों से अविरत अश्रुधारा जारी है। मुख पर मुर्दनी सी छाई हुई है, और शरीर विकल प्रतीत होता है। सामने एक थाली में भोजन परोसा हुआ रक्खा है, और एक ब्राह्मणी खड़ी कह रही है—

"बेटी! भोजन कर लो। कब तक भोजन किये बिना बिताओगी? आज तीन दिन हुए, तुमने एक ग्रास भी मुँह में नहीं डाला। ऐसे काम कैसे चलेगा? तुम्हारा चांद सा मुखड़ा कुम्हला गया है, उठने फिरने की ताकत नहीं रही। गालों की हड्डी दिखाई देने लगी है। हवा फांक कर कैसे जिओगी?"

कमला देवी ने क्षीण स्वर से बिना आंखें ऊंची किये ही कहा—

"मुझे जीने की इच्छा भी नहीं है। अब जीकर क्या करूँगी? यदि सचमुच तुझे मुझ पर दया है, तो मेरा एक काम कर। यह थाल उठा ले जा; और जो भोजन कहती हूँ वह ला दे।"

उस ब्राह्मणी ने कहा—

"एक ब्राह्मणी का बनाया शुद्ध भोजन उठवा कर क्या मुसलमानी के हाथ का भोजन करोगी?"

कमला देवी बोली—

"नहीं, मुसलमानों के हाथ का भोजन मैं करूं, इससे पहले कुत्ते स्यार मेरा ही भोजन करेंगे। मैं कुछ और मांगती हूँ। अगर कहीं मिल सके तो थोड़ा सा जहर ला दे। मैं जन्म जन्मान्तर तक तेरा उपकार मानूँगी।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



मैं दुखिया हूँ—दुखिया का जीने से मरना अच्छा है। मेरा सतीत्व धर्म खतरे में है—सतीत्व खोने से पहले प्राण त्याग देना धर्म है।"

ब्राह्मणी बोली—

"अजी तुम ऐसी बहकी बहकी बातें मत करो और यह तो कहो हम जो तुम्हारे लिये विष लाकर दें और ऐसा अधर्म करें, तो हमें क्या मिलेगा? यही, मालिक से सौ सौ जूतों का इनाम।"

कमला देवी समझ गई कि ब्राह्मणी जहर लाने की कीमत पूछती है। बोली—

"अरी पगली! क्या मैं तुझ से इनाम बिना ही ऐसा काम करने को कहती हूँ? पहले मुझ से उन गहनों को ले लेना जो मैंने परसों उतार कर रखे थे, पीछे मुझे विष देना। देख, और कुछ नहीं, तो भी वे दोनों गहने दो ढाई हजार के होंगे। तू बूढ़िया हुई—अब कहां कमाती फिरेगी? गहने बेच कर घर जा बैठना, और चैन से बुढ़ापा बिताना। क्यों? बता इस मूल्य पर जहर देना मंजूर है?"

ब्राह्मणी के मुंह में पानी भर आया—पर कुछ डर भी लगा। बोली "ना ना बेटी! ऐसी बुरी बात मत कहो। मेरे पास विष तो है—परन्तु मैं दूंगी नहीं। यह जो पठान सरदार है, वह तो पूरा रावण है। मुझ बुढ़िया का एक ही ग्रास कर जायगा। मुझसे ऐसा अधर्म न होगा।"

"तुझे पाप क्या है? मुझे अब जो दुःख है मरने का दुःख इसके सामने परम आनन्द के समान है। तू मुझे विष देकर अनन्त दुःख से छुड़वायगी। और जो तू सरदार से डरती है, वह व्यर्थ है। तेरे पास विष तो है ही—वह मुझे दे दे, और मेरे गहनों की गठरी लेकर अभी अभी भाग जा। उस दुष्ट को पता भी न लगेगा कि तू कहां गई है। तुझे पहरे वाले जानते ही हैं, रोकेंगे नहीं।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



ब्राह्मणी के मन में एक बार आया कि जहर देने से पाप होगा। सुना हुआ थी कि पापियों की पीठ पर चित्रगुप्त के दूत कोड़े जमाया करते हैं। कोड़ों की याद आते ही मुँह से 'नहीं नहीं' निकलने लगा। फिर गहनों की गठरी का स्मरण हो आया। चमकता हुआ गहना स्मरण आते ही पापी चित्त ने कहा "विष देने में क्या पाप है ? अगर वह दुष्ट इसका सतीत्व नष्ट कर दे तो मैं तो इसे उस अत्याचार और दुःख से बचाती हूँ। अधर्म काहे का है।" तब मुंह ने भी लोभायमान चित्त का अनुकरण करके कहा—

"अच्छा बेटी ! तुम्हारा आग्रह और दुःख भी देखा नहीं जाता। गहनों की क्या चिन्ता है बेटी ! तुम्हारा धर्म नष्ट न हो, इसलिये यह लो विष।"

अब ब्राह्मणी ने गांठ से खोल कर विष की डिबिया दे दी। ब्राह्मणी ने यह विष की डिबिया इसलिये रख छोड़ी थी कि शायद कभी किसी को मारने के काम आये। ब्राह्मणी पहले से ही सुचरित्रा नहीं थी, विष देकर घबराये हुए स्वर में कहा—"अब गहनों की पोटली जल्दी दे दो, ताकि मैं अपना रास्ता लूँ।" कमला देवी ने हाथ से एक कोने की ओर इशारा किया। वहां जाकर ब्राह्मणी ने वह पोटली उठा ली, उसे खोल कर जब देख लिया और निश्चय कर लिया कि यह गहने ही हैं तो झट बगल में दबा दरवाजे से बाहिर हुई और जाती जाती इतना धर्मोपदेश देती गई कि "भाई ! देखना, बिना कारण जहर खाकर ब्राह्मणी के सिर पर पाप न चढ़ाना।"

ब्राह्मणी के जाने पर कमला देवी ने उस थाल को हटा कर दूर फेंक दिया और फिर अपने अन्दर के कपड़े में से कोई एक चीज निकाली। यह एक अंगूठी थी जिस पर तेजसिंह लिखा हुआ था। यह अंगूठी तेजसिंह ने मंदिर से चिट्ठी देने जाते हुए अपनी अंगुली से निकाल कमला की अंगुली में डाल दी थी। उस विदाई के समय दोनों न जाने कितने रोये थे, अब उस अंगूठी को निकाल और छाती से लगा कर कमला उससे भी कई गुना रोई।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



जब कोई घंटा भर हो चुका और जी हलका हो गया तो उसी स्थान पर घुटने टेक कर परमात्मा से प्रार्थना करने लगी। बहुत देर तक न जाने परमात्मा से क्या प्रार्थना की। हमें सारी प्रार्थना का ज्ञान नहीं है। मरने के समय मनुष्य ईश्वर से क्या २ प्रार्थना करते हैं, उसका उसी को ज्ञान हो सकता है जिसे कभी ऐसा अवसर मिला हो। हां, इतना हम कह सकते हैं कि उस लम्बी प्रार्थना की टेक यह थी कि—"हे करुणामय जगदाधार स्वामी! इस जन्म में जो नहीं मिला है, अगले जन्म में वह अवश्य देना। मैं अबला हूं, अपापी हूं, आप जानते हैं कि मैं अकलंकिनी हूं। जगत के स्वामी! यदि यह सच है कि सती की इच्छा अवश्य पूर्ण होती है तो मेरी इच्छा भी अवश्य पूर्ण करना। मैं सनाथ थी, आज अनाथ होकर मरती हूं। संतोष केवल इतना है कि सुखी और दुःखी के, पुण्यात्मा और पापी के, राजा और रङ्क के नाथ! आप के सामने सच्चरित्रा रहती हुई प्राणत्याग करती हूँ। किसी प्रकार परमात्मन्! मेरे प्राणनाथ को यह सूचना पहुँचा देना कि मैं उनका नाम जपती, उनका ध्यान करती और उन्हीं के पाने के लिये लोकान्तर को प्रस्थान कर गई हूँ।"

प्रार्थना समाप्त होने पर कमला की आंखों में आंसू नहीं थे, उदासी भी नहीं थी। उसके होठों पर कुछ मुस्कराहट, आंखों में सतीत्व का तेज और चेहरे पर दृढ़ निश्चय था। एक सती अपने सतीत्व की रक्षा करके स्वामी की ओर जा रही थी। देखने से प्रतीत होता था मानों वह अपने ज्ञान चक्षुओं से तेजसिंह की तेजस्विनी मूर्ति को सम्मुख ही देख रही है।

उसी प्रकार आकाश में दृष्टि जमाए, मुस्कराते २ कमला देवी ने जहर की डिबिया खोली, उसमें से विष की गोली निकाली और उठाकर मुंह के पास पहुंचाई।

उसी समय एक लम्बा चौड़ा पठान तम्बू के दरवाजे के अन्दर घुस आया, जिसे देखते ही कांप जाने से कमला के हाथ से गोली नीचे गिर पड़ी और अनायास ही वह चिल्ला उठी।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# तेईसवां परिच्छेद

## पलायन

हाथ से विष की गोली गिर पड़ी, भयभीत कमला देवी चार कदम पीछे जा कर खड़ी हो गई। भयंकर बाघ के झपटने पर हरिणी जैसे कुलांच मार कर दूर जा खड़ी होती है, कमला देवी की भी वैसी ही दशा हुई। उसकी दशा विचित्र थी। विष खाने की चेष्टा करने के समय उसके बाल कन्धे से नीचे गिर पड़े थे, खुले हुए सूखे केश भुजाओं पर बिखरे हुए थे, छाती पर जो कपड़ा था, वह भी असावधानता के कारण खुला हुआ था।

पठान सिपाही कौन है ? पाठक ! पहिचानिये, यह आप का पुराना परिचित गुलाम कादिर है। पहले से भेद इतन ही है कि आयु बढ़ जाने के कारण शरीर भर गया है, आंखें और भी 'अधिक क्रूर हो गई हैं और डाढ़ी मूँछ के बाल भी खूब बढ़ गये हैं। वह इस समय सिपाही वेष में नहीं है—सादे पठान वेष में है।

गुलाम कादिर कमला देवी को इस विचित्र रूप में देखकर कुछ विस्मित सा होकर दरवाजे पर ही ठिठक गया। उस समय दोनों जिस दशा में खड़े थे उसे दिखाने के लिये चतुर चित्रकार ही समर्थ हो सकता है, दूसरा नहीं। एक ओर बाघ दूसरी ओर हिरनी, एक ओर बाज दूसरी ओर चिड़िया, एक ओर सांप दूसरी ओर शिकार । गुलाम कादिर किसी शुभ भावना को लेकर नहीं आया था, परन्तु न जाने वहां आकर उसे क्या हो गया। कमला देवी की आंख से आंख मिलते ही मानों राक्षस का तेज क्षीण हो गया।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



वह कुछ देर तक आगे कदम न बढ़ा सका। उसको भय लगा और सती अबला की ओर पग बढ़ाने का साहस न हुआ।

कमला देवी भी कुछ काल तक न समझ सकी कि अब क्या होगा? बस, उसे इतना ही ज्ञान था कि अभी एक मिनट पहले वह मृत्यु का मुँह देख रही थी, और अब मृत्यु से कहीं भयंकर वस्तु को सामने देख रही है। मृत्यु के पास वह प्रसन्नता से जा रही थी, इस पिशाच से वह दूर होना चाहती है। भय के मारे उसे अपनी भी कोई सुधबुध न रही। दोनों हाथ आगे को बढ़े हुए थे, मानों किसी पहाड़ को रोक रहे हों। आंखें उसी भयंकर बाघ पर टिकी हुई थीं कि देखें यह कब हिलता है, और पांव भय से कांप रहे थे।

कुछ देर ऐसा चित्र बना रहा। गुलाम कादिर का साहस सती के सामने जाकर न जाने कहां चला गया। किन्तु शीघ्र ही वह संभला। साहस कर के वह एक कदम आगे बढ़ा और निर्लज्जता भरी मुस्कान से बोला—

"प्यारी! यह क्या सूरत बनाई है?"

कमला देवी की कपकंपी बंद हुई। न जाने उस बालिका में इन शब्दों को सुनते ही कहां से साहस का संचार हो आया। वह अर्ध चन्द्र के समान सुन्दर मस्तक पर क्रोध की रेखा चढ़ाकर बोली—

"पापी! नराधम! तू यहां क्यों आया है? क्या तू ही मुझे पकड़ लाया है?"

अभी उसने नहीं पहिचाना था कि यह वही पुरानी डोली वाला पठान है। गुलाम कादिर फिर मुस्कराया और बनावटी शब्दों से कहने लगा—

"ओ हो! सुन्दरी, तू तो बड़ा गुस्सा करती है, मैं तो तेरा पुराना दोस्त हूँ। क्या वह दिन याद है, जब मैं तुझे सुजानपुर से डोली में लाया था?"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



एक क्षण भर में कमला देवी को सारी कथा याद आ गई। उसका शरीर एक बार फिर भय से थर्रा गया। किन्तु भय करने का समय नहीं था। सती स्त्री जानती है कि किस समय भय नहीं करना चाहिए। क्रोध से कांपते हुए निर्भय स्वर से वह बोली—

"पापी! इसी समय यहां से चला जा। तेरी जो पाप वासना है वह नौकरानी ने मुझ से कह दी है। तू मेरे सामने से इसी समय दूर हो जा नहीं तो बुरा होगा।"

गुलाम कादिर ने घृणात्मक हंसी हंस कर कहा—

"जाने दो, इतना गुस्सा मत करो। पहले मेरी बात सुन लो, फिर जो चाहना कहती जाना। उस समय बात और थी, अब बात और है। उस वक्त मैं बादशाह का अर्दली गुलाम कादिर था। इस वक्त मैं हिन्दुस्तान के सब रुहीले पठानों का सरदार बादशाह नजीबुद्दौला होशियार जंग गुलाम कादिर हूं। अब मैं नौकर नहीं, बादशाह हूं। सुन्दरी! मुझसे अच्छा और खाविन्द कौन मिलेगा? आ जा मुझे अपनी मर्जी से कबूल कर।"

न जाने कमला देवी ने कितना धर्म नष्ट करके इतने शब्दों को सुना। अभी गुलाम कादिर कह ही रहा था—परंतु कमला देवी और न सुन सकी, उसका मुंह क्रोध के मारे लाल हो गया, आंखों में से आग की चिनगारियां निकलने लगीं। वायु विताड़ित नव पल्लवों की भांति होठ फड़फड़ाने लगे। उसके बोलने के समय प्रतीत होता था मनों कोई स्वर्ग की साक्षात देवी मनुष्य जाति की अधमता देखकर उसका तिरस्कार कर रही है। उसने बड़े तीव्र और चीखते हुए स्वर में कहा—

"तू बादशाह है या कंगाल है, मैं नहीं जानती। मेरे लिये तो पिशाच और राक्षस के समान है। अत्याचारी! मैं फिर कहती हूं कि तू मेरे सामने से दूर हो जा, नहीं तो पीछे से पछतायेगा।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



पछतायगा क्यों? एक अशस्त्र अबला मेरा क्या बिगाड़ सकती है? इसी प्रकार सोचकर शैतान की हंसी हंसते हुये गुलाम कादिर ने चार कदम आगे बढ़ाये। आगे बढ़ने से वह कमला देवी के पास पहुंच गया। कमलादेवी का रूप उस पापी पर पहले ही असर कर चुका था। खुला असाधारण रूप और इतना सान्निध्य पाकर पिशाच की पैशाचिक वृत्ति और भी भड़क उठी और वह एक अशस्त्र, एकाकिनी बालिका को बलात्कार से पकड़ कर छाती से लगाने के लिये आगे को झपटा।

वह समय कमलादेवी के लिये भयावना था। अकेली बालिका निराधार–निराश्रय, निःसहाय, तीन दिन की भूखी! उधर हट्टा कट्टा पहलवान जवान! न झाड़ी हो, न वृक्ष हो, साफ मैदान में कोई छोटा सा बच्चा भेड़िये के सम्मुख आ पड़े। जैसी उसकी दशा हो, कमला देवी की भी वैसी ही दशा हुई।

भयावने समय में राजपूत बाला का छुपा हुआ तेज उमड़ आया, आत्म रक्षा की स्वाभाविक बुद्धि ने जोर पकड़ा। कमला देवी की आंख इधर उधर भागीं, और तो कोई चीज पास नहीं पाई, केवल एक देगची पड़ी थी, जिसमें ब्राह्मणी उसके लिए दाल बना कर लाई थी। कमला देवी ने झपट कर उसी को उठा लिया और जितने भी जोर से हो सका, गुलाम कादिर के सिर पर उसे पटक दिया। उस समय कमला देवी में न जाने कहां से फुर्ती और बल आ गया। जिस तेजी के साथ उसने देगची को उठा कर मारा, उसे देखकर पाण्डवों के क्षण भर में सौ सौ बाण बरसाने वाले महारथी भी मात खा जाते।

दाल से भरी हुई देगची गुलाम कादिर के मुंह पर जाकर पड़ी। एक तो देगची का जोर और दूसरे दौड़ कर झपटते हुए गुलाम कादिर का जोर, दुगुने वेग से देगची वहां पड़ी जहां आंखों की और नाक की संधि है। दाल गुलाम कादिर के मुंह और नाक में घुस गई, और देगची की चोट से

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



उसकी नासिका ने फव्वारे का रूप धारण कर लिया। लहू की धारा ऐसे छूटी जैसे पानी चट्टान में इकट्ठा हो कर एक छोटे से छिद्र में से भाग निकलता है। आंखें बन्द हो गईं। नाक सन्न हो गई, और रक्त की अविरल धारा बह निकलने से दिमाग घूम गया। गुलाम कादिर मुँह पर हाथ रख कर नीचे बैठ गया।

उतने ही समय में कमला देवी दरवाजे से बाहिर हो गई। गुलाम कादिर ने तम्बू के अन्दर जाते हुए आस पास के सब पहरेदारों को हटा दिया था, ताकि उसकी घृणित और पाप किया का कोई साक्षी न हो। वह जानता था कि शायद पाप वासना को पूर्ण करने के लिए बलात्कार प्रयोग की आवश्यकता हो, उस अवस्था में कमला देवी का चिल्लाना कोई न सुन पावे, इसलिये मैदान साफ करके वह अन्दर घुसा था। फुटबाल के ब्लेडर में खूब हवा भरिये, इतनी भरिये कि वह फट जाय, फटे हुए स्थान से हवा जिस जोर से भागेगी, कमला देवी भी उस तम्बू से निकल कर उसी वेग से जंगल की ओर भागी। उस समय उसने पीछे लौट कर नहीं देखा कि कोई उसे देखता है या नहीं। दैवयोग से उसे किसी ने देखा भी नहीं। यह तम्बू सारे डेरों से जुदा ही लगाया गया था। उस अचेतन दशा में गुलाम कादिर यह भी न समझ सका कि पंछी पिंजरा तोड़कर उड़ गया।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# चौबीसवां परिच्छेद

## श्री स्वामी कमलानन्द सरस्वती

गुलाम कादिर के डेरे से लगभग दो मील की दूरी पर राजपूताने से दिल्ली की ओर जाती हुई सड़क गुजरती थी। गर्मी के दिन थे, और मध्यान्ह का समय था। सड़क पर मानों धूल के ढेर लगे हुए थे। रास्तों पर चलना मुश्किल हो रहा था।

सड़क के किनारे पर एक बड़ा बड़ का वृक्ष था, जिसके नीचे एक कुंआ बना हुआ था, किसी समय उस कुएँ की मेंड़ बड़ी अच्छी रही होगी, किन्तु अब वह टूटी फूटी सी दशा में थी। किनारे टूट गये थे, पक्के फर्श की ईंटें कई स्थानों से गिर कर कुंए में जा समाई थीं, और लम्बी लम्बी सूखी घास किनारे पर से अन्दर को लटक रही थी।

कुंए के पास ही एक कच्ची झोंपड़ी बनी हुई थी, जो बहुत पुरानी थी। उस कुटिया में एक साधु रहता था। उसकी उम्र ६५ साल से कम न होगी। इस प्रकार वह स्थान बूढ़ों की क्रीड़ास्थली बना हुआ था। बूढ़ा साधु, साधु से बूढ़ी कुटिया, कुटिया से बूढ़ा कुआं, और कुएँ से बूढ़ा बड़ा पेड़ और मध्यान्ह के समय उस बड़ पर सब से बूढ़ा भुवन भास्कर अपनी प्रखर किरणों का जाल फैला रहा था।

एक धूप का सताया हुआ राही सिपाही कुटिया के दरवाजे पर पहुँचा, और "क्या कोई है ? क्या कोई है ?" कह कर पुकारने लगा। बूढ़ा साधू सो रहा था, वह उठा और "नारायण ! नारायण !!" बोलता हुआ दरवाजा खोलने लगा। राही कुटिया के अन्दर पहुँचा। साधु बड़ा सज्जन था। राहजनों की यथाशक्ति सेवा करता था। सिपाही को बिठाकर ठंडा होने

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



के बाद उसने जल पिलाया। बूढ़ों को बातों का शौक बहुत होता है, और दुखिया को अपने मन का भाव उगले बिना चैन नहीं होता। कुटिया में पड़े पड़े दोनों ही व्यक्ति बहुत देर तक इधर उधर की बातें हांकते रहे—सिपाही ने अपना दुखड़ा रोया, साधु ने अपनी कहानी कही। इसी प्रकार दो तीन घण्टे गुजार कर पथिक सिपाही दिल्ली की ओर चल दिया।

सिपाही के जाने के दो घड़ी पीछे, जरा धूप ढलने पर साधु कुटिया से बाहर आया, तो देखता क्या है कि वृक्ष की ओट में कुएँ के पास एक षोडश वर्षीय सुन्दरी लेटी हुई है। साधु उसके पास गया और देखने लगा। देख कर वह आश्चर्यान्वित और विस्मित हुआ। सुकुमारी का अंग प्रत्यंग मानों सौंदर्य का भण्डार था, मानों लावण्य का सरोवर था। किन्तु वस्त्र स्थान स्थान पर फटे हुए थे, पांव कांटों से छलनी हुए पड़े थे, मुंह पर थकान और घबराहट के चिन्ह प्रतीत होते थे। केश राशि पत्तों पर बिखरी हुई थी, मानों कोई लता सूर्य के ताप से कृष्ण वर्ण होकर फैल गई हो। प्रतीत होता था, वह थकी मांदी आकर विश्राम करने यहां बैठी थी, और श्रांति के मारे बेहोशी की नींद में सो गई। साधु उस दयाजनक दृश्य को देख कर उस बालिका के पास गया और बैठकर उस की नाक पर हाथ रख सांस की गति देखने लगा।

साधु ने सुन्दरी को किस प्रकार सचेत किया, किस प्रकार दिलासा दिया और किस प्रकार सेवा सुश्रुषा करके शांत किया—यह सब बताने में व्यर्थ समय लगेगा। हम इन्हें छोड़ देते हैं क्योंकि पाठक स्वयं इन बातों की कल्पना कर सकते हैं, हम तो पाठकों को केवल इतना ही बता देना पर्याप्त समझते हैं, कि उस बालिका की दुःखकथा सुन कर साधु को विश्वास हो गया कि वह बालिका वही कमला देवी है, जिसके

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai


विषय में उसी दोपहर को पथिक सिपाही ने बताया था कि उसे कोई दुष्ट डाकू बलात्कार पूर्वक मंदिर से चुरा ले गया है।

साधु ने भी सिपाही की कहानी कमला देवी को सुना दी जिससे कमला देवी को विश्वास हो गया कि जो सिपाही वहां से गुंजरा था वह तेजसिंह ही था।

दूसरे दिन प्रातःकाल अपने हृदय से बहुत कुछ परामर्श करके कमला देवी हृदयेश्वर को ढूँढ़ने के लिये दिल्ली की ओर चलने को तैयार हुईं। स्त्री वेश में दिल्ली जाना उचित न समझ कर कमला देवी ने उस साधु से कुछ गेरू लियीं। गेरू से अपने कपड़े रंग डाले और सिर पर सुन्दर घुंघराले बालों का जटाजूट बांध कर खासा सन्यासी का वेष बना लिया।

प्रेम की महिमा अपार है। प्रेम बुद्धिमान से बुद्धिमान पुरुष को भी मतवाला और पागल बना देता है। जो पंडित अन्य समयों में पांच बार तोले बिना बात नहीं कहते वे प्रेम में आकर न जाने क्या बोलते और क्या कहते हैं। जो प्रेम बुद्धिमान को दीवाना और दीवाने को बुद्धिमान बना सकता है, वह पुरुष को स्त्री वेश और स्त्री को पुरुष वेश भी पहिना सकता है। उसी ने कमला देवी को बालक से श्री स्वामी कमलानन्द जी बना दिया।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# पच्चीसवां परिच्छेद

## अन्धेरे में मन्त्रणा

सितम्बर का महीना समाप्त होने को था। यमुना नदी भी सायंकाल के सूर्य की भांति अपने यौवन को धीरे धीरे त्याग रही थी। रात्रि के लगभग १२ बजे होंगे। चारों ओर भयंकर अन्धकार था, मानों प्रचण्ड प्रलय ने सब व्याप लिया हो। शांत गम्भीर निस्तब्धता का समय था, कहीं किसी मनुष्य के आने जाने की भी आहट नहीं सुनाई पड़ती थी। बीच बीच में कभी कभी यमुना कच्छ के समीपवर्ती खेतों में से स्यार बोल उठते थे, मानों जंगल का पहरा दे रहे हों, उनका बोलना बन्द होते ही मैदान और खेतों में शांति का राज्य हो जाता था। उस गम्भीर शांति का भेदन करते हुए दो गम्भीर और मन्द स्वर सुनाई देते थे। यमुना जल के चलने से जो बड़ा धीमा शब्द उत्पन्न होता था और दिन में ज्ञात भी न होता था, वह रात को स्पष्ट और निरन्तर सुनाई देता था। ऐसा भान होता था मानों बड़ी दूरी पर कोई पानी भरा मेघ गर्ज रहा हो। एक वह शब्द था, दूसरा शब्द यमुना के दायें किनारे की ओर से आ रहा था। रात की गोद में सोई हुई निस्तब्ध दिल्ली की एकाग्रता का भंग करने वाला यह दूसरा स्वर लाल किले से उत्पन्न हो रहा था।

आज लाल किले में एक प्रकार की हलचल है। बाजार बंद हो चुके हैं, आवाज रुकी हुई है और अमीर, सरदार अपनी २ डोलियों या घोड़ों पर सवार हो रवाना हो चुके हैं, तो भी शांति नहीं हुई। फौजें जाग रही हैं, सन्तरी पहरा दे रहे हैं और यमुना की ओर मुंह बाये तोपें तैयार खड़ी हैं। अन्तःपुर में भी बड़ी हलचल है। बादशाह शाह आलम बड़ी चिन्ता

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



और घबराहट में बैठे हुए अपने मझले पुत्र मिर्जा अकबर से दिन की दुर्घटनाओंपर विचार कर रहे हैं। गुलाम कादिर और इब्राहीम ने यमुनातट पर से किले पर गोले बरसाये। बहुत सी मुगल सेना उनसे जा मिली, अभी तक सिंधिया की ओर से कोई सहायता नहीं आई। इन्हीं बातों पर पिता पुत्र विचार कर रहे हैं। इसी प्रकार सारे क़िले में दो दो, चार चार आदमी इकट्ठे बैठे हुये समीपस्थ दुर्घटनाओं पर दिमाग लड़ा रहे थे, और जीभ चला रहे थे। इन सब छोटे छोटे शब्दों का मिल कर एक गहरा निरंतर शब्द उत्पन्न होकर यमुना के दूसरे पार तक पहुँच रहा था, जहां पानी द्वारा छोड़े हुए गीले स्थान पर खड़ा एक आदमी क़िले की ओर देख रहा था। यही आदमी लाल क़िले के वासियों की चर्चा का विषय था। गुलाम कादिर उस अंधेरे में अकेला खड़ा हुआ था। उसकी फौज का डेरा लगभग आध मील दूर होगा। इस अन्धेरी रात में खड़ा हुआ वह पठान सरदार क्या कर रहा था।

मनुष्य कैसा बुरा है। सूर्य ने अपने ताप का संहार कर लिया है, प्रकृति माता की आज्ञा पाकर पक्षी भी प्रशांत हो सो रहे हैं, ईश्वर के नियम से फेंके हुए पंचभूत भी मानों निःश्वास हो गए हैं, किन्तु मनुष्य के पुत्र को चैन नहीं। ईश्वर की सुन्दर सृष्टि में कलंक लगाना, और प्रकृति के सुखदायी राज्य का भंग करना, मनुष्य के ही हिस्से में आया है। यदि गुलाम कादिर के हृदय में जो भयंकर भाव काम कर रहे हैं, बाह्य संसार के साथ उनकी तुलना की जाय तो दिन रात का अन्तर प्रतीत होगा। इतने पर भी मनुष्य कहते हैं कि "हम सृष्टि के स्वामी हैं।"

देर तक प्रतीक्षा के पीछे गुलाम कादिर इधर उधर घूमने लगा। यह घूमना उसकी व्यग्रता की वृद्धि की सूचना दे रहा था। वह कुछ बड़ बड़ाने लगा—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



"मैं समझा। मंजूर अली की सब बातें झूठी ही थीं। वह बदमाश भी धोखेबाज है। खैर क्या हुआ, जहां और हजारों सिर काटूंगा, वहां उसका सिर भी सही। थोड़ी देर और देखूंगा, अगर वह न आया, तो फिर सभी को जहन्नुम पहुँचाने की तदबीर करूँगा।"

टहलता टहलता गुलाम कादिर खड़ा हो गया। उसकी आंखें लाल हो रही थीं, और हाथों की मुट्ठी बंध रही थी, वह फिर बड़ बड़ाया—

"आह उस कमसिन की ढिठाई! शैतान की बच्ची की हिम्मत! उस वक्त कुछ न दीखा, नहीं तो उस कुत्ती की देह के टुकड़े २ करके कुत्तों को खिला देता। आज भी नाक दर्द कर रही है। अब अगर कहीं उसे पकड़ पाऊँ तो एक बार दिल की जलन बुझा कर फिर कुत्तों से नुचवा डालूं। आह, उसकी खूबसूरती! उसकी खूबसूरती ने मुझे दो बार घायल किया है। मैंने तो मन्दिर पर उस पाजी अनजान राजपूत के लिये छापा मारा था और वहां फिर वही राजपूतनी।" यहां गुलाम कादिर की मुट्ठी और भी जोर से बंध गई। "अच्छा फिर सही, फिर सही।"

इतने में एक स्यार चिल्ला उठा। एक के पीछे और भी कई स्यार हूँकने लगे। गुलाम कादिर की विचार श्रृंङ्खला टूट गई, उसने स्यार को जहन्नुम में जाने का निर्देश किया और फिर यमुना की ओर दृष्टि दौड़ाई। वहां धीमी धीमी चाल से बहता हुआ शीतल जल था—और कुछ नहीं। मंजूर अली को एक भीषण गाली देकर गुलाम कादिर आप ही आप बोलने लगा—"पाजी शाह आलम! अब देखना क्या मजा चखाता हूं। तूने किसी दिन गुलाम कादिर को अपना अरदली बनाया था। तूने ही किसी दिन एक औरत की डाह में गुलाम कादिर को बेइज्जत करके दरबार से निकाला था। आज वही गुलाम कादिर या तो तेरा अमीर उल उमरा (देश सचिव) बन कर रहेगा और या इस लाल किले की दीवारों को तेरी कब्र बनायेगा। मेरे दिल की आग ऐसे नहीं बुझेगी। वजीर की गद्दी मेरे

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



बाप की है, उसे कौन ले सकता है ? और फिर हिन्दुओं की बढ़ती कौन मुसलमान बच्चा देख सकता है ? सिंधिया का सत्यानाश किये बिना अब ग़ुलाम कादिर और इस्माईल को चैन नहीं ।"

गुलाम क़ादिर इस्माईल का नाम तो अकस्मात ले गया, परन्तु साथ ही उसके माथे पर त्यौरी चढ़ गई । न जाने उसके मन में क्या विचार आया कि एकदम शैतान की मुस्कराहट मुंह पर आ गई ।

"यह कल का छोकरा समझता है कि मुझसे अपना काम निकाल लेगा । अरे ! तेरे ऐसे छोकरे बीसियों देखे हैं और खपा दिये हैं । तू क्या तेरे बड़े भी गुलाम कादिर को बेवकूफ नहीं बना सकते । उल्टा तू ही संभल कर रहना, जहां मेरा काम बना कि बस फिर"—यहां गुलाम कादिर ने कमर में बँधी हुई तलवार की मुट्ठी छुई ।

इसी समय वह चौंक पड़ा । अपने विचारों में वह इतना मस्त था कि उसने यमुना के उस पार से आती हुई एक छोटी सी किश्ती को नहीं देखा। उस किश्ती में केवल दो आदमी थे । एक किश्ती चलाने वाला और दूसरा बादशाह शाह आलम के घर का प्रबन्धकर्त्ता—वही हमारा पुराना परिचित मंजूर अली खां ।

दोनों परस्पर मित्रों की भांति मिले और कुछ परामर्श करते रहे । कोई दो घड़ी तक उसी एकांत स्थान में वह दोनों मुगल साम्राज्य से हिन्दू प्रभाव की जड़ खोदने और गुलाम कादिर को अमीर उल उमरा बनाने और बादशाह को काँबू करने के तरीकों पर विचार करते रहे । हम पाठकों को यह बताना नहीं चाहते कि उन्होंने कौन सी स्कीम स्थिर की । पाठक अगली कहानी में स्वयं ही उस स्कीम को जान जायंगे । दो घड़ी पीछे दोनों फिर मित्रों की भांति बिदा हुए । मंजूर अलीखां किश्ती पर चढ़ दूसरी पार चला गया और गुलाम कादिर विचार सागर की तरंगों में हिलोरें लेता लेता डेरे पर जाकर लेट रहा ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# छब्बीसवां परिच्छेद

## घटना चक्र

एक कहावत है कि सच्ची घटना इतिहास से कहीं अधिक मनोरंजक होती है। किसी किसी ऐतिहासिक घटना का वृतान्त पढ़ें तो उपन्यास से भी बढ़कर मनोरंजकता दिखाई देगी। इस पर शायद पाठक पूछ बैठें कि यदि ऐसा ही है तो फिर लोग उपन्यास क्यों पढ़ते हैं, इतिहास क्यों नहीं पढ़ते? इसका यह कारण है कि इतिहास को भली प्रकार मनोरंजक रीति पर लिखा नहीं जाता। या तो उसे तिथियों या घटनाओं का सूचीपत्र बना दिया जाता है, या इतिहास के मिस से राजनीति के रहस्य बखान दिये जाते हैं। इन दोनों प्रकारों से भी इतिहास लिखा जाय तो कोई हर्ज नहीं है। किन्तु इतिहास लिखने का एक तीसरा भी प्रकार है। लार्ड मैकाले ने इङ्गलैण्ड का इतिहास लिख कर कुछ समय के लिये ड्राइंग रूमों से उपन्यास उठा दिये थे। उस इतिहास में लिखी हुई घटनायें उपन्यास से भी अधिक मनोरंजक प्रतीत होती हैं।

इतिहास कैसा मनोरंजक हो सकता है, इसका एक प्रमाण हम यहां भी उपस्थित करना चाहते हैं। यहां हम कुछ थोड़ा सा ऐतिहासिक घटना चक्र सुनाते हैं, उसे पढ़िये और देखिये कि कितना उपन्यास सदृश प्रतीत होता है। यह इतिहास ग्रन्थ का उल्लेख है या उपन्यास है—यह समझना आपके लिये दुष्कर होगा।

सन् १७८७ ईस्वी की वर्षा ऋतु के अन्त में गुलाम कादिर दल बल सहित दिल्ली के समीप पहुंचा। शाहदरे की ओर यमुना के किनारे उसने अपना डेरा लगाया और अमीर उल उमरा का अधिकार पाने की सीधे रास्ते से

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



आशा न रख कर बगावत का झंडा खड़ा किया। उसकी जो इच्छा थी, वह दुर्लभ प्रतीत होती थी। बादशाह शाह आलम माधोजी सिंधिया के वश में था और बहुत सी मरहठा सेना हमेशा उसके पास रहती थी। गुलाम कादिर का कार्य कठिन था सही, किन्तु कई अवस्थायें अनुकूल भी थीं। बादशाह के घर में ही उसके दुश्मन बैठे हुए थे। घर का भेदी लंका ढावे—मंजूरअली कादिर का पुराना दोस्त था। वही चुपके चुपके उसकी सहायता करता रहता था। उसी के प्रभाव से कादिर किले की बहुत सी मुगल सेना को अपनी ओर लाने में कृतकार्य हुआ। शराबी का दोस्त जुआरी—जैसा गुलाम कादिर था, वैसा ही मंजूर अली था।

किले की फौज का मुसलमान सेनापति औलिया निजामुद्दीन था, और मरहठा सेना का नायक सिंधिया का एक सम्बन्धी था।

गुलाम कादिर माला फेरने वाले औलिया साहब से डरने वाला नहीं था, और विशेषतया जब कि मुगल सेनाओं के खस्ता हाल का उसे पता हो। उसकी तोपों ने किले पर गोलाबारी शुरू कर दी, और वह स्वयं यमुना लांघ कर दिल्ली पर भूत की भांति आ सवार हुआ। बादशाही फौजों ने भागकर वल्लभगढ़ के किले में शरण ली और गुलाम कादिर ने बादशाह की सेवा में उपस्थित होकर पांच मुहरें भेंट कीं और 'अमीर उल उमरा' का अधिकार पाने के लिए प्रार्थना की। प्रार्थना थी या आज्ञा थी, यह निश्चय करना बड़ा कठिन है, किन्तु यह सच है कि प्रार्थना करने के साथ ही उसने अमीर उल उमरा के रहने के स्थान पर अपना पलंग बिछा लिया।

उस समय उस आलसी, अनाचारी, अभागे बादशाह की भी आंखें खुलीं। अब तो सहायता के लिए चारों ओर दूत भागने लगे और कुछ ही दिनों में इधर से बेगम समरू, उधर से नुजफ अलीखां और तीसरी ओर से सिंधिया का सेनापति अप्पाजी इंगलिया बादशाह की रक्षा को आ उपस्थित हुए। कोष में सेना का पेट भरने के लिए धन नहीं था, इसलिए शाह

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



आलम ने वेशकीमती निजू बर्तन बेचे। इतने शत्रुओं से घबरा कर गुलाम कादिर यमुना पार भाग गया किन्तु उसके बिना चाहे ही उसकी मुराद पूरी हुई। चतुर सिंधियां ने सोचा कि "यह रुहिल्ला पठान तंग करेगा, इसे भी अपनी ओर फांसना चाहिए, बस, बादशाह को आज्ञा भेज दी कि गुलाम कादिर को ही अमीर उल उमरा बना दिया जाय।" इस प्रकार गुलाम कादिर को उस मनुष्य की कृपा से अभीष्ट पद प्राप्त हो गया, जिसका वह ज्ञानी दुश्मन था।

यदि गुलाम कादिर की जगह इस्माईल होता तो सिंधिया का अभीष्ट सिद्ध हो जाता, किन्तु उसे ज्ञात नहीं था कि कुटिलता कादिर की श्वास थी और अकृतज्ञता उसका जीवन था। कादिर जैसा था, उसका परिणाम यह हुआ कि सिंधिया को एक मित्र तो क्या मिलना था, हां जिस सांप की दाढ़ों में जहर नहीं था वहां जहर पैदा हो गया। गुलाम कादिर सिंधिया का अहित करने के अधिक योग्य हो गया।

गुलाम कादिर ने अमीर उल उमरा बनने पर पहिला काम यह किया था कि सिंधिया के सेनापति पर आक्रमण शुरू कर दिये। सिंधिया की धूर्तता ने फिर एक बार हार खाई।

इस समय कुछ दिनों तक सिंधिया पर ग्रहों की कृपा हुई। हवा के भंवर में फँसे हुये तिनके की भांति वह इधर से उधर और उधर से इधर ठोकरें खाने लगा। फतहपुर सीकरी में उसकी सेना का कादिर और इस्माईल की सेनाओं से सामना हुआ, पूरी जीत किसी की भी न हुई, कुछ हुई भी तो मुसलमानों की। वहां से धक्का खा कर सिंधिया अलवर में पहुंचा, तो वहां से राजा प्रतापसिंह की सेना ने खदेड़ दिया। सिंधिया आगरे में पहुंचा तो वहां उसके दुर्भाग्य से इस्माईल बेग विद्यमान था। उसने जो ठोकर मारी तो सिंधिया की सेना चम्बल के उस पार जा रही। वहां सिंधिया का सितारा चमका। रानाखां बहुत सी सेना लेकर उसकी सहायता को आ उपस्थित

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



हुआ। नई सहायता पाकर अनथक साहसी सिंधिया ने फिर आक्रमण किया। जैसे सूर्य का प्रकाश रात और अंधियारी को इकट्ठा ही भगा देता देता है, इसी प्रकार कादिर और इब्राहीम को जान बचाकर भागना पड़ा।

कादिर हार गया, किन्तु उसका जी नहीं हारा। इधर उसकी कठिनाईयां और भी बढ़ गईं। वह सिंधिया के कहने से अमीर उल उमरा बना था, सिंधिया से लड़ कर उसने वह अधिकार खो दिया। इधर इब्राहीम का दिल कादिर की ओर से खट्टा हो गया। इन दोनों मुसलमान नवयुवकों की महत्वाकांक्षा तो समान थी, पर स्वभाव में बड़ा अन्तर था। गुलाम कादिर में शेर और लोमड़ी के अंश मिले हुये थे, इब्राहीम में लोमड़ी का अंश नहीं था, वह धोखा और फरेब पसन्द नहीं करता था। आगरे की लड़ाई में मुसलमानों के हारने का बड़ा कारण यह था कि गुलाम कादिर ने जानबूझ कर या अनजाने इस्माईल की पूरी तरह सहायता नहीं की। इस घटना से इस्माईल के मन में तरह तरह के संदेह उत्पन्न हो गये। वह यह भी भूल नहीं सका कि अभी जब गुलाम कादिर अमीर उल उमरा बना तो इस्माईल बेचारा ठन ठन गोपाल ही रह गया। इससे उसका कादिर पर अविश्वास सा हो गया।

गुलाम कादिर जोशीले और भोले भाले मुगल को काबू करना चाहता था। दूसरी कठिनाई का हल तो मीठी मीठी बातों से किया, और पहली कठिनाई का हल करने के लिये फिर दल बल सहित शाहदरे में डेरा लगा दिया। पाठक! सीधे इतिहास का परिच्छेद यहां समाप्त होता है, अब आगे जो कुछ हुआ वह उपन्यास लेखक के मुंह से सुनिये।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# सत्ताईसवां परिच्छेद

## प्यारे की खोज

साधु कमलानन्द ने उस बड़ वाले कुएं से चल कर पहले दिन १५ मील का सफर किया। उसने बूढ़े साधु से सुना था कि सिपाही एक ही दिन पहले रवाना हुआ है। कमला देवी ने सोचा कि शायद किसी कारण तेजसिंह ठहर जाय तब रास्ते में ही वह तेजसिंह को पकड़ लेगी, इसलिये बड़ी तेज चाल से चलने लगी। वह प्रातःकाल उठते ही चल निकली थी। अभी जून के तमतमाते दिन दीप की प्रखर किरणों से मार्ग को असह्य नहीं बना सके थे। कमला देवी को घर से निकले आज कई बरस बीत गये थे। उसे चलने का पर्याप्त अभ्यास हो गया था। वह उसी धूलि धूसरित मार्ग पर दोपहर तक चलती गई। रास्ता चलते मुसाफिरों से बीच बीच में पूछती जाती थी कि 'बाबा! क्या कोई सिपाही आगे गया है।' कोई भला मानस उत्तर में कह देता 'हां अभी पास ही कोई मील भर आगे होगा।' कमला देवी पास ही का नाम सुनकर जल्दी जल्दी डग बढ़ाने लगती। आध मील चल कर कोई गांव वाला मिलता तो उससे फिर पूछती 'बाबा! कोई सिपाही जाते देखा है?' वह कहता 'बाबा जी! यही कोई सौ कदम होगा।' बेचारी कमला देवी को क्या पता था कि गांव वालों के सौ कदम दो मील के बराबर होते हैं। वह बेचारी और वेग से चलने लगती। दूर से किसी आदमी को खड़े देखती तो सोचती कि वह अवश्य तेजसिंह ही होगा। देखो, वैसी ही पगड़ी है, वैसा ही कद है, वैसी ही पीठ है। पास जाकर देखती तो एक गांव वाला चरती हुई भैंसों को देख रहा होता और कोई ग्रामीण राग गुन गुनाता मिलता। कहीं दूर रास्ते पर गौएं चर रही थीं, बेचारी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



कमला देवी ने समझा कोई आदमी, शायद तेजसिंह हो। वह बड़ी तेजी से चलने लगी। गौएं चरती २ जंगल में चली गईं, मैदान साफ देख कर कमला देवी खड़ी हो गईं। किसी प्रबल भाव से आक्रांत मनुष्य सब चीजों को आत्मानुकूल ही देखता है—कमला देवी की यही गति हुई।

धीरे धीरे दिन यौवन पर आने लगा। सूर्य की प्रचण्ड किरणों से थल में मानों आग सी लगने लगी। सूर्य के प्रखर वज्रों से तड़ित होकर गर्म गर्म पवन भी भागने और हाहाकार करने लगा। सड़क का मार्ग दुर्गम से दुर्गमतर होने लगा। कमला देवी किसी अनिर्वचनीय धक्के से ढकेली हुई आगे ही आगे बढ़ती गई। बढ़ती तो गई पर कब तक? आखिर मनुष्य पर प्रकृति ने विजय पाना प्रारम्भ किया। वह आखिर स्त्री थी, सुख पालिता थी। धूप असह्य हो गई, थकान ने जोर मारा। साथ ही साथ अत्याचारी दल की मुखिया भूख और प्यास ने भी सिर उठाया। जब तक जोश था और आशा थी, तब तक धूप और भूख दबे रहे, किन्तु ऐसा भ्रांत आवेश कब तक निभता। कमला देवी निराश होकर, थककर एक वृक्ष तले बैठ गई। वृक्ष के पास ही एक कुआं था, गांव की एक स्त्री अकस्मात् वहां पानी भरने आ निकली। एक साधु को प्यासा देख उसने पानी पिला दिया। पानी पी कर साधु कमलानन्द वृक्ष के ही नीचे सो रहा।

जो किसी दिन माता पिता के घर गद्दों पर सोती थी, वह आज दैव और प्रेम के वश में आकर अकेले उजाड़ जंगल में बिना किसी बिछौने के अकेली सो रही है। सच है प्रेम और दैव के सन्मुख बड़े २ सिर झुकाते हैं।

जो एक दिन हुआ, वह कई दिन तक होता रहा। कमला देवी चलती रही, थकती रही। कभी खाने को मिलता, तो कभी भूखों ही दिन रात गुजारने पड़ते। कभी रात को किसी गांव की चौपाल में जगह मिल जाती, तो कभी पेड़ तले ही रात काटनी पड़ती। साधारण दशा में एक युवती के कोमल शरीर के लिये यह कष्ट बहुत थे, परंतु कमला देवी कई वर्ष से

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



मुसाफिर बन चुकी थी। अब उसे शारीरिक कष्ट सहने का काफी अभ्यास हो गया था। रास्ते में कई बार पांव में छाले पड़ जाने से चलना बिल्कुल असम्भव हो जाता था। तब कमला देवी लाचार होकर किसी वृक्ष के नीचे बैठ रहती, और खूब पेट भर कर रोती।

इसी प्रकार कष्ट उठाते, आराम करते और फिर सफर करते हुये साधु कमलानन्द सरस्वती को एक मास के लगभग समय लग गया। लालसोठ से दिल्ली लगभग २०० मील है। पहले कुछ दिनों तक तो साधु तेरह चौदह मील की मंजिल तय करते रहे, परन्तु पीछे से १० मील भी मुश्किल से पूरे होते क्योंकि धूप बहुत थी, और मार्ग विकट था। अकेले दुकेले का काम नहीं था कि रात को सफर करे। प्रातःकाल धूप तेज होने से पहले ही रोज की मंजिल पूरी कर लेनी पड़ती थी। बीच में कई दिन तबीयत बिगड़ जाने से तो बिल्कुल नागा पड़ गया। इस प्रकार मार्ग में लगभग एक महीना बिताकर एक रोज आखिर साधु जी दिल्ली की चार दीवारी के पास पहुँच ही गये। सबेरे से चल रहे थे। आज आखिरी मंजिल थी। प्रातःकाल जिस गांव से चले थे, वह दिल्ली से १४ मील दूर था। मंजिल के दो टुकड़े करने की इच्छा न हुई। सोचा कि आज ही दिल्ली पहुँचना चाहिये। चलते चलते दोपहर का समय सिर पर आ गया। जिस समय साधु जी शहर के शानदार दरवाजे के पास पहुंचे, उस समय सूर्य अपने पूरे प्रताप पर था। शहर में पहुंचकर एक छोटे से मन्दिर में डेरा जमाया और कुछ अन्न और जल मुंह में डाल कर आराम करने के लिए लेट गये।

लेट कर कमला देवी सोचने विचारने लगी कि अब क्या करना चाहिये। कई प्रकार के तर्क वितर्क मन में उठने लगे। क्या तेजसिंह शहर में ही होगा या वह सुजानपुर चला गया होगा? सुजानपुर जाने की तो कोई संम्भावना नहीं है, क्योंकि अब वहां क्या धरा है? तेजसिंह का पिता ध्यानसिंह दिल्ली में ही रहता है। शायद वह पिता के पास ही होगा। कहीं वह मुझे

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



तलाश करने के लिये इधर उधर न निकल गया हो ! बहुत देर तक सोच कर भी कमला देवी किसी निश्चय पर न पहुँच सकी। रात को मन्दिर में ही आराम किया। फिर प्रातःकाल थकान उतर जाने पर उसी साधुभेष में मन्दिर से निकल कर बाहिर आई और सोचने लगी कि किधर जाना चाहिये।

सड़क पर आकर कमला देवी ने देखा कि बहुत सी भीड़ एक ही तरफ को जा रही है। कारण पूछने पर पता लगा कि आज दिन चढ़ते चढ़ते लाल किले में एक बड़ी भारी सवारी आने वाली है। उसी सवारी का तमाशा देखने के लिये शहर की जनता किले की ओर उमड़ी जा रही है। किं कर्तव्य विमूढ़ कमला देवी बिना सोचे समझे उस उमड़ती हुई भीड़ में शामिल हो कर शाहजहां के बनाये हुये प्रसिद्ध लाल किले की ओर चल दी।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# अट्ठाईसवां परिच्छेद

## पहिचान लिया

जुलाई की १८ तारीख थी। प्रभात का सुहावना समय था। भीड़ के धक्कों से बचने के लिए सड़क के किनारों पर चलती हुई कमला देवी चांदनी चौक में से गुजर कर किले की सड़क पर आ पहुंची। वहां पहुंच कर देखा कि किला पास ही है, परन्तु आगे जाने का रास्ता बन्द है। केवल वह रास्ता खुला हुआ था, जो चांदनी चौक से निकल कर जुम्मा मस्जिद की ओर जाता है। सारी भीड़ उधर को ही उमड़ी जा रही थी। कमला देवी ने वही रास्ता पकड़ा और धक्के देती और धक्के खाती हुई मस्जिद के नीचे पहुंच गई। वहां से असंख्य भीड़ दरियागंज की ओर जा रही थी। कमला देवी भी उधर ही को चल दी, यहां तक कि वह उस रास्ते पर पहुंच गई जो दरियागंज से निकल कर किले के दरवाजे में प्रवेश करता है। आगे जाने का रास्ता बन्द था, सड़क के दोनों ओर लोग ठसाठस भरे थे। सड़क के दोनों ओर सिपाही पहरा दे रहे थे इसलिए सड़क खाली थी। पहले तो भीड़ में कमला देवी सड़क के किनारे कोई अच्छी जगह न पा सकी, परन्तु थोड़ी देर परिश्रम कर खड़े होने लायक स्थान मिल गया। भगवे वेष ने स्थान दिलाने में काफी सहायता की। कमला देवी को ऐसा स्थान मिल गया, जहां खड़ी होकर वह सड़क पर आने जाने वालों को अच्छी तरह से देख सकती थी।

भीड़ में चर्चा हो रही थी कि आज एक बड़ा सरदार बादशाह को सलाम करने आयगा, उसके साथ दस हजार फौज होगी। वह लम्बाई में साधारण आदमी से ड्योढ़ा है। उसके आगे बादशाहत भी कांपती है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



कोई कहता था कि "नहीं—वह बड़ा सरदार नहीं है, वह बादशाह सलामत का कोई पास का रिश्तेदार है।" तीसरा आदमी जिसे दरबार की कुछ वाक़फ़ियत थी लोगों को सिर हिला कर बता रहा था कि "आज एक पठान नवाब किले में जायगा जो तख्त का उम्मेदवार है।" कमला देवी इन भिन्न भिन्न चर्चाओं में से केवल इतना ही परिणाम निकाल सकी कि शीघ्र ही वहां से किसी बड़े आदमी की सवारी निकलने वाली है।

भीड़ को बहुत देर तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। लगभग ९ बजे सड़क पर हलचल प्रारम्भ हो गई। कुछ घुड़सवार किले की ओर से आते हुये दिखाई दिये। लगभग बीस घोड़ों पर सवार जवान फौजी वेष धारण किये सामने से गुजर गये। यह सब मुसलमान थे। उनके चले जाने के थोड़ी देर पीछे कुछ और घुड़सवार आते दिखाई दिये। दूर से ही दिखाई देता था कि आते हुये घोड़ों पर राजपूत योद्धा बैठे हुये हैं। राजपूतों की शान निराली ही थी। राजपूती पगड़ियों के नीचे मोड़दार मूंछें वीरता की प्रतिनिधि स्वरूप बनकर विशाल गठीले शरीर रूपी स्वर्ण पर सुगन्ध का काम दे रही थीं। यह राजपूत संख्या में कम थे, पर शान में कम नहीं थे। जनता की आंखें इन रोबदार जवानों पर बड़े आदर भाव से पड़ती थीं। कमला देवी अनमनी सी होकर सारे दृश्य को देख रही थी। उसका चित्त कहीं और था—केवल आंखें सड़क पर लगी हुई थीं। अकस्मात वह चौंक उठी। क्या वह सचमुच देख रही है, या सपना ले रही है? इन राजपूत जवानों के बीच में उसे तेजसिंह की शक्ल दिखाई दी। अचानक दृष्टि पड़ते ही कमला देवी चिहुंक उठी और समीप ही था कि चिल्ला उठती, पर अकस्मात उसी समय उसके पास खड़े हुए एक लम्बे चौड़े पठान का पैर पड़ोसी के पैर पर पड़ गया, जिससे पड़ोसी चिल्ला उठा और अपने पड़ोसी की ओर को झुका। धक्का लगने से वह दूसरे पर गिरा, और दूसरा तीसरे पर गिरा, इसी में पंक्ति टूट गई और कमला देवी जिस स्थान पर खड़ी थी, वहां न रह सकी।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



सड़क पर आते जाते आदमी आंखों की ओझल हो गये। जब गड़बड़ हटी और लोग शांति से खड़े हो गये तो कमला देवी ने देखा कि घुड़सवार आगे बढ़ गये हैं–उन्हें पहिचानना कठिन है। कमला देवी पहले तो बहुत निराश हुई, परंतु शीघ्र ही मन में ध्यान आया कि जो सिपाही आगे को गये हैं, वह अवश्य ही लौट कर आयंगे क्योंकि सवारी दरियागंज से आने वाली है।

इन्तजार का एक घंटा बड़ी मुश्किल से बीता। १० बजे के लगभग दरियागंज की ओर से लोग आने लगे। आगे आगे कुछ सिपाही थे, उनके पीछे वह राजपूत सिपाही थे, जो अभी किले की ओर से गए थे। इस बार कमला देवी पहले से तैयार थी, इसलिए खूब अच्छी तरह तेजसिंह को देख सकी। जब तक जवान सामने रहे, कमला देवी एक टक उधर ही देखती रही। उसे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि जहां जाते हुये तेजसिंह का मुख शांत था, वहां लौटते हुए उस पर क्रोध और अशांति के चिन्ह पाये जाते थे। उस समय उसकी विचित्र दशा थी। जिस चीज को खोजती हुई यहां तक आई है, वह सामने विद्यमान है। जिस देवता की आराधना में उसने कठोर तपस्या का व्रत धारण किया और निभाया है वह प्राप्त हो गई है, परंतु प्राप्य होकर भी अप्राप्य है। कमला देवी अभीष्ट वस्तु को देख रही है, पर पा नहीं सकती। वह दर्शन अदर्शन से भी अधिक दुखदायी था। कमला देवी का कलेजा धड़क रहा था। वह सोच रही थी कि यह सुख केवल आंखों का है, और वह भी क्षणिक है।

राजपूत आगे बढ़ गये। उनके पीछे दो घुड़सवार थे, जो नवाबों के खास अर्दली प्रतीत होते थे। उनके पीछे, थोड़ी दूर पर दो घुड़सवार आ रहे थे, जो कोई बड़े आदमी प्रतीत होते थे। वही नवाब थे, जिनके आने की खबर थी। दूर से आते हुए उन्हें कमला देवी ने नहीं देखा, क्योंकि उसकी दृष्टि राजपूत सवारों की पीठों पर लगी हुई थी। ज्यों ही उसकी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



दृष्टि उधर से हटी और पीछे की ओर पहुंची, त्यों ही उसके मुंह से चीख निकल गई। उसने देखा कि उन दो घुड़सवारों में से, जिनके लिए यह तय्यारी की गई थी, एक की दृष्टि उसी की ओर है। वह उस व्याघ्र दृष्टि को भूल नहीं सकती थी। वह दृष्टि उसने एक सूखे नाले पर बने हुये छोटे से तम्बू में देखी थी। उस समय उस दृष्टि को देख कर वह कांप उठी थी। भागते हुये कमला देवी ने परमात्मा से प्रार्थना की थी कि वह उसे उस नराधम पठान के दर्शन फिर कभी न करावें, आज फिर उसी बाघ की आंखों को अपने ऊपर जमा हुआ देख कर कमला देवी अनायास ही चिल्ला उठी।

हम उस रोज की कहानी को बढ़ाना नहीं चाहते। पाठकों को केवल इतना बताना चाहते हैं कि गुलाम कादिर वहां किस तरह आया। हम देख आये हैं कि गुलाम कादिर ने बादशाह के किले में सूराख कर लिया था, मंजूर अली को अपना साथी बना कर किले में पहुँचने का रास्ता साफ कर लिया था। इधर किले में उसके विरोधियों की शक्ति बढ़ रही थी, यह देख कर उसने एक चाल चली। मंजूर अली को बीच में डाल कर भोले बादशाह को समझाया कि दूर दूर से मामला नहीं सुलझ सकेगा, मिल कर बात कर लेना अच्छा है। गुलाम कादिर और इस्माईलबेग ने कहला भेजा कि "यह गुलाम और कुछ नहीं चाहते, सिर्फ हुजूर के कदमों में हाजरी भरना चाहते हैं।" बादशाह ने मंजूर कर लिया पर साथ ही यह कहला भेजा कि दरबार में हाजिर होते समय बहुत से सिपाही या साथी लाने की जरूरत नहीं। इसी आज्ञा के अनुसार आज गुलाम कादिर और इस्माईलबेग कुछ थोड़े से साथियों को लेकर किले की ओर को जाता हुआ कमला देवी को दिखाई दिया।

दोनों नव्वाबों ने बादशाह के दरबार में हाजिर होकर सात मुहरों की खिलअत, एक तलवार और कुछ तोहफे इनाम में पाये। गुलाम कादिर को एक हीरों से जड़ी हुई ढाल भी मिली।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



बादशाह ने समझा था कि इस प्रकार इन दोनों भूतों को प्रसन्न कर लेंगे और छुट्टी मिल जायगी। परन्तु उसने पूरा धोखा खाया। अगले रोज गुलाम कादिर ने जबर्दस्ती से वजीर आजम की गद्दी पर दखल जमा लिया, ईस्माईलबेग स्वयं ही सारी बादशाही फौजों का सेनापति बन गया, और बेचारा सिंधिया बिल्कुल अधिकार हीन कर दिया गया।

\+ \+ \+ \+

अगले दस पन्द्रह रोज भारतवर्ष के इतिहास में भयंकर अनाचार के दिन हैं। पतित पशुवृत्ति गुलाम कादिर ने शक्ति पाकर, वे काम कर डाले, जिन्हें सोचना भी कठिन था। २९ जुलाई को गुलाम कादिर के हुक्म से नए बादशाह बेदार बख्त ने बूढ़े शाह आलम को भरी सभा में बेंत लगाईं। ३० तारीख को फिर उसी जगह शाह आलम की औरतों को पीटा गया। ३१ तारीख को गुलाम कादिर ने हुक्म दिया कि दिल्ली के सब बड़े बड़े धनी पुरुषों से रुपया उगाहा जाय। जिसने जरा चू चां की उसका सिर धड़ से अलग किया गया, दूकान और मकान लूट लिए गए।

शाह आलम, उसकी बेगमात और दिल्ली के धनियों से जो कुछ द्रव्य मिल सका, गुलाम कादिर ने इकट्ठा कर लिया। इस्माईलबेग को समझा बुझा कर उसने सेना संभालने के लिये भेज दिया। कुछ धन उसके पास भेजकर शेष अपने खजाने में जमा कर लिया।

अब बेदार बख्त की कमबख्ती भी पंख फटकार कर आन पहुंची। दीवाने खास में बादशाह बेदार बख्त तख्त पर बैठा हुआ था, गुलाम कादिर आया, आकर उसे थोड़ा सा ढकेल कर आधे तख्त पर खुद बैठ गया। गुलाम कादिर हुक्का पी रहा था। हुक्के के धुएं की धार सीधी बेदार बख्त के मुंह पर छूट रही थी, और साथ ही साथ कादिर के मुख से ज्वालामुखी के समान निकले हुए अपशब्दों के अंगारे भी दिल्ली के बादशाह का सत्कार कर रहे थे।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



६ अगस्त को सिंहासन की भी बारी आई, सिंहासन को तोड़ फोड़ कर उसमें से कीमती चीजें निकाल ली गई।

शायद कहीं किले के फर्श के नीचे खजाना न गड़ा हो इसलिए ७, ८ और ९ अगस्त के दिन तमाम फर्श खोद डाला गया।

# उन्नतीसवां परिच्छेद

## पतन

बूढ़ा शाह आलम गद्दी पर बैठा हुआ था। मुगल साम्राज्य की गद्दी एक असाधारण चीज थी। विलायतों में उसका यश फैला हुआ था। उस समय एशिया और योरपमें ऐसे समृद्धि शाली सम्राट कम होंगे, जो मुगलों के ऐश्वर्य को पहुँच सकें। बाबर, अकबर और शाहजहां ने अपने विक्रम और प्रतिभा से मुगल साम्राज्य के नाम में एक अपूर्व गौरव पैदा कर दिया था जो शाह आलम को मुगलों की गौरवयुक्त गद्दी पर बैठे देख कर ऐसा प्रतीत होता था, मानों कोई कौआ मन्दिर के कलश पर जा बैठा हो। शाह आलम कहने को हिन्दुस्तान का राजा था, परन्तु असल में वह किसी का भी राजा नहीं था। जवानी के भोग विलास के कारण इतनी क्षीणता आ गई थी कि उसे अपने शरीर का राजा भी नहीं कह सकते थे। वह निर्बल था,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



अस्थिर प्रकृति का था और सबसे बढ़ कर उसमें यह बुराई थी कि वह दिल का शेर नहीं था, मुगलों की सी अनहद वीरता उसमें नहीं पाई जाती थी।

शाह आलम सिंहासन पर बैठा था। चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं और जी घबराया हुआ था। मुसाहिब लोग भी उसी दशा में थे। शाह आलम अपने विश्वास पात्र मंजूर अली से बातें कर रहा था। वह बोला "देखो भाई मुझे तुम सच सच बताओ कि गुलाम कादिर क्या चाहता है? उसके व्यवहार ने मुझे चिन्ता में डाल दिया है।"

मंजूर अली ने उत्तर दिया "जहां पनाह! आपका शक करना निर्मूल है, गुलाम कादिर और इस्माईलबेग कह चुके हैं, कि वह आपके गुलाम हैं। वह किसी तरह भी आपको नुकसान पहुँचाना नहीं चाहते। वह सिर्फ इतना चाहते हैं कि मुगलों की बादशाहत को काफिरों के पंजे से छुड़ायें, माधोजी सिंधिया ने बादशाहत की बागडोर अपने हाथों में ले रखी है, उससे सभी मोमिनों को दु:ख हो रहा है। दोनों सरदार आपकी बात को मोड़ना नहीं चाहते, वह सिर्फ इतना चाहते हैं कि काफिरों को हटा कर आप वजीर और सिपाहसालार का रुतबा उन्हें दे दें।"

शाह आलम कुछ सोच में पड़ गया। वह गुलाम कादिर को बचपन से जानता था, उसकी झूठी और धोखेबाज प्रकृति उससे छिपी हुई नहीं थी। वह नहीं जानता था कि रुहिल्ला सरदार क्या चाहता है और कहां तक जाकर रुकेगा। इसी वक्त चोबदार ने आकर खबर दी कि वजीरे आजम और सिपाहसालार मय कुछ सिपाहियों के तशरीफ ला रहे हैं। जैसे बाघ की आवाज सुनकर हरनी कांप जाय—शाह आलम उसी प्रकार कांप उठा। इशारा पा कर चोबदार चला गया और लगभग सौ लम्बे चौड़े शस्त्रों से सन्नद्ध जवान पठानों के साथ गुलाम कादिर और इस्माईलबेग दरबार में प्रविष्ठ हुए।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



सारा दरबार खड़ा हो गया। शाह आलम अपने सबसे बड़े ओहदेदारों को कोर्निश का जवाब देने के लिए तयारी कर रहा था और सोच रहा था कि ऐसे ढंग से बातें करूंगा जिससे यह बदमाश काबू में आ जाय। परन्तु उसे विस्मय हुआ जब उसने देखा कि वहां तो न तस्लीम है न बंदगी। दोनों ओहदेदार बिना किसी रस्म या रिवाज को पूरा किये, तख्त के सामने आकर खड़े हो गये। आते ही बड़े रूखे स्वर से गुलाम कादिर ने कहा—

"हुजूर! हम इस वक्त सिर्फ इसलिये हाजिर हुये हैं कि आप से अपना मतलब साफ साफ बयान कर दें। हम लोग कई महीनों से बराबर हुजूर की खिदमत में हैं, और काफिरों से लड़ रहे हैं। इस वक्त हमने सब को हरा दिया है। सेंधिया मथुरा में है, मैं अभी थोड़ी सी फौज भेज दूंगा जो उसे समुद्रमें फेंक आयेगी। हम लोगों की फौज के लिये इन दिनों में जो खर्च हुआ है, वह शाही खजाने से मिलना चाहिये, क्योंकि हमने जो कुछ किया है, हुजूर के लिए किया है।"

शाह आलम दोनों का व्यवहार देख कर पहले ही घबरा गया था, इस व्याख्यान को सुन कर तो उसके होश उड़ गये। इतना भी जवाब न दे सका कि हमने तुम्हें फौज भर्ती करने को या सिंधिया से लड़ने को कब कहा था। वह इस्माईलबेग से पूछ सकता था कि तुमने लालसोठ की लड़ाई में राजद्रोह क्यों किया? परन्तु वह इतना डरा हुआ था कि एक शब्द भी मुंह से न कह सका और अपनी आंखों के तारे मंजूर नजर मजूर अली की ओर ऐसे देखने लगा जैसे डूबती हुई किश्ती का मांझी किनारे की ओर देखता है। मंजूर अली इशारे को समझ गया और कुछ रुक कर, दो एक बार खांस कर, एक तिर्छी निगाह से अपने ऊपर गड़ी हुई गुलाम कादिर की आंखों की ओर देख कर बोला—

"जहांपनाह! गुलाम कुछ अर्ज नहीं कर सकता, हुजूर की जैसी मर्जी हो, वैसा ही होना चाहिए। मेरे अन्दर इतनी अक्ल कहां कि कोई राय दे

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



सकूं। वजीरे आजम साहिब का फरमाना भी कुछ बेजा नहीं है। वह इतने दिनों हुजूर के इकबाल को चार चांद लगाने के लिए ही लड़ते रहे हैं। लेकिन जैसे मैंने पहले अर्ज किया हुजूर की मर्जी या नव्वाब साहिब की बात को काटने की मेरी मजाल नहीं है। इसलिए जहांपनाह ! इस बारे में मुझसे न पूछिए तो अच्छा है।"

मांझी को किनारा दिखाई न दिया। जो निशान दिखाई दिया था, वह भी आंखों से ओझल हो गया। मंजूर अली ने अपनी राय का बोझ रुहिल्ला सरदार की ओर ही ढाल दिया। शाह आलम और भी अधिक आपत्ति में पड़ा। दरबार का मोदी हिन्दू था, उसका नाम रामरतन था, वह भी वहीं विद्यमान था। डूबते हुए शाह आलम ने तिनके का सहारा ढूंढ़ना चाहा। उसने मोदी की ओर करुणाभरी आंखों से देखा। मोदी के हाथ गुलाम कादिर ने पहले ही गर्म कर रखे थे। वह बोला—

"जहांपनाह ! मुझ कम अक्ल में इतनी समझ कहां कि इस मामले में दखल दे सकूं। वजीरे आजम साहिब का फरमाना बेजा हो सकता है, पर जब तक हुजूर की राय न हो तब तक कुछ नहीं हो सकता।"

इधर से भी धक्का मिला। 'जहांपनाह' की किश्ती पनाह ढूंढ़ने लगी। और कुछ न सूझा तो अपने ईमानदार खजाञ्ची शीतलदास को बुलाने का हुक्म दे दिया। शाह आलम को उस समय गुलाम कादिर और इस्माईल-बेग की आंखों में खून दिखाई दे रहा था। उस खून का ठीक जवाब तो यह होता कि शाह आलम साहस, धैर्य और शान से उन दोनों को दबा देता, परन्तु भोग विलास से जर्जरित शाह आलम के हृदय ने जवाब दे दिया। खजाञ्ची को बुलवाया गया। लाला शीतलदास ने आकर विधि-पूर्वक सलाम किया और आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगा। शाह आलम ने चाहा कि उसे सब कुछ सुना कर राय मांगें। परन्तु उसकी ऐसी कमजोर हालत हो रही थी कि होंठ कुछ फड़फड़ाये, पर आवाज न निकली। यह

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



दशा देख कर हुकूमत की बागडोर गुलाम कादिर ने अपने हाथ में ली। उसने आज्ञा के स्वर में शीतल दास को अपना अभिप्राय बतलाया और खजाने का मुंह खोल देने का हुक्म दिया। शीतल दास राजभक्त था और साहसी भी था। वह शुरू में ही मामले को ताड़ गया था। गुलाम कादिर की बात सुन कर उसने शाह आलम की ओर देखा कि शायद कुछ इशारा मिले, परन्तु वहां उसे करुणा और नपुंसकता के सिवां कुछ दिखाई न दिया। तब उसने अपने ही दिमाग और साहस का अवलम्ब लेकर जवाब दिया—

"अगरचे मुझसे जहांपनाह ने सवाल नहीं किया, तो भी मैं हुजूर को ही अपना मालिक तसलीम करता हूं और नव्वाब साहिब के सवाल का जवाब हुजूर को ही दूंगा। जहांपनाह! मैं नहीं जानता कि नव्वाब साहिब का दावा कहां तक ठीक है और इजाजत लिए बिना जो फौज भर्ती कर ली गई है उसके लिए हुजूर की जिम्मेवारी कहां तक हो सकती है। मैं तो सिर्फ इतना अर्ज कर सकता हूं कि खजाने में रुपया देने की ताकत नहीं है। अपना खर्च चलाना ही मुश्किल हो रहा है, दुनिया भर के दावे कैसे चुकाये जा सकते हैं। जहांपनाह! खजाना बिल्कुल खाली पड़ा है। उसमें अब फूटी कौड़ी देने की भी सामर्थ्य नहीं है।"

इस जवाब ने जहां बादशाह को कुछ ढाढस बंधाया वहां गुलामकादिर के क्रोध की सीमा न रही। उसकी आंखें लाल हो गईं, नथुने फड़कने लगे, हाथ तलवार की मुट्ठी पर पहुंच गया। क्रोध में भरे हुये गुलाम कादिर के रूप का अनुमान वही लोग लगा सकते हैं जिन्होंने कभी गुस्से में आये हुए पठान को बाजार में देखा हो। शाह आलम कुछ कहने को ही था कि गुलाम कादिर चिल्ला कर कहने लगा—

"बस चुप रह ओ नामर्द! मुंह से एक लफ्ज भी मत निकालना, मैं तेरी सब चालों को जानता हूँ। तू ऊपर से मीठी मीठी बातें बनाता है और

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



अन्दर मेरा पेट चाक कर देने के लिये छुरी तैयार कर रहा है। यह देख मेरे पास तेरी बेईमानी का काफी सबूत है।"

यह कह कर गुलाम कादिर ने अपनी जेब से एक चिट्ठी निकाली जो शाह आलम की ओर से सिंधिया को भेजी गई थी। शाह आम ने मरहठे सरदारें को बुलाया था कि वह पठान के चुँगल से उसे छुड़ावे। वह चिट्ठी गुलाम कादिर के हाथ लग गई। वह दिखा कर फिर क्रोधी पठान चिल्लाने लगा—

"ओ नमक हराम ! ओ गद्दी को नापाक करने वाले नामर्द ! ओ कुत्ते के पिल्ले ! तू इस लायक नहीं है कि इस तख्त पर बैठ सके, अरे कोई है, जो इस खब्बीस को तख्त पर से उतार सके।"

इस पर दो तीन हट्टे कट्टे पठान आगे बढ़े और सलाम किया। सारा इन्तिजाम पहले से कर लिया गया था। तैमूर के वंश का वेदार बख्त नाम का एक गरीब लड़का पकड़ कर लाया गया था। इस समय परदा उठा और दो सिपहियों के बीच में वेदार बख्त ने अन्दार प्रवेश किया। गुलाम कादिर नें उसे झुक कर सलाम किया, और सब की ओर देख कर कहा—

"अरें क्या देखतें हो, हिन्दुस्तान के बादशाह को सलमा क्यों नहीं करते?"

मास्टर की लाठी के डर से जैसे विद्यार्थी एक स्वर से बोलते हैं, वैसे ही सब दरबारियों और सिपाहियों ने झुक कर उस छोकरे को सलाम किया। गुलाम कादिर पत्थर की भांति जड़ी भूत शाह आलम से बोला—

"अरे, ओ पाजी ! तू तख्त पर से उतरता है या मैं आदमियों से कहूं कि वह तुझे पकड़ कर उतार दें।"

शाह आलम का सारा शरीर कांप रहा था। वह कभी मंजूर अली की तरफ देखता था तो कभी सीतल दास को ओर ताकता था। दोनों ओर से कोई सहायता न मिली। सीतल दास को अपनी जान के लाले पड़

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



गए थे और मंजूर अली दोनों किश्तियों में पांव रख रहा था। शाह आलम निःसहाय, निर्बल और निर्बुद्धि की भांति जहां का तहां बैठा रहा। यह देखकर क्रोधी रुहिल्ले का पारा चढ़ने लगा। क्रोध से कांपते हुए हाथ से उसने म्यान से तलवार निकाल ली और शाह आलम की ओर झपटा। सभा में सन्नाटा था। दरबारी थर थर कांप रहे थे और जिस सिंहासन पर बाबर, अकबर और औरंगजेब बैठ चुके थे, उसके गौरव का अन्त्येष्ठी संस्कार देख रहे थे। किसी का साहस न होता था कि भड़के हुए बाघ को रोकने का यत्न कर सके। इस समय मंजूर अली ने एक ऐसा कार्य किया, जिसके कारण उसके कुटिल जीवन में भी दो एक प्रशंसा के शब्द लिखे जा सकते हैं। उसने पिशाच के हाथ को रोकने का साहस किया। वह बादशाह और कादिर के बीच में आ पड़ा। एक हाथ से रुहिल्ले को रोक कर दूसरे हाथ से बादशाह को गद्दी से उतर जाने का इशारा किया। कहा जा सकता है कि शायद यह भी कादिर और मंजूर अली की पहले से बदी बदाई मन्त्रणा हो कि एक गुस्सा करे और दूसरा भलामानस बनकर शाह आलम को गद्दी से उतार दे। यदि यह मन्त्रणा थी तो भी मंजूर अली का यह कार्य भी द्रोह में ही शामिल था। इसमें सन्देह नहीं कि यदि उस दरबार में एक आदमी भी साहस करके पठान सरदार के सामने अड़ जाता तो उसे इतना दुःसाहस करने की हिम्मत न होती।

कायर, नपुंसक शाह आलम की आंखों के आगे अन्धेरा छा रहा था। दरबार के खम्भे चारों ओर घूमते प्रतीत होते थे और जमीन और आसमान में जहां दृष्टि उठाता था कादिर की तलवार चमकती दिखाई देती थी। मंजूर अली ने जब मूर्ति का एक हाथ पकड़ कर तख्त से नीचे उतरने का इशारा किया। कठ पुतली की भांति मुगल सम्राट शाह आलम गद्दी पर से उतर कर नीचे आ खड़ा हुआ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# तीसवां परिच्छेद

## पगली

तेज सिंह किले के पहरे पर था। जिस क्षण से उसे गुलाम कादिर दिखाई दिया है, तब से तेजसिंह की रग रग अग्निमय हो रही है। उसके हृदय में रोष की प्रचण्ड ज्वाला जल रही है। यह वही गुलाम कादिर है जिसने दो बार तेजसिंह को घायल किया है। यह वही पापी पठान है जिसने सुजानपुर से कमला देवी का अपहरण किया है। तेजसिंह ज्यों २ सोचता है उसके हृदय में रोष की ज्वाला बढ़ती जाती है। वह यही सोचता है कि इस पापी का बध कैसे करूं ? कौन सा मौका पाकर इस नृशंस को भूतल पर से उठा दूं। किन्तु तेजसिंह के लिये किले के अन्दर जाना असंभव था। गुलाम कादिर ने अन्दर का पहरा ऐसा जबरदस्त रखा था कि वायु भी प्रवेश करते भय खाती थी। किले से बाहर रोती हुई बेगमों की चीखें सुनाई देती थीं, उनसे भयंकर रहस्य की छाया दिल्ली में भी उड़ रही थी किन्तु किले में आना जाना बिल्कुल बंद था। तेज सिंह अन्दर न जा सका, और गुलाम कादिर किले के अन्दर लूट के काम में ऐसा मस्त हुआ कि तेजसिंह की बात ही भूल गया।

उधर कमला देवी की दशा विचित्र हो गई। उसने तेजसिंह को भी देख लिया और गुलाम कादिर को भी। उसे निश्चय करते देर न लगी कि जितना शीघ्र हो सके तेजसिंह से मिलना चाहिये, उसने यही निश्चय किया। किन्तु मिले कैसे ? तेजसिंह किले के दरवाजे पर पहरेदार था। दरवाजे तक पहुंचना सहल नहीं था। किले की रक्षा के लिए चारों ओर गुलाम कादिर के रुहिल्ले पठान तैनात थे। साधु कमलानन्द ने कई बार

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



द्वार तक जाने का यत्न किया, किन्तु पठान सिपाहियों ने जाने न दिया। इसी यत्न में कई दिन बीत गए। कमला देवी किले के इधर उधर घूमती रहती और इस टोह में रहती कि कभी तेजसिंह बाहर निकले तो काम बने। किन्तु तेजसिंह को दूसरी ही धुन सवार थी। वह रात दिन गुलाम कादिर की ढूंढ में ही समय बिताता था।

स्त्रियों का दिमाग कई अंशों में पुरुषों की अपेक्षा अधिक तीव्र चलता है। तेजसिंह को गुलाम कादिर तक पहुंचने का ढंग नहीं सूझा, पर कमला देवी को तेजसिंह तक पहूंचने का साधन सूझ गया।

९ अगस्त की सांझ का समय था। तेजसिंह पहरे पर था और मन ही मन सोच रहा था कि क्या यह पापी इसी प्रकार दनदनाता रहेगा। अंदर आने जाने की रुकावट और रात दिन की चीखें सूचित करती हैं कि किले में राक्षसीय व्यवहार चल रहा है। किन्तु उसके मिटाने का कोई साधन नहीं। कैसे अन्दर घुसूं—कैसे उस पापी को रक्त स्नान कराऊँ, और कैसे कमला देवी की देनदारी उतारूँ। इन्हीं विचारों में मग्न था और नंगी तलवार हाथ में लिए इधर उधर घूम रहा था। इतने में बाहर से कुछ हल्ला गुल्ला सा सुनाई दिया। तेजसिंह उधर देखने लगा। देखा तो खाई के पार सिपाहियों की बड़ी भीड़ हो रही है। भीड़ में एक औरत फटे पुराने कपड़े पहने इधर उधर भाग रही है। दूर से वह औरत पगली दिखाई देती है। एक पठान सिपाही उसे पकड़ने को भागा, वह पगली चिल्लाती हुई दूसरी ओर को भागी। उधर दूसरा सिपाही झपटा तो पगली किले की तरफ लपकी। चिल्लाने का शब्द बराबर आ रहा था। उस चिल्लाने के शब्द में न जाने क्यों तेजसिंह को कुछ संगीत सा सुनाई दे रहा था। उसके कान शब्द की ओर खिंचे जा रहे थे, शब्द कुछ परिचित सा प्रतीत होता था। पगली दौड़ती हुई खाई के पुल के पास पहुंच गई। तेजसिंह भी देखने के लिए उसकी ओर चला। उसने देखा कि पगली की आंखें

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



उसकी ओर हैं। चेहरे पर अच्छी प्रकार आंखें पड़ते ही तेजसिंह पहचान गया, और पहचानते ही कांप गया। यह तो कमला देवी की सूरत है। दो पठान पगली की ओर झपटते हुए आ रहे थे, और ऐन पास ही थे कि उसे पकड़ लेते। तेजसिंह ने जोर से चिल्ला कर कहा—"ठहरो! ठहरो।"

तेजसिंह किले के राजपूत पहरेदारों का मुखिया था। आज्ञा तुल्य शब्द सुन कर पठान ठहर गये। पगली दम तोड़ कर तेजसिंह की ओर भागी। तेजसिंह भी आगे को बढ़ आया था। उसे आश्चर्य हो रहा था, कि मामला क्या है? क्या कमला देवी सचमुच ही पागल हो गई है या यह भेष बनावटी है। कमला देवी का पहिरावा उस समय विचित्र था ऊपर चिथड़े लटक रहे थे, भेष बेढंगा था, सिर पर मोर पंख लटक रहे थे, हाथ में एक टूटे हुए बांस का टुकड़ा था, मुंह पर विभूति रमी हुई थी। किन्तु चिथड़े भी ऐसे ढंग से बंधे हुए थे, कि सारा शरीर अच्छी प्रकार ढका हुआ था। हाथ पांव और मुंह को छोड़ कर सारा देह सुरक्षित था। तेजसिंह दरवाजे से कुछ आगे बढ़ गया, पठान सिपाही खाई के पार ही ठहर गये, कमला देवी भाग कर ऐन पास आ पहुँची। उस समय तेजसिंह और कमला देवी दोनों पास पास थे और सब लोग कुछ दूरी पर थे। औरों को धोखा देने के लिए तेजसिंह ने जोर से डपट कर कमलादेवी से कहा—"अरी पगली! कहां भागी आती है" और बिल्कुल पास ही जाकर कन्धे पर हाथ रख कर कान में कहा "कमला देवी तुम कहां?" कमला देवी ने कान में कहा—"मैं अपने प्राणनाथ के पास।" दरवाजे पर और भी दो राजपूत तमाशा देखने आ रहे थे। तेजसिंह ने देखा कि अन्यों के आ जाने पर मामला बिगड़ जायगा। धीरे से कमला देवी के कानमें कहा "तुम पगली ही बनी रहो, मैं ठीक कर लूँगा।"

कमला देवी जोर से चिल्ला कर कहने लगी "मुझे छोड़! छोड़! कौन है, शिव की पार्वती को छूता है।" यह कह कर उसने तेजसिंह को धक्का

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



दिया। तेजसिंह कुछ दूर जा खड़ा हुआ। इतने में और कई राजपूत भी पहरा छोड़ छोड़ कर आ पहुँचे। पठानों ने समझा कि शिकार राजपूतों के हाथ लग गया, अब मिलना मुश्किल है। तब वे अपने पहरे पर चले गये।

एक राजपूत ने तेजसिंह से पूछा—"यह पगली कौन है? यहां कैसे आई?" पगली चिल्ला उठी—"पागल होगा तू और दिल्ली का कुत्ता। मैं तो हूं मुर्ली वाले की दुर्गा और दिल्ली की द्रोपदी। यहां मेरा तोता उड़ कर आ गया है, उसे लेने आई हूं।" सब राजपूत हंस पड़े, तेजसिंह भी हंस पड़ा। वह समझ गया कि यह मुझे इसी समय साथ ले जाना चांहती हैं। दूसरा राजपूत बोला—"अरे! यह दुर्गा और द्रोपदी की नानी यहां कैसे आ फंसी।" पगली फिर बोली "मैं और किसी की नहीं तेरी ही नानी हूं। दस दिन से तोता उड़ गया है, तू ऐसा पोता बना कि ला के न दिया। निखट्टू कहीं का। अच्छा बेटा हम जाते हैं।" कमला देवी तेजसिंह को आंख का इशारा करके बाहर को चली। दूसरा राजपूत हंसता हंसता आगे बढ़ आया, और "अरी नानी नाना कहां हैं, आज मेरे ही घर रात काटियो।" कह कर ज्योंही उसे पकड़ना चांहता था कि तेजसिंह ने हाथ पकड़ लिया, और कहा—"छिः छिः औरत से ऐसा मजाक नहीं किया करते हैं। वह तो पगली है। तुम यहां ठहरो मैं चार रोज से घर नहीं गया, आज जाता हूं। इसे भी बाजार में छोड़ता जाऊँगा। पहरे पर सचेत रहना।"

दोनों राजपूतों ने जरा मुस्करा कर आपस में आंखें मिलाई। एक ने तेजसिंह से कहा—"भाई तेजसिंह! ऐसा ठीक नहीं। यह सब का माल है। तुम अकेले क्यों उड़ा ले जाओगे? हम भी तुम्हारे साथ चलेंगे।"

तेजसिंह को क्रोध तो इतना आया कि यदि दूसरी अवस्था होती तो इस वाक्य का उचित दण्ड देता, पर बने हुए नाटक को तोड़ना उचित न समझ कर शांत हो रहा, और डपट कर कहा—"बहुत बको मत। जाओ अपना काम संभालो, मैं घर से कोई दो घंटों में आऊंगा।" राजपूतों ने

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



समझा कि तेजसिंह को क्रोध आ गया। अधिकार में जो ऊंचा हो, सिपाही उससे बहुत भय खाते हैं। राजपूत बेचारे दुम दबा कर चल दिये। तेजसिंह कमला देवी को लेकर अपने घर की ओर रवाना हुआ।

# इक्कतीसवां परिच्छेद

## प्रतिशोध की तैयारी

कवि शूद्रक ने कहा है "सुखादि दुःखान्यनुभूय शोभते" दुखों को सहन करके सुख अधिक सुखदायक होता है। चिरायता पीने के पीछे मिसरी का मिठास कई गुना हो जाता है। कमला देवी ने भी बड़ी तपस्या के पीछे अपने हृदय धन को पाया है। आज उसके सुख का पारावार नहीं।

तेजसिंह का पिता चिरकाल से दिल्ली में रहता था। दिल्ली में उसका घर अच्छा खुला और हवादार था। आज कल राज काज में गड़बड़ हो रही है, सेना भी निरंतर आशंका की दशा में रहती हैं, इस कारण ध्यानसिंह प्रायः घरके बाहर रहते हैं। जब तेजसिंह पगली को लेकर घर पहुँचा, तब अन्धेरा भुवन पर विजय पा चुका था। घर में चिराग जल रहा था। तेजसिंह की माता अकेली बिना कुछ खाये पीये ही चारपाई पर लेट गई थी। घर में किसी पुरुष के न होने से उसने रोटी की झंझट करना आवश्यक नहीं समझा था।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



एक ओर सोने का कमरा था, जिसमें तेजसिंह की माता थी। उसके साथ लगती हुई ध्यानसिंह की बैठक थी, जिसका दरवाजा जुदा था। तेजसिंह ने कमला को कुछ दूर खड़ा करके घर का दरवाजा खटखटाया। एक नौकरानी ने आकर दरवाजा खोला। तेजसिंह को देखकर उसने कहा "कुंवर जी! मां जी सो रही हैं, जरा धीरे धीरे जाना, आवाज न हो।" तेजसिंह का अभीष्ट सिद्ध हुआ। नौकरानी के चले जाने पर उसने बैठक में दिया जलाया, फिर कमला देवी को अन्दर ले गया और दरवाजा बन्द कर लिया।

दोनों ने एक दूसरे की कहानी सुनी। दोनों ने एक दूसरे के दुख से आंसू बहाये, एक दूसरे के आनन्द पर प्रसन्नता प्रकट की। तेजसिंह ने जब मंदिर को जाने और निराश होने की कथा कही, तो कमला देवी के गालों पर से पानी की झड़ी लग गई। तेजसिंह के पीछे कमला देवी ने अपनी कथा प्रारंभ की। जब डाका पड़ने की कहानी सुनी तो तेजसिंह की मुट्ठी बँध गई, लेकिन जब उसे पता लगा कि लूटने वाला वही गुलाम कादिर था, तो आंखों से आग बरसने लगी। जब कमला देवी तम्बू की कहानी कहने लगी तो उसका दिल धड़कने लगा, स्मरण मात्र से शरीर कांपने लगा। कुछ देर तो कुछ न कह सकी, पर तेजसिंह के अनुरोध को न टाला जा सका। तेजसिंह के कन्धे पर सिर रख कर रुक रुक कर विष खाने की तैयारी करने, गुलाम कादिर के आने पर उस पर देगची मारने, और भागने की कहानी कहते कहते कमला देवी का पहले गला भर आया, फिर शरीर कांपने लगा और अन्त में होठों पर मुस्क्यान सी आ गई। इस बीच में वह नहीं देख सकी कि तेजसिंह क्रोध के मारे बिल्कुल पागल सा हो रहा है। यहां तक कहानी समाप्त करके कमला देवी ने तेजसिंह के मुंह की ओर देखा तो एक बार डर कर दूर हट गई। तेजसिंह की आंखें टेसू के फूल की भांति लाल हो गई थीं। होंठ कांप रहे थे, नाक की फटें

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



फूल रही थीं, और आकृति भयंकर हो रही थी। कमला देवी ने पहले कभी तेजसिंह की ऐसी डरावनी आकृति नहीं देखी थी।

तेजसिंह खड़ा हो गया। उसका हाथ तलवार की मुट्ठी पर था, और दिल गुलाम क़ादिर के खून पर था। खड़े होकर उसने कहा—

"अच्छा प्यारी! एक रात के लिये और छुट्टी दो। अब सहन नहीं होता। जिस पापी ने तुझ पर हाथ बढ़ाया, वह जिन्दा बच जाय तो मुझे धिक्कार है, और मेरे राजपूत धर्म को धिक्कार है। अब तो उस पापी के लहू से रंगे हुये कपड़े पहिन कर ही तुम्हारा पाणिग्रहण करूंगा, अन्यथा नहीं। तुम यहीं रहो। मैंने अपने पिता और माता से तुम्हारी सारी कथा कही हुई है। वे तुम्हें अच्छी प्रकार जानते हैं। मेरी माता अपनी पुत्री की तरह तुम्हारे साथ व्यवहार करेगी। परमात्मा ने चाहा तो कल ही दिन भर में उसका काम तमाम कर दूंगा।"

बेचारी कमला देवी पर मानों वज्र आ पड़ा। इतने परिश्रम के पीछे पाकर भी हृदय रत्न को हृदय से न लगा सकी। वह बेचारी तड़िद्विताड़ित लता की भांति तेजसिंह के पांव पर गिर पड़ी। तेजसिंह ने उसे उठा कर छाती से लगाया, सांत्वना दी और बहुत समझाने का यत्न किया, किन्तु कमला देवी ने रोने का तांता बांध दिया। उसकी हिचकी बंध गई, और तेजसिंह को परवश हो उस रात जाने का विचार छोड़ देना पड़ा।

दूसरे दिन प्रातः होते ही उसने माता से कमला देवी के आने की बात कह सुनाई। माता उसके मुंहसे उसकी कथा पहले ही जान चुकी थी। उस समय सारी कथा सुनकर कहा—"मेरा बेटा एक पगली के पीछे पागल हुआ है। ईश्वर खैर करे।" इतना कह कर चुप हो रही। उस समय राजपूतों में प्रेम के प्रसाद से प्रदत्त युवतियों को प्रायः पागलपन का शिकार बनना पड़ता था, यह साधारण बात थी। तेजसिंह के पिता और माता ने भी यही समझा कि चलो तेजसिंह का यौवन में प्रवेश तो हुआ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



आज तेजसिंह के मुंह से कमला देवी के आने की बात सुन कर उसकी माता ने पूछा "वह पगली कहां है ?" माता का पगली शब्द से-प्रेम पगली अभिप्रेत था, पर उस समय कमला देवी सचमुच ही पगली बनी हुई थी। माता उसे देख कर पहले तो नाक भौं सिकोड़ने लगी, पर तेजसिंह से पागलों का भेष पहिनने का माजरा सुन कर शांत हो गई। कमला देवी ने नहा धोकर घर में रखे हुए नये कपड़े पहिने। कपड़े पहन कर जब वह तेजसिंह की माता के सामने आई तो बूढ़ी का मुखड़ा खिल गया। यदि वह बुढ़िया पुरुष होती और तेजसिंह की माता न होती तो उस समय प्रेम में तेजसिंह का एक दुश्मन खड़ा हो जाता। माता को प्रसन्न देख कर तेजसिंह भी संतुष्ट हो गया।

मन ही मन तेजसिंह ने सारी इति कर्तव्यता निश्चित कर ली थी। एक रात भर के लिये उसने बदला लेने का विचार छोड़ दिया था। इसमें कमला देवी के आग्रह के सिवा और भी कोई निमित्त था। उसके हृदय में गुलाम कादिर के प्रति जो क्रोध उत्पन्न हुआ था वह दब नहीं सकता था। वह ज्वालामुखी के जोश की भांति अदम्य था। जिसने कमला देवी को घर से चुराया, तेजसिंह को दो बार घायल किया, कमला देवी को फिर से बन्दी बनाया और अन्त में उस पर बलात्कार का यत्न किया, उसे क्षमा करना कैसे सम्भव था? तेजसिंह ने कमला देवी के अनुरोध से और अपनी स्कीम पकाने के विचार से एक दिन का अवकाश ले लिया था।

दोपहर के समय तेजसिंह और कमला देवी फिर सलाह करने बैठे। तेजसिंह ने पक्के तौर पर कमला देवी को बता दिया कि "मैंने यह दृढ़ प्रतिज्ञा कर ली है कि जब तक गुलाम कादिर को दण्ड न दे लूंगा तब तक तुम्हारे साथ पाणिग्रहण न करूंगा, उसने मेरा और तुम्हारा दोनों का अपमान किया है। वह अपमान कण्ठशोणित से ही धुल सकता है अन्यथा नहीं। राजपूत धर्म यही है।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



कमला देवी इसका कोई उत्तर न दे सकी। उसके अन्दर राजपूती जोश था। वह कह रहा था कि "गुलाम कादिर को दण्ड देना धर्म है। उसे भूतल पर से उठाये बिना विवाह करना अधर्म होगा।"

दोनों देर तक सलाह करते रहे। कमला देवी ने यह तो मान लिया कि पहले गुलाम कादिर को दंड देना चाहिये, परन्तु यह भी आग्रह किया कि "गुलाम कादिर ने मेरा अपमान किया, मुझ पर बलात्कार करना चाहा, उसे दंड देने में मैं क्यों भाग न लूं।" तेजसिंह ने बहुत समझाया। उसने कहा—"मैं तुम्हारा प्रतिनिधि होकर जाता हूं। मैं दंड दूंगा तो वह तुम्हारी ही ओर से दूंगा। तुम आग्रह न करो। वह लाल किला यम का घर है, पाप और अत्याचार का गढ़ है। वहां तुम कैसे जाओगी? तुम पहले ही बहुत कष्ट भोग चुकी हो। जो फूल सिर की शोभा बढ़ाने योग्य था, वह मेरे कारण बहुत दिनों तक सड़क की मिट्टी में लोट चुका है। अब तुम विश्राम करो, मैं अकेला ही उस पापी का काम तमाम कर आता हूं।"

अन्त में बनावटी कारणों को छोड़ कमला देवी ने असली कारण कहा—"और कुछ नहीं नाथ! जिस रत्न के पाने के लिये इतनी तपस्या की है उसे अब एक क्षणके लिए भी छोड़ नहीं सकती। अब तो स्वर्ग में, या नरक में, पृथ्वी पर या पाताल में, उसके साथ ही रहूंगी। पहले स्त्री भेष छोड़ साधु बनी थी, अब राजपूत सिपाही बनूंगी, किन्तु आपका साथ नहीं छोड़ूंगी। वहां आपत्ति है तो क्या, भय है तो क्या। क्या किसी स्त्री को अपने स्वामी के साथ रहते हुए भी आपत्ति और भय हुआ करते हैं? नाथ! मुझे इस सुख की सेज से वह कांटों का बिछौना बहुत प्यारा है, जहां मेरा प्राण नाथ साथ हो।"

तेजसिंह की आंखों में आंसू आ गये, कमला देवी के नैन पहले ही पानी बरसा रहे थे। और सब युक्तियों का उत्तर तेजसिंह के पास था, पर इन आंसूओं का कोई उत्तर नहीं हो सकता था। आखिर यही निश्चय

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



ठहरा कि कमला देवी भी राजपूत सिपाही का भेष धारण करके तेजसिंह के साथ ही आज सांझ को किले में चली चले और फिर रात भर में अन्दर घुसने और गुलाम कादिर को उचित दण्ड देने का ढंग बनाया जाय ।

राजा और मंत्री दोनों देर तक सलाह करते रहे । ज्यों ज्यों सोचते थे गुलाम कादिर को अकेले पा कर मारना असम्भव प्रतीत होता था । कमला देवी की स्त्री बुद्धि ने एक और ढंग बताया । जैसी सीतला देवी, वैसा खर बाहन, जैसा गुलाम कादिर वैसे मुगल बादशाह । पहली बार कमला देवी मुगल बादशाह के लिये चुराई गई थी, ऐसा उपाय क्यों न किया जाय जिससे सारा पठानी मण्डल ही भस्मसात् हो जाय । यह बात तेजसिंह को भी ठीक जंची । किले का बारूद घर अभी तक पुराने राजपूत पहरेदारों की ही रखवाली में था । उसके पहरेदारों में तेजसिंह के गहरे मित्र थे । तब बारूद को ऐसे समय आग लगा कर जब सारी रावण सभा भरी हुई हो, सब की अन्त्येष्ठी कर देना असम्भव नहीं है । यही सलाह ठीक ठहरी ।

तेजसिंह के पास कई वर्दियां थीं । एक वर्दी कमला देवी ने भी पहिन ली । स्त्री का रूप सर्वथा मिटाने के लिये तेजसिंह बाजार से नकली दाढ़ी मूंछ ले आया । उसे लगा कर कमला देवी, कमलासिंह सैनिक हो गई । भेष बदल जाने पर पहले तो दोनों ही खूब हँसे, फिर न जाने क्यों दोनों के आंसू निकल आये ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# बत्तीसवां परिच्छेद

## शाह आलम की आंखें

लाल किले में बुर्जे तिल्ला के पास १० अगस्त के दिन बड़ा शानदार दरबार लगा हुआ था। गद्दी पर बेदार बख्त नहीं, स्वयं अनेकों उपाधि विभूषित श्रीमान् गुलाम कादिर विद्यमान थे। उनके इधर उधर बहुत से जी हुजूर विराजमान थे। वे सब गुलाम कादिर की हंसी पर हँसते मुस्कराते और त्योरी चढ़ाने पर त्योरी चढ़ाते थे। उनका काम ही यही था। नहीं तो वे जानते थे कि जो कहीं कादिर की मुस्कराहट पर रो दिये या त्यौरी चढ़ाने पर मुस्करा दियें तो बस गले पर तलवार ही झनझनाते लगेगी।

गुलाम कादिर के सामने एक पेचदार हुक्का रखा हुआ था। वह मानों कोयले की गाड़ी थी। कोयले की गाड़ी में से कोयले गुलाम कादिर के मुख रूपी इंजिन में पड़ते थे और नासिका रन्ध्रों द्वरा धुएँ के बादल उड़ा रहे थे। वह बादल कभी मुख्य अध्यक्ष याकूब अली और कभी गृहाध्यक्ष मंजूर अली के मुख चन्द्र को ढक देते थें। उस प्रसाद को पाने के समय में दोनों महापुरुष संतोष सूचक हंसी द्वारा सूचित करते थे कि "धन्य हो महाराज! धन्य हो। आप के मुख का धुआं भी मानों फव्वारा है।"

थोड़ी देर में एक ओर से चार सजे हुये बालक आते दिखाई दिये, उनके साथ २ नंगी तलवार लिये दो पठान थे। वे बालक नाचने वालों के भेष में सजाए गए थे। उनके मुखों पर क्रोध भरा भय दिखाई देता था, वे नीची निगाह किए चले आ रहे थे। पैरों के घुंघरू और गले की माला मानों उनके लिये फांसी की रस्सियां प्रतीत होती थीं। महफिल के सामने

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



एक बड़ी चौड़ी शतरंजी बिछी हुई थी। वे बालक उसी पर लाये गये। उन्हें देख गुलाम कादिर ठहाका मारकर हँस पड़ा। मंजूर अली याकूब अली एंड कम्पनी को भी जोर से हँसना पड़ा। गुलाम कादिर उस हँसी से संतुष्ट हो उन बालकों को सम्बोधन करके बोला—

"ओ कुत्ते के पिल्लो! अपने बुजुर्ग के मालिक को सलाम करो।" लड़के कुछ देर खड़े रहे, दिल न चाहा कि सिर झुका कर सलाम करें। गुलाम कादिर के गुस्से का पारा बड़ी तेजी से ऊपर चढ़ने लगा। उसने कड़क कर कहा—"पाजी शाह आलम के पिल्लो! सुनते हो या अभी जल्लाद से तुम्हारे को एक बार ही झुकवा दूं?" दोनों पास खड़े पठान सिपाहियों ने तलवारें बढ़ाईं, लड़कों ने गर्दन झुका दीं। उन्होंने अत्याचारी की तलवार के सामने यह सूचित करने को गर्दनें झुकाईं कि इस जीने से मरना भला है, ले गर्दन ही काट ले, या सलाम करने को सिर झुकाया-यह निश्चय करना कठिन है। किन्तु गुलाम कादिर ने दूसरी ही बात समझी और उस समय शाह आलम के पोतों की जान बच गई।

अब उन्हें मजलिस के सामने नाचने का हुक्म हुआ। शाह आलम के पोते कैसे नाचें? किन्तु गर्दन पर तलवार थी। बेचारे लगे नाचने। इधर गुलाम कादिर ने घृणाव्यंजक कहकहा लगाया और जी हुजूरों ने हंस हंस कर आकाश गुंजा दिया। उसी समय सबके सामने प्यालों में शराब लाई गई, जिसे उन्होंने इतनी फुर्ती से चढ़ा लिया कि प्याले या मुंह तक को भी पता न लगा कि यह काम कब हो गया।

तब लड़कों को एक तरफ खड़ा कर दिया गया और शाह आलम के परिवार की युवतियों को लाने का हुक्म हुआ। शराब के एक प्याले का यह परिणाम हुआ। जब खबर मिली कि युवतियां आ रही हैं तो एक दो प्याले और लुढ़ाये गये। 'कथापि खलु पापरनामलभ श्रेय से मनः' क्योंकि पापों की कथा भी पाप उत्पन्न करती है, अतः हम इस समय का वर्णन न

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



करेंगे। पाठक स्वयं समझ लेंगे कि ऐसे शराब के मद से मतवाले और दर्पित् अनाचारी के सामने युवतियों की इज्जत नहीं बच सकती, और यही गुलाम कादिर का उद्देश्य था। थोड़ी देर पीछे स्त्रियों को भी दूसरी ओर खड़े होने का हुक्म दिया गया। वे भी नचनियों के भेष में ही लाई गई थीं।

चिन्ता हारिणी, विनाश कारिणी सुरादेवी का एक और प्याला गले के नीचे उतारा गया, और रहा सहा विवेक उन मजलिसियों के दिमाग में से काफूर हो गया। गुलाम कादिर का हुक्म हुआ कि 'शैतान बुड्ढे को जल्दी हाजिर करो।' यह शैतान बुड्ढा अकबर, औरंगजेब का उत्तराधिकारी शाह आलम था। अत्यन्त सम्भोग, आलस्य और प्रमाद आदमी को कहां तक गिरा सकते हैं—शाह आलम इसका जीवन्त दृष्टान्त था।

चार सिपाही बूढ़े शाह आलम को घेरे हुए ले आये। विलासिता के कारण पहले ही वह क्षीणकाय था, फिर इन दिनों की घटनाओं ने तो उसे महीने भर में १० बरस बूढ़ा कर दिया था, दैव के वज्र से मारा हुआ शाह आलम आकर मजलिस में खड़ा हो गया। बादशाह के मुंह लगे मंजूरअली, याकूबअली पहले तो चुप रहे, किन्तु जब देखा कि कादिर की आंख उनकी ओर मुड़ रही है तो उन्हें भी दुगने जोर से हंसना पड़ा। बेचारा शाह आलम नीचे गर्दन किये खड़ा रहा।

गुलाम कादिर बोला—"हिन्दुस्तान के शहन्शाह! यह बन्दा गुलाम कादिर सलाम करता है" शाह आलम उसी तरह खड़ा रहा। चुप देख कर गुलाम कादिर बोला—

"ओ हो! जनाब बोलते ही नहीं, क्या तबीयत कुछ नासाद है? अरे मुराद बेग! लगाओ शैतान को दो चार करारे कोड़े।"

आज्ञा का तत्क्षण पालन हुआ। बूढ़े बेचारे की आंखों में आंसू आ गये। इधर याकूब अली और मंजूर अली ने पीछे को मुंह छिपा कर आंख

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



का एक आंसू पोंछ लिया, और फिर सामने मुंह करके कादिर की हंसी में हंसी मिलाने लगे। वे आखिर तो शाह आलम की नौकरी कर चुके थे। व्यथाओं से जर्जरित और अपमानों से चलनी हुए शाह आलम से आखिर न रहा गया। उसने बड़े ही करूणाजनक किंतु शांत स्वर से कहा—

"ऐ खुदा के बन्दे! आखिर यह तो बता कि तू मुझे जीते जी यह दोजख क्यों दिखा रहा है? तेरी मंशा क्या है? उस खुदा से डर और बता कि तेरी क्या मर्जी है?"

कादिर ने कर्कश स्वर से कहा—

"ओ कुत्ते! क्या तुझे अभी यह भी बताना होगा? तू ने अभी तक मुझे अपने खजाने की जगह नहीं बताई और न उसकी चाबी ही दी है। अगर तू ऐसी ही जिद करता रहेगा तो तेरे साथ अभी और बहुत कुछ होगा।"

शाह आलम के खजाने का हाल यह था कि उसे कुछ दिन पहले सिपाहियों को तनख्वाह देने के लिये अपने सोने के बर्तन पिघलवाने पड़े थे। वहां खजाना कहां धरा था। शाह आलम ने फिर उसी करुणाजनक किन्तु शांत स्वर से कहा—

"मैं सौ बार कह चुका हूं कि मेरे पास कोई खजाना होता तो मैं तुझे बता देता। अगर फिर भी तू समझे कि मैंने खजाना छुपा रखा है तो वह मेरे जिस्म में कहीं होगा। ओ खुदा के बन्दे! मेरे जिस्म को काट ले और उसमें से खजाना निकाल ले।"

मजलिस में कई आदमियों की आंखें आंसुओं से तर हो रही थीं। किन्तु कोई न कोई बहाना करके वे सब अपने आंसुओं को छुपा रहे थे। गुलाम कादिर का कोप तूफानी समुद्र की भांति एक दम चढ़ गया—

"शैतान! क्या तू समझता है कि मैं तेरी इन झूठी बातों में आ जाऊंगा? मुझे तू अच्छी तरह जानता है। मुझे अभी वह दिन नहीं भूली जिस दिन

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



तू ने मुझे बहुत साल पहले बेइज्जत करके किले से निकलवाया था। मैं उस बेइज्जती का हव्वा हव्वा वसूल करूंगा। अगर सचमुच तेरे पास कोई खजाना नहीं है तो दुनियां में तेरे जीने की कोई जरूरत नहीं है। मैं तुझे अभी अंधा करवाता हूँ।"

शाह आलम के सामने कुत्ते की मौत का भयंकर दृश्य आ खड़ा हुआ।

पापी कादिर से कुछ भी असम्भव नहीं था। शाह आलम ने कहा—

"हाय! ऐसा मत करो। जो आंखें कलामे अल्लाह को रोजाना पढ़ती पढ़ती मध्यम पड़ गई हैं—इन्हें मेरे से मत छीनो।"

गुलाम कादिर ठहाका मार कर हंस पड़ा। मजलिसियों को भी हंसना पड़ा, किन्तु उनके हंसते हुये होठों पर आंसू टपक रहे थे। गुलाम कादिर ने हुक्म दिया, कि "अच्छा इन छोकरों और छोकरियों को कोड़े लगाये जायँ।"

वहीं खड़े हुये शाह आलम के दोनों लड़कों और उसके परिवार की स्त्रियों को फिर बीच में लाया गया, और निर्दयी पठानों ने बे तरह कोड़े बरसाने शुरू किये। अब शाह आलम से सहन न हो सका। वह रोते रोते हाथ जोड़ कर कहने लगा—.

"ओ जल्लाद! यह सब कुछ दिखाने से अच्छा है कि तू मेरी आंखें ही निकाल ले।" आंख की झपकन में गुलाम कादिर तख्त से नीचे उतर आया। सीधे आकर शाह आलम की छाती में उसने ऐसे जोर से धक्का दिया कि वह भूमि पर चित्त गिर पड़ा। गुलाम कादिर ने उसकी छाती पर सवार हो कमर से खंजर निकाल एक आंख में घोंप दिया। लहू और पानी के साथ वह आंख बाहिर बह निकली। सारी मजलिस में सन्नाटा छा गया, फिर सब के मुंह से कादिर के लिये धिक्कार का शब्द निकला।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



एक आंख निकाल कर गुलाम कादिर खड़ा हो गया, और याकूब अली को हुक्म दिया गया कि वह दूसरी आंख निकाले। याकूब अली ने ऐसा पैशाचिक काम करने से इन्कार कर दिया। गुलाम कादिर के सामने इन्कार! क्षण भर में उस नर पिचाश की तलवार आकाश में चमकी और याकूब अली का सिर धड़ से जुदा हो पके हुए आम की तरह शतरंजी पर लोटने लगा।

गुलाम कादिर ने अपने पठान सिपाहियों को इशारा किया। जिस काम से याकूब ने इन्कार किया था, उसे पठानों ने कर डाला। अन्धे शाह आलम को कैदखाने में ले जाने का हुक्म देकर वह दरबार बरखास्त किया गया।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# तेतीसवां परिच्छेद

## किले में आग

लाल किले के बुर्जे तिल्ला में पाप नाटक के दो भयंकर नट बैठे बात चीत कर रहे थे। शाह आलम को अन्धे हुए लगभग दो महीने बीत गये थे। इस बीच में आकाश ने रंगत बदल ली है। यमुना में बहुत सा पानी बह गया है। पैशाचिक पाप का समाचार लाल किले की गर्जों से भी दुर्भेद्य दीवारों ने मूक स्वर से सारे संसार को सुना दिया है। चारों ओर से दांत पर दांत दबाये बदला लेने वाली घटायें चढ़ती आ रही हैं। गुलाम कादिर के माथे पर राहु और केतु की दो रेखायें दिखाई दे रही हैं। इन दो महीनों ने उसे बरसों बूढ़ा कर दिया है। जब तक पाप का जोश था, जवानी के हाव भाव थे, पर जहां राक्षसी कर्म हो चुका और कल्पना अन्तर्वर्ती रत्नों का खजाना न मिला तो उलटी लहर ने रोब जमा लिया। रात को छाती धड़-कने लगी, कुस्वप्न आने लगे। दिन को दो बार दीवार में दुश्मनों के चित्र दीखने लगे और वृक्षों की ओट में हुई हत्यायें भी नजर आने लगीं। उन हत्यारों की शकल कभी शाह आलम जैसी, कभी याकूबअली जैसी, कभी तेजसिंह जैसी और कभी कमला देवी जैसी होती थी।

गुलाम कादिर के चेहरे पर हवाइयां उड़ रही हैं, सामने मंजूरअली बैठा है। वह भी घबराया हुआ है। वह कादिर से कह रहा है—

"खां साहिब! यह सच है और बिलकुल सच है, इसमें कुछ भी झूठ नहीं है। इस्माईल बेग और राना खां का मेल हो गया। राना खां सिंधिया का सेनापति था। अभी कुछ ही दिन हुए वह कई हजार मरहठा सेना लिये दिल्ली में आया है।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



गुलाम कादिर ने कहा—

"काफिर ! काफिर !! काफिर !!! अगर किले में होता तो याकूब का साथी बनकर जहन्नुम को जाता, काफिर से मिल गया ! लेकिन इसका सबब क्या हो गया ?"

"सबब ? खां साहिब ! सबब क्या बताऊं। उसे शायद काफी रुपया नहीं पहुंचा। यह भी सुनते हैं कि बादशाह को अन्धा करना, उसने पसंद नहीं किया।"

"काफी रुपया नहीं पहुंचा। शैतान का बच्चा ! और वह क्या चाहता है। इन तीन महीनों में दो बार कई कई हजार रुपये भेज चुका हूं। और यह लौण्डा क्या चाहता है ? मंजूर अली ! अभी किले की फौज को हुक्म दो कि इस्माईल और राना खां पर चढ़ जाय।"

"किले में फौज कहां है ? गिने चुने पठान हैं, बाकी सब राजपूत हैं, वे हमारे दोस्त नहीं हैं। दुश्मन को किले की असली हालत का पता नहीं है, नहीं तो कभी का धावा बोल दिया होता।"

"अच्छा फौज नहीं तो तोपखाना तो है। अभी सारे तोपखाने को दीवारों पर चढ़ा कर दुश्मन की फौज को भून दो। जाओ, जल्दी जाओ, जाते क्यों नहीं ?"

"खां साहिब ! मैं खबर देना भूल गया। तोप खाना क्या करेगा ? बारूद हाथ से निकल गया। मैंने दो महीने से बारूद घर पर पठानों का कड़ा पहरा बिठा दिया है। अब तक हमारे पास काफी फौज थी, कोई चूँ न कर सका। कल रात को दुश्मन के डर से बहुत से पठान भाग गये तो राजपूतों को मौका मिला। आज सबेरे किले के पहरेदार तेजसिंह ने कई राजपूतों के साथ आकर पठान सन्तरियों को मार डाला और बारूद घर पर कब्जा कर लिया।" अब तीन महीने पीछे कादिर को याद आया कि किले

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



के द्वार पर उसका एक राजपूत दुश्मन भी है। एक क्षण के लिये उसका शरीर कांप उठा, फिर वह बोला—

"मंजूर अली तुम्हारे पास दिल और तलवार है।"

"कहिये ?"

"जो भी पठान किले में बचे हैं, उन्हे इकट्ठा करो, मैं अभी बारूद घर पर धावा करूंगा, और उन राजपूत बकरों का खून पिऊँगा।"

"खां साहब ! जल्दी का काम नहीं है, वहां कोई तीन चार सौ राजपूत इकट्ठे हो गए हैं। डर यह है कि कहीं वे बारूद घर को आग न लगा दें, अब उन पर ऐसे टूट पड़ना अच्छा नहीं। अब तो किले को छोड़ने की तदबीर सोचना चाहिये।"

कादिर के सामने मृत्यु का भयंकर दूत आ खड़ा हुआ। पाप का फल उसके जी में चुभ रहा था, पर किले की दीवारें-उसे भरोसा दिये थीं। उसका दिल कहता था कि जब तक किले में हो, खैर है। बाहर कोई उपाय नहीं। एक बार निराशा की बर्छी हृदय में चुभ गई। किन्तु दूसरे ही क्षण में रुहिल्ला पिशाच चमक उठा। तलवार म्यान से निकाल ली और मंजूर अली की ओर खून भरी आंखें करके कहा—

"मैं समझ गया, सब समझ गया, ये सब तेरे ही ढंग हैं। राना खां को दिल्ली में आए इतने दिन हुए, तू ने मुझे पहले क्यों नहीं बताया ? पठान भाग गये तो मुझे रात को ही खबर क्यों नहीं दी ? इस्माईल नाराज था तो उसे खुश क्यों नहीं किया ? बारूद घर घिर गया था तो तू राजपूतों से क्यों नहीं लड़ा ? यह सारी आफत तू ही लाया है। तू भी मेरा छुपा दुश्मन है। ठहर जा। तुझे अभी दफनाये देता हूं।" राक्षस से कुछ भी असंभव नहीं था। भयसे कांपता हुआ मंजूर अली दूर जा खड़ा हुआ। गुलाम कादिर उस पर झपट चला, आगे एक चौकी पड़ी थी, जोश में उसे देख

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



न सका। जोर की ठोकर खाकर धम्म से गिर पड़ा। खुदा का शुक्रिया कर मंजूर अली वहां से चम्पत हो गया।

जब तक गुलाम कादिर संभला, मंजूर अली काफूर हो चुका था। अब उस नर पिशाच का दिमाग ठिकाने आया। वह बहुत सा खजाना पहले ही शहादरे में ठहरी हुई अपनी सेना में भेज चुका था। अपने बना ये हुए बादशाह बेदार बख्त को भी कैद कर चुका था। मात्र दीवारों में से खोदे हुए कुछ कीमती पत्थर, औरतों के पिघलाये हुए गहनों का कुछ सोना, और कीमती प्याले रह गये थे। गुलाम कादिर को उस समय चारों ओर अंधेरा ही अन्धेरा नजर आने लगा, अपना पाप भयंकर रूप धारण कर लाल जीभ दिखाने लगा, किले की ईंट ईंट से नरक का दृश्य दीखने लगा, पसीना बह निकला और उसका हृदय धक धक बोलने लगा। दरवाजे पर सिर्फ एक पठान दिखाई दिया। उसे हुक्म दिया कि 'हमारा हाथी तैयार करके जमना की तरफ लाओ।'

थोड़ी देर में हाथी आ गया, उतनी देर में गुलाम कादिर ने बचा बचाया माल गठरी में बांध छोड़ा। सांझ के अंधेरे में देखा गया कि एक हाथी यमुना पार जा रहा है। वह नर पिशाच गुलाम कादिर का हाथी था।

ऐन उसी समय बड़े धमाके का शब्द हुआ, मानों कोई ज्वालामुखी पहाड़ फटा हो। गुलाम कादिर ने मुड़कर देखा तो किले के ऊपर धुएं का मण्डल दिखाई दिया। उसने अपने हाथी की चाल और भी तेज कर दी। दिल्ली नगरी उस भयंकर विस्फोट का कारण जानने के लिये दरवाजों से बाहर निकल आई। सबने देखा कि किले पर काली धुएं की, घटायें छा रही हैं, हर एक ने सिर हिलाया, गम्भीर मूर्ति धारण की, और कहा "यह काम गुलाम कादिर का है।" उन्हें ज्ञात नहीं था कि यह काम किसी ऐसे आदमी का था जो उस बारूद की यज्ञाग्नि में कादिर की आहुति देना चाहता था।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



किले का मध्य भाग भक भक करके जल उठा, पर शिकार उड़ गया। गुलाम कादिर यमुना के पार पहुंच चुका था। निशाना तो लगाया, पर थोड़ी सी देर हो गई। तेजसिंह और कमला देवी ने अपना प्रण पालन किया। उन्हें ज्ञात नहीं था कि और सब कुछ तो हो गया, केवल उनका उद्देश्य सिद्ध नहीं हुआ। यह उद्देश्य सिद्ध भी नहीं होना चाहिए। इतने भारी पाप का प्रतिशोध केवल आग में जलने से नहीं हो सकता। उसके लिये बड़ी यातना और और बड़ी वेदना चाहिये। विधना ने गुलाम कादिर के माथे पर वही लिख छोड़ी थी। इससे तेजसिंह का तीर खाली गया, पर उसे यह पता न था।

# चौंतीसवां परिच्छेद

## भयङ्कर दण्ड

दो मास बीत गये, बीच में कई घटनायें हो गईं। हमें उनसे प्रयोजन नहीं। हम तो दिसम्बर मास की किसी तारीख को मथुरा की सैर करने जाते हैं, देखें वहां क्या हो रहा है?

बाजार में बड़ी भीड़ हो रही है। प्रतीत होता है कि सारी कृष्णपुरी एक ही स्थान पर टूट पड़ी है। आबाल, वृद्ध, जनता एकत्र हो रही है और जैसे अगाध समुद्र में निरन्तर नदियां अपना जल योग करती रहती हैं, इसी प्रकार गली और घर सभी इस मनुष्य समुद्र को सहायता दे रहे हैं। आज मथुरा में सावन के हिंडोले नहीं, कृष्णाष्टमी नहीं, और भी कोई उत्सव नहीं, फिर उन जैसी भीड़ क्यों? भीड़ में घुसना मुश्किल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



है, और भीड़ का कारण जानना और भी कठिन है। कोई कहता है—"अजी आज जंगल से एक बनमानुष पकड़ा आया है, बस उसी का तमाशा है।" दूसरा कह रहा है—"नहीं तो, अजी आज बहुत दिनों पीछे एक भारी डाकू पकड़ा गया है, उसी का तमाशा है।" तीसरा कह रहा है—"अजी वाह तुम तो निरे उल्लू हो, चोर डाकू तो रोज ही पकड़े जाते हैं, उनके साथ इतनी भीड़ तो कभी नहीं होती। यह तो कोई दैत्य है दैत्य। कृष्ण मुरारी की नगरी लूटने आया था, सो मरहठों ने बांध के धर लिया। यह उसी का तमाशा है।" लोग भागे आ रहे थे, चट पट निश्चय नहीं कर सकते थे कि उनके भागने का कारण क्या है। चलो हम भी उनके साथ हो लें। सुनने में दोष नहीं, देखने से तो रहस्य अवश्य ही खुल जायगा।

भीड़ भाड़ में धक्के मारते हुए हम भी उस स्थान पर जा पहुँचे। वहां एक अजब उपहास दिखाई देता है। एक गधी, भद्दी शक्ल—अगर गधियों में भी अच्छी और भद्दी का विवेक हो सके—इधर उधर कीचड़ सना हुआ, गधी पर एक आदमी बैठा हुआ है, उस अदमी के मुख पर कालिख पोती हुई है, कपड़े मैले, गंदे चिथड़ों से भी बदतर हैं। उस गधी के सवार का मुँह गधी के मुँह की ओर नहीं है, उसकी पूंछ की ओर है। एक आदमी गधी के गले में रस्सा डाले आगे आगे जा रहा है। चार आदमी तलवारें हाथ में लिये साथ साथ चल रहे हैं। एक खासा प्रहसन का सामान दिखाई दे रहा है।

गधी एक दूकान के सामने पहुँच कर खड़ी की गई। वह मनुष्य सागर भी थम गया। जिस आदमी ने गधी का रस्सा पकड़ा हुआ था, उसने दूकानदार के आगे हाथ फैला कर कहा—

"भवनी के नव्वाब के नाम पर एक कौड़ी दान दो"— दूकानदार ने एक कौड़ी फेंक दी। मांगने वाले ने कौड़ी सवार की जेब में डाल दी। कृष्णमुख सवार अब न सह सका। बोल उठा "बदमाश, पाजी।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



उसका इतना कहना था कि चारों सिपाही आन घिरे। दो सिपाहियों ने उस सवार को कंधों से पकड़ा। एक ने जोर से सिर पकड़ कर मुंह में लकड़ी घुसेड़ी, फिर तीसरे ने एक चिमटे से खुले हुए मुंह में से जीभ पकड़ कर बाहर खेंची और तेज कैंची से पकड़ कर काट दी।

कृष्ण! कृष्ण!! हरे! हरे!! यह क्या, यह क्या। सारा जन समूह मानों आषाढ़ का मेघ बन गया। सवार के मुंह से रक्त की धार बह चली; गधी वाले ने वहां से गधी को चला कर दूसरी दूकान पर हाथ फैला दिया। ऐसा वीभत्स भिख मंगा भी संसार में कभी न देखा होगा।

कौड़ी मिल गई, पर जिस दूकानदार ने दी वह बेचारा सवार की शक्ल देखकर थर थर कांप रहा था। सवार के मुंह से रक्त की अनवरत धारा बह रही थी।

दो दुकानें आगे पहुंचे तो सिपाहियों ने फिर आपरेशन शुरू किया। एक आदमी ने सिर थामा और दूसरे ने एक तेज नश्तर पहले एक आंख में खुबो दिया, फिर दूसरी आंख में। आंखों में से लहू, पानी और ढेले—सब एक साथ ही बह निकले, लोग और अधिक न देख सके। हाहाकार करते हुए अपने अपने घरों की ओर भागने लगे। किन्तु दूर तक न जा सके। तमाशा देखने का लोभ उन्हें फिर वहीं खींच लाया।

दो दुकानें और तय करके सवार की दोनों भुजायें भी धड़ से अलग कर दी गई। जिस मनुष्य में इस दृश्य को देखने की हिम्मत थी, वह रह गया, बाकी सब आंखें मून्द मून्द कर घरों की ओर भाग गये।

इस प्रकार शाखा हीन वृक्ष की भांति उस सवार का धड़ गधी द्वारा उस ओर को चला जिधर माधोजी राव सिंधिया की फौज का कैम्प लगा हुआ था। रास्ते में उस धड़ के नाक कान भी तराश दिये गये। कैंप तक पहुंचते पहुंचते उस धड़ में से डरे हुए और कांपते हुए प्राण पखेरू उड़ने को तैयार हो गये थे, पर अभी उड़े नहीं थे।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



माधोजी राव के सामने यह सौगात पेश की गई। उसी समय हुक्म हुआ कि धड़ को दिल्ली रवाना किया जाय। कुछ सवार जीती लाश को लाद कर दिल्ली की ओर चल दिये। वह जीती लाश कुछ दूर जाते जाते केवल लाश रह गई, उसमें से गुलाम कादिर के प्राण जान छुड़ाकर भाग गये।

पाठक गुलाम कादिर को इस दशा में देख कर आश्चर्य न करें। गुलाम कादिर लाल किले से भागा तो सही, पर उसका पीछा कहां छूटता था। जैसे आदमी के पीछे यम लगा है, उसी प्रकार मरहठा फौज ने उसका पीछा किया। गुलाम कादिर ने मेरठ के किले में जाकर सिर छुपाया, पर मरहठों ने उसे चारों ओर से घेर लिया। अब तो लगे कादिर को यम दीखने, सारा पाप भयंकर मूर्ति धारण करके सामने आने लगा। उसने सुलह की बड़ी दीनता पूर्ण शर्तें पेश की जिन्हें सुनने से भी मरहठा सेनापति ने अपमान पूर्वक इन्कार कर दिया। कोई उपाय न देख कादिर ने भागने की ठानी। कीमती जवाहिरात घोड़े की काठी में भर कर रात को वह अकेला ही मेरठ के किले से भाग निकला। दैव की माया और कर्मों का फल— प्रभात के धुंधले प्रकाश में उसका घोड़ा, कुएं के पास चर्स के बैलों के लिये जो थढ़ा बना होता है, उसमें गिर पड़ा। वह कुआं भिक्का ब्राह्मण का था। भिक्का ब्राह्मण को कादिर के पठानों ने कुछ पहले बहुत तंग किया था, सो यह पठानों से जला बैठा था। सवेरे खेत पर आया तो देखता क्या है कि गढ़े में एक पठान सिपाही पड़ा है। देखते ही भिक्का पहचान गया कि यह तो रुहिल्ला सरदार गुलाम कादिर है। उसने पास आकर व्यंग के तौर पर कहा—

"सलाम नव्वाब साहिब !"

कादिर ने देखा, भंडा फूटता है। बोला—

"भाई तू मुझे नव्वाब क्यों कहता है ? मैं तो एक गरीब घायल सिपाही हूं, और अपना घर ढूंढ़ता फिरता हूं। मेरे पास जो कुछ था, सब

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



लुट गया। तू मुझे घोषगढ़ का रास्ता दिखा दे, मैं तुझे पीछे से बड़ा इनाम दूंगा।"

भिक्का के मन में अभी तक यदि कोई सन्देह था तो वह भी दूर हो गया। घोषगढ़ का नाम पर्याप्त था। भिक्का ने शोर मचा दिया, चारों ओर से लोग इकट्ठे हो गये। उन सब ने गुलाम कादिर को पकड़ कर मरहठों के कैम्प में पहुंचा दिया।

मरहठों ने कादिर को जो दण्ड दिया, उसकी कथा पाठक पढ़ चुके हैं।

# पैंतीसवां परिच्छेद

## शुभ मिलन

तेजसिंह और कमला देवी किले की बारूद में आग देकर बाहिर चले गये।

दूसरे दिन प्रातःकाल उन्हें पता लगा कि गुलाम कादिर भाग निकला। दोनों को बड़ा दुःख और सन्ताप हुआ। दूसरे दिन ध्यानसिंह भी आ पहुंचे। उनकी आज्ञा पाकर दोनों ने निश्चय किया कि जब तक दुष्ट गुलाम कादिर की मृत्यु का समाचार न आ जाय, तब तक दोनों घर में रहें, पर एक दूसरे से जुदा रहें। तेजसिंह ने प्रतिज्ञा की कि गुलाम कादिर को दण्ड मिले बिना वह कमला देवी का पाणिग्रहण नहीं करेगा।

तेजसिंह प्रति दिन गुलाम कादिर की टोह रखने लगा। उसका भागना, उसका घिरना और पकड़े जाना, सब उसने सुना। अन्त को एक दिन

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



उसने सुना कि गुलाम कादिर मथुरा में पहुंच गया है। जब उसे मरते हुए आंखों से देखने के लिये तेजसिंह मथुरा जाने की तैयारी कर रहा था, तब उसने सुना कि गुलाम कादिर की लाश दिल्ली में आ गई है और आज दरबार में दिखाई जायगी।

अब दिल्ली में मरहठों का दौर दौरा था। मरहठों ने कादिर के भागने के बाद किले की आग बुझा दी और शाह आलम और उसके परिवार को स्वतन्त्र कर दिया। इस समय अन्धा शाह आलम ही दिल्ली की गद्दी पर बिराजमान था।

उस दिन शाह आलम के दरबार में वह नजर पेश हुई, जो पहले शायद कभी न हुई होगी। जीभ, आंख, कान, नाक, भुजा और टांग काट कर जो कुछ शेष बचता है, वह गुलाम कादिर, दरबार में पेश किया गया। तेजसिंह उस माजरे को स्वयं आंखों से देख आया। उस लाश को देख कर किसी की आंखों में आंसू आये या नहीं, यह बताना कठिन है।

मंजूरअलीको भी अपने कर्म का अच्छा फल मिला। उसे एक हाथी के पांव के साथ बांध दिया गया, और हाथी को गली कूचों में घुमाया गया। जब हाथी फील खाने में वापिस आया तो उसके पांव के साथ मंजूर अली की लाश लटक रही थी।

तेजसिंह की प्रतिज्ञा पूरी हो गई, और ईश्वर का न्याय भी पूरा हो गया। दूसरे दिन बुजुर्गों की सलाह लेकर तेजसिंह और कमला देवी का सम्बन्ध पक्का हो गया।

ध्यान सिंह ने कमला देवी के पिता गुलाब सिंह को अपने हाथ से एक लम्बी चिट्ठी भेजी, जिसमें कमला देवी का सारा वृतान्त लिखकर तेजसिंह का भी हाल लिखा, साथ ही उसने यह भी लिखा कि "अब कोई कारण नहीं है कि हमारे कुलों में कोई विरोध रहे। विरोध शान्त हो जाना चाहिये। मैं अपनी ओर से सारे झगड़े को स्वाहा कर देता हूं, आप भी अपनी ओर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



से समाप्ति करादें । बेटा तेजसिंह और बेटी कमला देवी का सम्बन्ध सुन कर सबको प्रसन्नता होगी ।" इसी प्रकार और भी बहुत सी मीठी मीठी बातें लिख कर पत्र एक आदमी द्वारा सुजानपुर भेज दिया ।

इतने दिनों में गुलाबसिंह की दशा बहुत कुछ बदल गई थी । कमला देवी उसकी प्यारी बेटी थी । उससे उसका बड़ा प्यार था । कमला देवी को ढूंढ़ने के लिये उसने बड़े उद्योग और उपाय किये, पर किसी में कृतकार्यता नहीं हुई । वह निराश और विवश होकर बैठ रहा था ।

इतने दिनों में उसका जोश और उसका विरोध ढीला पड़ चुका था । ध्यान सिंह के पत्र में कमला देवी का सम्बन्ध पढ़कर वह बहुत प्रसन्न हुआ । विवाह के सम्बन्ध में उसके चित्त में यदि कोई शंका थी भी तो कमला देवी की माता और अन्य सम्बन्धियों ने मिलकर दूर कर दी । गुलाब सिंह ने उत्तर में एक शिष्टता भरी चिट्ठी भेज दी ।

बस फिर क्या था । ध्यान सिंह, तेज सिंह की माता, तेज सिंह, और कमला देवी सब सुजानपुर में आ गये । अच्छे दिन और अच्छी घड़ी में गुलाब सिंह के घर बड़ी शान के साथ तेजसिंह और कमला देवी का विवाह हो गया, सारा गांव इस सम्बन्ध से प्रसन्न हुआ । सभी कहते थे कि "अहा ! आज गुलाब से चमेली मिल गई । आज आम और कोयल का मिलाप हो गया ।"

कमला देवी को आज तप का, धर्म का और दृढ़ता का, सुफल मिला । वह सुखिनी होकर अपने प्यारे के साथ उत्तम जीवन व्यतीत करने लगी । परमात्मा ने भले को भला फल दिया— और बुरे को बुरा फल दिया । क्या फिर भी लोग कहेंगे कि परमात्मा न्यायी नहीं है ?

[ समाप्त ]

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

V. K. Mathur
D. M. Ohe - D. S. Office
N. Railway - Lucknow - 100

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai